आरोग्य पथ

मासिक ई-पत्रिका

वर्ष–2, अंक–12

दिसम्बर, 2023

विकसित भारत@2047 : युवाओं की आवाज़

युवा शक्ति परिवर्तन की वाहक भी है और परिवर्तन की लाभार्थी भी है। भारत के लिए यह अमृत काल चल रहा है और यह भारत के इतिहास का वह कालखंड है, जब देश एक लंबी छलांग लगाने जा रहा है। 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाने के लिए दूरदर्शी विचारों को अपनाने का यह सही समय है। देश भर के राजभवनों में आयोजित कार्यशालाओं में विश्वविद्यालयों के कुलपति, संस्थानों के प्रमुख और संकायों के सदस्य के साथ एक वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से विकसित भारत@2047: युवाओं की आवाज़ को भारत के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 11 दिसंबर 2023 को लान्च किया था। इस दृष्टिकोण में विकास के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक प्रगति, पर्यावरणीय स्थिरता और सभी के लिए सुशासन शामिल हैं।

विकसित भारत@2047: 'युवाओं की आवाज़' एक पहल है जिसका उद्देश्य देश में नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा देना है। यह युवाओं को अपनी वेबसाइट पर विकसित भारत के लिए अपने विचार साझा करने के लिए आमंत्रित करता है और प्रत्येक क्षेत्र में सर्वोत्तम विचारों के लिए पुरस्कार भी प्रदान करता है।

उदबोधन में प्रधानमंत्री ने रेखांकित किया कि प्रगति का नक्शा अकेले सरकार द्वारा नहीं बल्कि राष्ट्र द्वारा तय किया जाएगा। इसमें देश के प्रत्येक नागरिक का योगदान और सक्रिय भागीदारी के मंत्र से बड़े से बड़े संकल्प पूरे किये जा सकते हैं। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि अगले 25 साल आज के कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में युवाओं के करियर के लिए निर्णायक होंगे। उन्होंने कहा कि युवा ही भविष्य में नए परिवार और नया समाज बनाएंगे। अतः उन्हें यह निर्णय लेने का अधिकार है कि विकसित भारत कैसा होना चाहिए। प्रधानमंत्री ने कहा कि इसी भावना के साथ सरकार देश के हर युवा को विकसित भारत की कार्ययोजना से जोड़ना चाहती है। प्रधानमंत्री ने विकसित भारत के निर्माण के लिए देश के युवाओं की आवाज को नीतिगत रणनीति में ढालने पर जोर दिया और युवाओं के साथ अधिकतम संपर्क बनाए रखने में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका पर प्रकाश डाला। इसलिए एक शैक्षणिक संस्थान के रूप विश्वविद्यालय में प्रवेशित सभी विद्यार्थियों को शिक्षित करना, उनके कौशल और व्यक्तित्व का विकास करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हमें विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। क्योंकि विचार की शुरुआत 'मैं' से होती है, परंतु विकास के प्रयास 'स्वयं' से शुरु होते हैं।

इजराइल-हमास संघर्ष

सभ्य समाज में युद्ध अप्रासंगिक और मानवता विरुद्ध है। परन्तु, मानव अभी इतना सभ्य नहीं हो पाया है कि वह युद्ध के विरुद्ध जा पाये और समस्त समस्याओं का समाधान शांतिपूर्वक कर सके। आज का विश्व असंख्य समस्याओं से जकड़ा हुआ है, आधुनिकता की चादर से बाहर समस्या यदा-कदा बाहर आकर विश्व को झकझोरते रहते हैं।

अरब कहें या इस्लामिक राष्ट्र एक दिवास्वपन में जी रहे हैं जहाँ 'अधर्म' धर्म के रूप में प्रस्थापित और आत्ममुग्ध, आत्मस्तुति और अभिमान से अभिसिंचित है। धर्म की श्रेष्ठता मानवता के पोषण में निहित है। जब हम ''मैं'' में परिवर्तित हो जाये तो दूसरो के प्रति घृणा और असहिष्णुता बलवती हो धर्म की धूरी बन जाये तो उसके प्रवृत्ति मे हिंसा का समावेश हो जाता है।

विश्व के सभी धर्मो का अभ्युदय इस्लाम के पूर्व हो चुका था। यहूदी, इसाई और इस्लाम जैसे इब्राहीमी धर्म का उदगम अरब रहा है। ये तीनो तथाकथित धर्म मूल रूप से परस्पर जुडे हुए हैं। दुनिया का इतिहास दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। एक इस्लाम के पूर्व की दुनिया और दूसरी उसके पश्चात् की। धर्म के रूप में इस्लाम की प्रांसगिकता अभी भी संदेहास्पद और अस्वीकार्य है इस्लाम का दर्शन अवसरवादी और प्रवृत्ति हिंसात्मक है। जो धर्म सहिष्णु न हो और जो दूसरों को आत्मसात् न कर सके, वह धर्म अधर्म ही कहलायेगा। धर्म के नाम पर हिंसा इस्लाम में अभिमंडित है, और जिसका मूल विषाक्त हो उसके तने और फल भी प्रायः ऐसे ही होते हैं। यही इजराइल और हमास युद्ध का मूल कारण है।

इजराइल-फिलिस्तीन के बीच संघर्ष की नींव सन् 1917 ई. में रखी गई थी जब तत्कालीन ब्रिटिश विदेश सचिव आर्थर जेम्स बॅल्फोर ने 'बॅल्फोर घोषणा' के तहत फिलिस्तीन में यहूदियों के लिये 'नेशनल होम' हेतु ब्रिटेन का आधिकारिक समर्थन किया था। अरब और यहूदी हिंसा को रोकने में असमर्थ ब्रिटेन ने वर्ष 1948 ई. में फिलिस्तीन से अपनी सेनाएँ वापस बुला लीं और प्रतिस्पर्धी दावों का निपटान करने की जिम्मेदारी गठित संयुक्त राष्ट्र संघ पर छोड़ दी। संयुक्त राष्ट्र संघ ने फिलिस्तीन में स्वतंत्र यहूदी और अरब राज्य के निर्माण के लिये एक विभाजन योजना प्रस्तुत की जिसे अधिकांश अरब देशों ने अस्वीकार कर दिया। वर्ष 1987 ई. में स्थापित हमास, मिस्र के 'मुस्लिम ब्रदरहुड' की एक हिंसक शाखा थी, जो हिंसक जिहाद के माध्यम से अपने एजेंडे को पूरा करना चाहती थी। वर्ष 2006 ई. में हमास ने फिलिस्तीनी प्राधिकरण के विधायी चुनाव में जीत दर्ज की और वर्ष 2007 में फतह को गाजा से अलग कर दिया, साथ ही 'फिलिस्तीनी आंदोलन' को भौगोलिक रूप से भी विभाजित कर दिया।

वर्ष 1987 ई. में वेस्ट बैंक और गाजा के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में तनाव चरम पर पहुँच गया, जिसके परिणामस्वरूप पहला इंतिफादा (फिलिस्तीनी विद्रोह) हुआ। यह फिलिस्तीनी उग्रवादियों तथा इजराइली सेना के बीच एक छोटे युद्ध में परिवर्तित हो गया। वर्तमान मे गाजा पट्टी पर शासन करने वाले उग्रवादी समूह हमास ने 7 अक्टूबर 2023 को जल, थल और वायु मार्ग से इजराइल पर आकस्मिक घातक हमला किया, जिसमें सैकड़ों की जान गई है। इससे इजराइल-फिलिस्तीन के बीच सदियों से चला आ रहा खूनी संघर्ष व विवाद पुनर्जीवित हो गया है। इजराइल अपने चारो ओर से जिन देशों से घिरा हुआ है, इन्हें 'अरब देशों' के नाम से जाना जाता है। अरब क्षेत्र में इजराइल के चारों ओर उपस्थित इन देशों के अलावा अन्य देश भी शामिल हैं। ये समस्त अरब देश इजराइल के विरुद्ध मिलकर हमला करते हैं, लेकिन इजराइल तकनीकी, सैन्य और आर्थिक रूप से इतना सक्षम व शक्तिशाली है कि वह अकेले ही अपने चारों ओर उपस्थित इन देशों से सफलतापूर्वक निपटने में सक्षम है।

यहाँ उपस्थित सभी अरब देश मिलकर फिलिस्तीन का ही साथ देते हैं और वे चाहते हैं कि यहाँ से यहूदियों को पूरी तरह से साफ कर दिया जाए और इस संपूर्ण क्षेत्र को फिलिस्तीन को सौंप दिया जाए। ये सभी अरब देश इजराइल के अस्तित्व को समाप्त करके सिर्फ फिलिस्तीन के अस्तित्व को ही बनाए रखने के लिए उत्सुक हैं।

जो वर्तमान में इजराइल है वही यहूदियों का मूल स्थान था। इस्लाम के बलात फैलाव ने पूरे विश्व की संस्कृति और सभ्यता को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। एक किताब और एक पैगम्बर के श्रेष्ठता स्थापित करने के लिए इस्लाम के अनुयायी अनवरत् रूप से अनुचित व अमानवीय कृत्यों में संलग्न है।

इजराइल एक देश के रूप में और यहूदी एक जातीय नस्ल के रूप में अनुकरणीय है। विस्थापना का दंश झेल कर नाजियों का अत्याचार सह कर और दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर अपने को पुनर्स्थापित करने वाली यह कौम आज विश्व पटल पर आलोकित है। यह कहना अतिश्योक्ति नही होगा कि ज्ञान-विज्ञान, तकनीकी शिक्षा, रक्षा और सम्प्रभुता के क्षेत्र में इजराइल एक अग्रणी राष्ट्र है।

सन् 1948 ई. में स्वतंत्र और पुर्नगठित राष्ट्र विश्व के लिए एक उदाहरण है। 213 यहूदियों द्वारा प्राप्त नोबेल पुरस्कार इस बात को द्योतक है कि कर्म की पराकाष्ठा करने में है, बातों में नही है। जहाँ इजराइल जमीन पर ही जन्नत है वहीं हमासी आतंकवादी जन्नत की चाह में इस धरा को जहन्नुम बना रहे है। भारत हमेशा सत्य के साथ खड़ा रहा है और शांति का पैरोकार है। मानवता की रक्षा और सत्य आधारित धर्म की स्थापना हमारा ध्येय रहा है। अतः हमारा समर्थन इजराइल के साथ है।

प्रकाशक : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

आरोग्य धाम, बालापार रोड, सोनबरसा, गोरखपुर, 273007

भारतीय ज्ञान परम्परा

भारत की ज्ञान परम्परा का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है। भारत को अपने ज्ञान का सात्विक अहंकार था। अध्ययन एवं आचरण हमारी पहचान थी। भारत की ज्ञान परम्परा ने सर्वाधिक आश्चर्यजनक भाषा को जन्म दिया था। सर्वाधिक स्पष्ट पौराणिकता का प्रतिपादन किया था। संसार के सर्वोत्तम दार्शनिक सिद्धान्तों को यहाँ की ज्ञान परम्परा ने खोजा था। भारत ने ही सर्वाधिक स्पष्ट धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषिक, वैज्ञानिक, सामाजिक, नैतिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं कर्मकाण्डीय आदि विधियों को प्रथमतया निर्माण किया था। वेदन, उपवेद, वेदांग, पुराण, रामायण, महाभारत, दर्शन एवं स्मृति आदि की परम्परा ने अनेक शास्त्रों को जन्म दिया था, जो हमारी ज्ञान परम्परा के एक-एक स्तम्भ हैं। मानव का बौद्धिक इतिहास भारत के बौद्धिक इतिहास के बिना नहीं लिखा जा सकता है। चाहे वह भाषाविज्ञान या समाजविज्ञान हो, विज्ञान हो या दर्शन, कानून हो या कला, पुराण हो या धर्मशास्त्र, साहित्य हो या संगीत, गणित हो या तर्क, कर्मकाण्ड हो या अध्यात्म, शरीर विज्ञान हो या कृषि विज्ञान, भूगोल हो या खगोल, राजशास्त्र हो या अर्थशास्त्र, युद्धविद्या हो या अस्त्र-शस्त्र विद्या, जीवन विज्ञान हो या मृत्यु विज्ञान। ज्ञान परम्परा का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं था जिस पर भारत की लेखनी न उठी हो। इसीलिए कहा गया-

'येन्नेहास्ति न तत् क्वचित्।'

शेष अगले अंक में...

हम और हमारी संस्था

वस्तुतः भारतीय संस्कृति के अनुरूप आजाद भारत पुनर्प्रष्ठित एवं पुनर्निर्मित किया जा सके, इस उद्देश्य से भारत केन्द्रित शिक्षा नीति एवं तद्नुरूप प्रतिमान खड़ा करने का कार्य बीसवीं शताब्दी के प्रथम चतुर्थांश में ही प्रारम्भ हो गया था। अनेक भारतीय मनीषियों ने इस दिशा में प्रयत्न प्रारम्भ कर दिए थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती (1886, दयानन्द एंग्लोवैदिक संस्थान), महामना मदन मोहन मालवीय (1916, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय), रविन्द्र नाथ टैगोर (1921, विश्वभारती विश्वविद्यालय), और महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज (1932, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद) एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (1950 ई., सरस्वती शिशु मन्दिर) ने अपने-अपने प्रयत्न से भारतीय शिक्षा नीति की वैचारिकी के साथ-साथ उसका प्रतिमान खड़ा किया। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसी प्रयत्न का परिणाम था। भारत के आजाद होते-होते महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक के शिक्षा तक के शिक्षा संस्थान (महाराणा प्रताप इण्टर कॉलेज, महाराणा प्रताप महाविद्यालय एवं महाराणा प्रताप महिला महाविद्यालय) प्रतिष्ठित किए जा चुके थे। महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के प्रयत्न से 1950 ई. में गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर का शिलान्यास भी इसी प्रयत्न की कड़ी का एक हिस्सा था।

शेष अगले अंक में...

अंतर्राष्ट्रीय एड्स दिवस (व्याख्यान)

गुरू श्री गोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

दिनांक 01 दिसम्बर, 2023 महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित गुरू श्री गोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में एड्स दिवस के उपलक्ष्य पर जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्रीमती ममता रावत सहायक आचार्य द्वारा बताया गया, जिसमें उन्होंने 'समुदायों को नेतृत्व करने दें, विश्व एड्स डे 2023' थीम के बारे में बताया। ये थीम एड्स की रोकथाम में समाज की अहम भूमिका के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए चुना गया साथ ही, एड्स के बचाव में समाज की ओर से दिए महत्वपूर्ण योगदान की सराहना के लिए भी इस थीम को चुना गया है। इस समारोह का समापन सपथ ग्रहण के साथ हुआ। कार्यक्रम में बीएससी नर्सिंग तृतीय सेमेस्टर की छात्रा और शिक्षक उपस्थित रहें।

कार्यक्रम का आयोजन गुरु श्री गोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग की एसएन ए इंचार्ज मिस स्वेता अल्बर्ट और मिस नैंसी के नेतृत्व मे सम्पन किया गया।

एड्स दिवस पर छात्राओं को सम्बोधित करतीं श्रीमती ममता रावत

महाराणा प्रताप संस्थापक सप्ताह समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक समारोह के उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश व विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज व मंचासीन गणमान्य

दिनांक 04 दिसम्बर, 2023 महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना भारतीय समाज में उत्कृष्ट शिक्षा, सेवा राष्ट्र प्रेम एवं सामाजिक परिवर्तन के उद्देश्यों को लेकर युगदृष्टा ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने 1932 ई. में की थी। आज यह शैक्षिक पुर्नजागरण की संस्था एक विराट वट वृक्ष की भाँति अपने छाँव में 50 से अधिक शिक्षण प्रशिक्षण एवं चिकित्सा की संस्थाओं को संचालित कर रही है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद नव भारत निर्माण व राष्ट्र के लिए समर्थ युवा पीढ़ी के सृजन एवं आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का मार्ग प्रशस्त कर रहा है और आगे भी करता रहेगा।

उक्त बातें महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन अवसर पर आयोजित शोभा यात्रा कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए बतौर मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय सेना के पूर्व थल सेनाध्यक्ष, (पीवीएसएमए एवीएसएम, वाईएसएम) (अ.प्रा.) एवं वर्तमान में माननीय राज्यमंत्री, केन्द्रीय सड़क परिवहन व राजमार्ग, भारत सरकार, नई दिल्ली जनरल (डॉ.) वी. के. सिंह जी ने कही। आगे उन्होंने यह भी कहा कि यहां के विद्यार्थी विकसित भारत के कर्णधार हैं। हम सभी को

निरन्तर यह प्रयत्न करते रहना चाहिए कि विद्यार्थी देश व समाज के विकास में एक प्रबल स्तम्भ साबित हों। इस शिक्षण संस्थान के कुलगीत तथा हिन्दुआसूर्य महाराणा प्रताप जी के व्यक्तित्व से हम सभी को यह सीख मिलती है कि बाधांए कितना भी कठिन हो उससे घबड़ाकर कभी पीछे न हटें, बल्कि डटकर के सामना करें। साथ ही साथ जीवन की विभिन्न चुनौतियों, पारिवारिक समस्याओ, समाज व राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के लिए निरन्तर लगे रहें। वस्तुतः किसी समाज और राष्ट्र का उत्थान और प्रगतिशीलता वहां की जनता, विद्यार्थियों, अभिभावको, शिक्षकों, शिक्षण संस्थानों के उत्कृष्ट चिन्तन और वैचारिकी से होती है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद समाज व राष्ट्र के बेहतर विकास में मील का पत्थर है।

मुख्य अतिथि ने कहा कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद भारतीय समाज के शैक्षिक विकास की धुरी है। भावी पीढ़ी को शिक्षा व्यवस्था जैसा निर्मित करेगी, देश का भविष्य वैसा ही बनेगा। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा का संकल्प, मातृभूमि के प्रति समर्पण और त्याग, माता. पिता तथा गुरू के प्रति श्रद्धावनत् रहने का भाव सहित भारतीय सांस्कृतिक ज्ञान के साथ नैतिकता एवं मानक मूल्य पढ़ाया जाना राष्ट्रसेवा का एक अभिनव प्रयास है। नई शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्यवन में भी महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की भूमिका सराहनीय है।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री, पूज्य गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने इस अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों एवं जनमानस को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह आयोजन हमारे लिए अनुशासन का पर्व है।

अनुशासन एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा इस आयोजन का प्राण है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि समारोह के मुख्य अतिथि जनरल (डॉ.) वी. के. सिंह जी ने भारतीय सेना को नेतृत्व प्रदान किया तथा भारत की आनए बान, शान के लिए वे अगली पंक्ति में खड़े रहे। जनरल वी. के. सिंह निश्चित ही विद्यार्थियों के लिए प्रेरणापुंज हैं। वस्तुतः व्यक्ति को कथनी और करनी के समन्वय की साथ बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना कर सकता है। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना इसलिए की थी कि शिक्षा के माध्यम से भारतीय समाज को और भी सशक्त बनाया जा सकें। आज यह शिक्षा परिषद शिक्षा और समाज के आवश्यकताओं के अनुरूप अपनी संस्कृति और आदर्शों के साथ ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में निरन्तर कार्य कर रही है। इसकी भूमिका सदैव समाज को मार्गदर्शन देती रहेगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने कहा कि अमृत काल में भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय मोदी जी के नेतृत्व में देश आत्मनिर्भता की ओर तेजी से बढ़ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी के पंच प्रण से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद को जोड़ते हुए उन्होंने कहा कि देश के 142 करोड़ जनसंख्या के साथ महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के प्रत्येक शिक्षक, विद्यार्थी उनके परिवार को जुड़कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए भारत के नव निर्माण में अपना योगदान सुनिश्चत करना चाहिए। आत्मनिर्भर भारत ही विकसित भरत का मार्ग प्रशस्त करेगा। वास्तव में भारत की सम्पूर्ण आबादी पंचप्रण के लक्ष्यों के साथ जुड़ जाय तो, भारत विश्व के शीर्ष स्थिति पर सदैव बना रहेगा। हम सभी को विशेष रूप से विद्यार्थियों को अपने जिम्मेदारियों का निर्वहन भली प्रकार से करना चाहिए, चाहें वे जिस भी क्षेत्र में हों। आगे उन्होंने यह भी कहा कि मुझे आशा और विश्वास है कि पूज्य महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज द्वारा प्रारम्भ किये गये सामाजिक समरसता तथा स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में सक्रियता का अपना दायित्व महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् सदैव निभाता रहेगा। हम भावी पीढ़ी को अनुशासन एवं शील का पाठ पढ़ाते रहेंगे तथा उनमें भारतीय संस्कृति की ज्ञान धारा प्रवाहित करते रहेंगे ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि जनरल (डॉ.) वी. के. सिंह जी ने शोभायात्रा के शुभारम्भ की घोषणा की। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष, पूर्व कुलपति प्रो. यू. पी. सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया। इसी क्रम में एन. सी. कैडेट्स द्वारा मुख्य अतिथि को गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। महाराणा प्रताप बालिका विद्यालय की छात्राओं द्वारा सरस्वती वन्दना तथा कुलगीत के साथ भव्यतम संस्थापक–सप्ताह समारोह का उद्घाटन सम्पन्न हुआ ।

समारोह का मुख्य आकर्षण शोभा यात्रा, राष्ट्रगीत के साथ प्रारम्भ हुई। शोभा यात्रा में अलग–अलग सस्थाओं की छात्र–छात्राएं अपने गणवेश में, राष्ट्रगीतों की धुन पर बजते बैंड, विविध झांकियों के साथ 'भारत माता की जय' वन्दे मातरम् गांव–गांव में जायेंगे, सामाजिक समता लायेंगे, एक बनेंगे नेक बनेंगे, विविधता में एकता भारत की विशेषताएं अलग भाषा अलग वेश फिर भी अपना एक देश, हम सब हैं भारत के लाल, छूआछूत का कहाँ सवाल, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत आदि गगन भेदी नारों के साथ पर्यावरण प्रदूषण, इन्सेफलाइटिस, आन्तरिक सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, डिजिटल इण्डिया, कौशल विकास, स्टार्टप इण्डिया, जी–20, मिशन चन्द्रयान, मोटा अनाज, एस–400, ब्रह्मोस मिसाइल तथा 'उत्तर प्रदेश विकास की ओर' राम मन्दिर, अन्तरिक्ष हो या जल थल मिशन शक्ति, नारी सशक्तिकरण, आओ अयोध्या चलें, विश्व गुरू भारत जैसे विविध झांकियों के साथ छात्र और छात्राओं द्वारा सामाजिक परिवर्तन में अपनी भूमिका और राष्ट्रीय एकता के प्रति संकल्पबद्धता की उद्घोषणा करते हुए शोभायात्रा सम्पन्न हुई। समारोह का संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह ने तथा आभार ज्ञापन महाराणा प्रताप प्रताप इण्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य, डॉ. अरूण कुमार सिंह ने किया।

इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय आरोग्यधाम बालापार, गोरखपुर के माननीय कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेई, दीदउ गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर की माननीय कुलपति प्रो. पूनम टण्डन, ब्रिगेडियर डॉ. डी. सी. ठाकुर, जनप्रतिनिधिगण माननीय सांसद, श्री रविकिशन शुक्ल, माननीय विधायक श्री बिपिन सिंह, श्री महेन्द्र पाल सिंह, श्री प्रदीप शुक्ला, महापौर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के समस्त पदाधिकारी एवं सदस्यगण श्री राजेश मोहन सरकार, श्री धर्मेन्द्र सिंह, श्री प्रमोद कुमार चौधरी, श्री अनन्य प्रताप शाही, श्री ज्योति प्रकाश मस्करा, श्री रेवती रमण दास अग्रवाल, श्री प्रमथनाथ मिश्र, श्री राम जन्म सिंह, योगी कमलनाथ जी, महंत रविन्द्र दास जी, महंत सतुआ बाबा, शिक्षा परिषद के समस्त संस्थाध्यक्ष शिक्षक एवं विद्यार्थीगण के साथ नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहें।

अतिथि व्याख्यान

महन्त अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

एचआईवी और सिफलिस के बचाव की जानकारी देतीं श्रीमती कविता तिवारी

दिनांक 09 दिसम्बर, 2023 महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज में प्राचार्य श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव जी की अध्यक्षता में बी आर डी मेडिकल कॉलेज के आब्स एण्ड गायिनी विभाग में संचालित पीपीटीसीटी एवं एस टी आई सेंटर की काउंसलर श्रीमती कविता तिवारी एवं श्रीमती शिवा सिंह जी मौजूद रहीं और उन्होंने बच्चों को एचआईवी और सिफलिस से बचाव और उसके रोकथाम के बारे में अवगत कराया। कार्यक्रम के अंत में कुंवर अभिनव सिंह द्वारा उनका आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया गया। इस कार्यक्रम में पैरामेडिकल कॉलेज के सभी प्राध्यापकगण एवं विद्यार्थी मौजूद रहें।

योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दिनांक 13 दिसम्बर, 2023 को मुख्य अतिथि डॉ. बलवान सिंह जी के कर–कमलो द्वारा महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा प्रदत्त योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर में सम्पन्न हुआ। समारोह की शुरुआत मुख्य अतिथि का अभिवादन व उन्हें कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा स्मृति चिन्ह भेट किया गया। अपने उद्बोधन द्वारा डॉ. बलवान सिंह जी ने विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण व अपने आंतरिक मानवीय गुणों की पहचान कर सुयोग्य नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। समारोह की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के कुलपति सेवा निवृत डॉ. अतुल बाजपेई ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि महाराणा शिक्षा परिषद् गोरखपुर शिक्षा के क्षेत्र में पूर्वांचल में अग्रणी भूमिका निभा रही है और अपने विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा शिक्षा का प्रचार–प्रसार समाज के हर क्षेत्र में कर रही है। यह योग्यता छात्रवृत्ति विद्यर्थियों में उत्प्रेरक का कार्य करेगी। कार्यक्रम का

छात्रा को योग्यता छात्रवृत्ति प्रदान करते मुख्य अतिथि डॉ. बलवान सिंह जी

संचालन अधिष्ठाता कृषि संकाय डॉ. विमल कुमार दूबे तथा आभार डॉ. आशुतोष द्वारा व्यक्त किया गया।

आगंतुक उद्बोधन

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

दिनांक : 15 दिसम्बर, 2023 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिटच्यूट ऑफ़ मेडिकल साइंसेस आयुर्वेद कॉलेज में आयुर्वेद विद्यार्थियों के साथ आयूष मंत्री डॉ. दया शंकर मिश्र, 'दयालु' जी ने संवाद किया और बताया की आप विश्व की सबसे प्राचीन चिकित्सा पद्धति के कर्णधार है।

आयुर्वेद आज के समाज की आवश्यकता है, आप परिश्रम करें आपका भविष्य उज्ज्वल है।

कार्यक्रम में डॉ. सुधांशु सिंह, (IRRI- SARC), पूर्व औषधि नियंत्रक, उत्तर प्रदेश सरकार डॉ. जी. एन. सिंह के साथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए.के. सिंह, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेई, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव सहित आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य एवं शिक्षक विद्यार्थी उपस्थित रहें।

विद्यार्थियों को उद्बोधित करते हुए माननीय डॉ. दया शंकर मिश्र

राष्ट्रीय संगोष्ठी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं फॉर्मेसी संकाय

"बॉयोनेचर कॉन-2023"

प्रथम दिवस

उद्घाटन समारोह

राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए माननीय कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज जी

माननीय कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज को स्मृति चिन्ह् भेंट करते माननीय कुलपति

दिनांक : 15 दिसंबर, 2023 को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों या अन्य शिक्षण संस्थानों को टापू या तटस्थ बने रहने की बजाय समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। उच्च शिक्षण संस्थानों को चाहिए वे समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन बढ़ाएं। व्यावहारिक आवश्यकताओं कोसमझने के लिए सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भर रहने की बजाय फील्ड में अनुभव हासिल करने और रिसर्च पर ध्यान देना होगा।

सीएम योगी शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बायोनेचर कॉन–2023' विषयक संगोष्ठी के शुभारंभ पर मुख्यमंत्री ने कहा नवाचार व अनुसंधान से तटस्थ होने से भारत पिछड़ गया था और यहां के शिक्षण संस्थान डिग्री बांटने के केंद्र तक सीमित हो गए थे। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले नौ सालों में इस दिशा में सुधार के प्रयास हुए तो अब अच्छे परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों से पारंपरिक चिकित्सा भारत की देन है। वर्तमान समय मे इसे आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने कई विभागों के बीच आपसी समन्वय पर जोर देते हुए कहा कि आपसी आयुर्वेद, फॉर्मेसी, बॉयोकेमिस्ट्री, कृषि जैसे कई विभागों के समन्वय से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को एक नई ऊंचाई मिल सकती है। उन्होंने कहा कि कृषि से जुड़े लोग प्राकृतिक संसाधनों से औषधि बनाने के क्षेत्र में बहुत योगदान दे सकते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली औषधियों की क्वालिटी पर फोकस करने के साथ पैकेजिंग पर भी पूरा ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि आयुर्वेद की दवा पुड़िया बांधकर देने से रोगी को ही विश्वास नहीं होता जबकि यही दवा टैबलेट के रूप में उसका विश्वास बढ़ाती है। दवाओं को इसी अनुरूप में तैयार और पैक करना होगा।

सीएम योगी ने कहा कि सरकार ललितपुर में दो हजार एकड़ में फॉर्मा पार्क बना रही है। इसके साथ ही मेडिकल डिवाइस पार्क को विकसित करने पर भी तेजी से काम चल रहा है। मुख्यमंत्री ने डाटा संग्रहण को वर्तमान समय की आवश्यकता बताते हुए कहा कि डॉक्टर और नर्स रोगियों से जुड़े विभिन्न आंकड़ों को संग्रहित कर उसे एक बड़े शोध का आधार बना सकते हैं।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान मुख्यमंत्री ने इंसेफेलाइटिस नियंत्रण के अपने अनुभव को भी साझा किया। बताया कि 1977 से लेकर 2017 तक करीब 50 हजार बच्चों की मौत इंसेफेलाइटिस की वजह से हो गई। जापान में इसके लिए वैक्सीन 1905 में ही बन गई थी जबकि भारत में वैक्सीन 2005 में उपलब्ध हुई, उसका भी उत्पादन मांग से काफी कम रहा। मुख्यमंत्री ने बताया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की करीब तीन करोड़ की आबादी के सापेक्ष इंसेफेलाइटिस वैक्सीन महज एक लाख डोज मिल रही थी। मुख्यमंत्री ने बताया कि 2017 में प्रदेश की कमान सम्भालने के बाद स्वास्थ्य विभाग को नोडल बनाकर कई विभागों के बीच अंतर विभागीय समन्वय से चालीस साल के दंश को चार साल में दूर कर दिया गया। इंसेफेलाइटिस नियंत्रण का यह मॉडल कोरोना के सफल प्रबंधन में भी काम आया और हर जगह यूपी के कोरोना प्रबंधन की सराहना हुई।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं फॉर्मेसी संकाय

"बॉयोनेचर कॉन-2023"

प्रथम दिवस

अतिथि व्याख्यान

राष्ट्रीय संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए डॉ. जी. एन. सिंह जी

राष्ट्रीय संगोष्ठी में व्याख्यान देते हुए मुख्य अतिथि डॉ. जी. सतीश रेड्डी जी

राष्ट्रीय संगोष्ठी में उपस्थित गणमान्य अतिथि, विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व विद्यार्थी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ.जी. सतीश रेड्डी ने कहा कि पूरा विश्व एक बार फिर आरोग्यता व रोग निदान के लिए प्राकृतिक संसाधनों से बनीं औषधियों को तेजी से अपना रहा है। प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली दवाओं के प्रति भारत के लिए यह अवसर है क्योंकि भारत के हर गांव में पौधों, पत्थरों और यहां तक कि मिट्टी के रूप में औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं। ब्रह्मांड के पहले चिकित्सक चरक और सुश्रुत यहीं होते थे। प्राचीन काल में यहां सर्जरी भी होती थी। डॉ. रेड्डी ने कहा कि करीब दो सौ साल से मॉडर्न साइंस टेक्नोलॉजी से आई दवाओं का नकारात्मक असर लोगों को फिर से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की तरफ मोड़ रहा है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि 60 प्रतिशत लोग हर्बल या नेचुरल मेडिसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं। लोग यह मानने लगे हैं कि सस्टेनेबल लिविंग के लिए नेचुरल होना पड़ेगा। डॉ. रेड्डी ने कहा कि आज जरूरत है कि नए सिरे से चिकित्सा में काम आने योग्य प्राकृतिक संसाधनों की खोज हो, दवा के रूप में उनकी प्रोसेसिंग तेज की जाए और गुणवत्ता पर ध्यान देते हुए उनकी मार्केटिंग की जाए। उन्होंने योग की तर्ज पर प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली औषधियों की ब्रांडिंग की जरूरत जताई। डीआरडीओ के पूर्व में अध्यक्ष रहे डॉ. रेड्डी ने यूपी में डिफेंस कॉरिडोर और ब्रह्मोस मिसाइल बनाने का केंद्र बनाए जाने को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजनरी नेतृत्व का परिणाम बताया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जी.एन. सिंह ने कहा कि प्राचीन काल में भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। गोरक्षपीठाधीश्वर के रूप में योगी आदित्यनाथ ने संस्कृति, विज्ञान और अनुसंधान की इसी परिकल्पना को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के रूप में साकार दिया है। उन्होंने कहा कि 21वीं शताब्दी भारत की शताब्दी होने जा रही है।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. गणेश कुमार, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एन.एस. समेत बारह राज्यों के डेढ़ सौ से अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं फार्मेसी संकाय

"बॉयोनेचर कॉन-2023"

प्रथम दिवस

स्मारिका, पुस्तक विमोचन, युनियन बैंक शाखा एवं कौशल प्रयोगशाला का उद्घाटन

राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका एवं कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथ वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का विमोचन

राष्ट्रीय संगोष्ठी कार्यक्रम के प्रथम दिवस पर विश्वविद्यालय के माननीय कुलाधिपति एवं मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज जी, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों **'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथ वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'** का विमोचन किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल होने से पूर्व सीएम योगी ने गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कौशल प्रयोगशाला का शुभारंभ किया। उन्होंने प्रयोगशाला का निरीक्षण कर यहां की व्यवस्थाओं को भी देखा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के समीप यूनियन बैंक की शाखा और एटीएम का उद्घाटन किया।

आभार ज्ञापन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी ने किया जबकि मुख्य अतिथि का स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्र देकर अभिवादन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया। मुख्यमंत्री, मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता का स्वागत करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के शुभारंभ अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज मुख्य अतिथि डॉ. जी. सतीश रेड्डी, विशिष्ट अतिथि डॉ. जी.एन. सिंह ने भारत माता, मां सरस्वती और गुरु गोरखनाथ के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की छात्राओं ने सरस्वती वंदना और विश्वविद्यालय के कुलगीत की प्रस्तुति दी।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. गणेश कुमार, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एन.एस. समेत बारह राज्यों के डेढ़ सौ से अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहें।

विश्वविद्यालय परिसर में यूनियन बैंग शाखा एवं नर्सिंग कॉलेज में कौशल प्रयोगशाला का उद्घाटन करते माननीय मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश एवं विवि के कुलाधिपति श्री योगी आदित्यनाथ जी महाराज

राष्ट्रीय संगोष्ठी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं फार्मेसी संकाय

"बॉयोनेचर कॉन-2023"

द्वितीय दिवस

तकनीकी सत्र : व्याख्यान प्रस्तुतिकरण

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के द्वितीय दिवस पर शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए डीआरडीओ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनंत नारायण भट्ट जी एवं डॉ. संजीव रस्तोगी जी

दिनांक : 16 दिसंबर, 2023 को रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) में इंस्टिट्यूट ऑफ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड अलाइड साइंस के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. अनंत नारायण भट्ट ने कहा है कि भारत प्राचीन काल से ही औषधियों के उत्पादन की जननी रही है। वर्तमान समय में अपना देश पूरी दुनिया में लगभग 60 प्रतिशत वैक्सीन के उत्पादन का केंद्र है।

डॉ. भट्ट महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के एक महत्वपूर्ण तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बॉयोनेचर कॉन–2023' विषयक संगोष्ठी में 'जैव पॉलिमर एलिगनेट से हेमोस्टैटिक एजेंट का विकास' बिंदु पर अपना शोध प्रस्तुत करते हुए डीआरडीओ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. भट्ट ने बताया कि गनशॉट से अत्यधिक रक्तस्राव की वजह से भारत के सेना के जवानों का जीवन खतरे में आ जाता है। उनके रक्तस्राव को रोकने हेतु एक स्वदेशी औषधि का निर्माण किया है जिसकी क्षमता अन्य दवाओं की अपेक्षा काफी बेहतर है। यह औषधि एलिग्नेट रसायन पर आधारित है।

एक अन्य सत्र की अध्यक्षता करते हुए इंस्टिट्यूट ऑफ मॉलिक्यूलर एंड आयुर्वेदिक बॉयोलॉजी के निदेशक एवं बीएचयू के पूर्व प्रोफेसर डॉ. राजा वशिष्ट त्रिपाठी ने आयुर्वेद के विभिन्न आयामों व पर महायोगी गोरखनाथ जी के ग्रंथो के सबद, दोहावली को लेते हुए आहार–विहार पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमें आयुर्वेद व आधुनिक विज्ञान को साथ में रखकर कदम से कदम मिलाकर आगे अध्ययन की जरूरत है जो भविष्य में मानवता के समग्र विकास हेतु एक वरदान साबित होगा। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि भारत के वैदिक ग्रंथ मार्गदर्शक ग्रंथ हैं जिनके द्वारा संपूर्ण विश्व को निरोगी बनाया जा सकता है। जरूरत बस इन ग्रंथों में निहित ज्ञान को अपनाने की है। हमारा शरीर हर प्रकार के बीमारियो से निपटने की क्षमता रखता है और इस क्षमता का ज्ञान वैदिक ग्रंथों में वर्णित है।

पुरातन काल से प्रचलित औषधि है त्रिफला : पद्मश्री होसुर : संगोष्ठी के एक सत्र में मुंबई के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं पद्मश्री से सम्मानित प्रो. आरवी होसुर ने 'हर्बोलॉमिक्स एन इमर्जिंग फ्रंटियर' विषय पर बात करते हुए कहा कि आयुर्वेद में सभी रोगों से निदान संबंधी सामग्री संकलित है। उन्होंने त्रिफला की उपयोगिता पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए बताया कि त्रिफला एंटीऑक्सीडेंट, सूजनरोधी और जीवाणुरोधी प्रभाव वाला एक प्राचीन हर्बल उपचार है। यह हमारे शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ता है। त्रिफला पुरातनकाल से प्रचलित महत्वपूर्ण औषधि है। त्रिफला को हर उम्र के लोग रसायन औषधि के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके नियमित सेवन से पेट से जुड़ी बीमारियों से बचाव होता है। यह औषधि डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर जैसे गंभीर रोगों में भी लाभकारी है। उन्होंने बताया कि आयुर्वेद के अनुसार त्रिफला में ऐसे गुण हैं जो पाचन शक्ति बढ़ाने और वजन घटाने में सहायक हैं।

प्राकृतिक संसाधनों में सभी बीमारियों का इलाज : डॉ. शिल्पी : सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय पुणे के बॉयोटेक्नोलॉजी विभाग की डॉ. शिल्पी शर्मा ने 'मधुमेह के प्रबंधन के लिए प्राकृतिक यौगिकों की क्षमता की खोज' विषय पर अपना शोध अनुभव साझा करते हुए कहा कि प्राकृतिक संसाधनों में लगभग सभी लाइलाज बीमारियों के इलाज हैं। मधुमेह जैसी भयानक बीमारी का इलाज भी आज वैज्ञानिकों ने ढूंढ लिया है और अब प्राकृतिक संसाधनों से इसकी दवाई भी बनाई जा रही है जिसका कोई साइड इफेक्ट भी नहीं होगा। आईआईटी इंदौर के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हेम चन्द्र झा ने 'अश्वगंधा बैक्टीरिया और वायरस से प्रेरित गैस्ट्रिक के खिलाफ एक संभावित चिकित्सीय एजेंट है' विषय पर

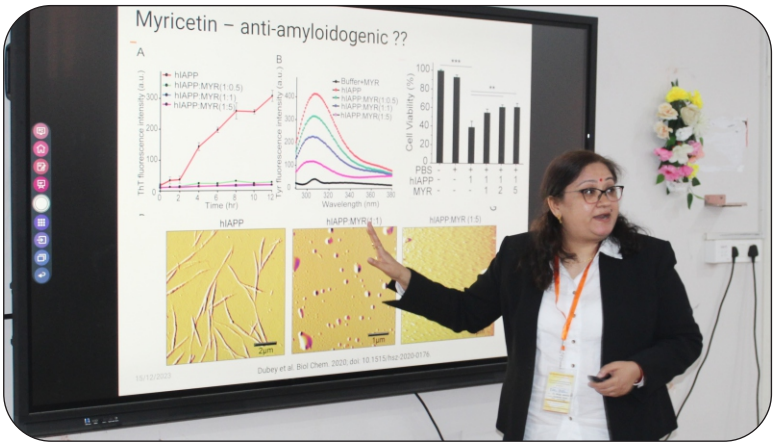

राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्बोधन प्रस्तुत करतीं हुई डॉ. शिल्पी शर्मा जी एवं विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. कृष्ण मोहन पोलुरी

अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि अश्वगंधा चूर्ण या किसी भी माध्यम में इसे लेने से यह शरीर को स्वस्थ ही बनाता है। यह विभिन्न रोगों से लड़ने में और असामान्य बीमारी से हमें बचाने में भी कारगर सिद्ध होता है।

आयुर्वेद समग्र स्वास्थ्य की पुरातन भारतीय पद्धति : प्रो. रेड्डी : बीएचयूए वाराणसी में रसशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. के. रामाचंद्र रेड्डी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आयुर्वेद प्राकृतिक एवं समग्र स्वास्थ्य की पुरातन भारतीय पद्धति है। प्रारंभ से भारत में आयुर्वेद की शिक्षा मौखिक रूप से गुरु–शिष्य परंपरा के अंतर्गत ऋषियों द्वारा दी जाती रही है। जिसे लगभग 5000 साल पहले इस ज्ञान को ग्रंथों का रूप दिया गया है। चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और अष्टांग हृदय आयुर्वेद के पुरातन ग्रंथ हैं तथा इन ग्रंथो में सृष्टि में व्याप्त पंच महाभूतों–पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश तत्वों के मनुष्यों के ऊपर होने वाले प्रभावों तथा स्वस्थ एवं सुखी जीवन के लिए के लिए उनको संतुलित रखने के महत्ता को प्रतिपादित किया गया है।

नीम की पत्तियों से डेंगू का उपचार संभव : प्रो. शरद : दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में बॉयोटेक्नोलॉजी के आचार्य प्रो. शरद कुमार मिश्रा ने 'अजादिरचता इंडिका, नीम' ए. ट्री ऑफ सॉल्विंग ग्लोबल हेल्थ प्रोब्लेम्स' विषय पर अपनी बात रखते हुए कहा कि नीम के पत्ते से डेंगू का उपचार संभव है। उन्होंने बताया कि नीम का पेड़ अपने औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है और सदियों से पारंपरिक भारतीय चिकित्सा में इसका उपयोग किया जाता रहा है। नीम के पेड़ का मुख्य लाभ इसकी बहुमुखी पत्तियां हैं है। त्वचा की विभिन्न समस्याओं के इलाज के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। हम नीम के पेड़ों को उनके बीज से लेकर तेल, पत्तियों, छाल और जड़ों तक किसी भी रूप में पा सकते हैं। इसमें हानिकारक कीड़ों और बीमारियों को दूर भगाने की भी अपार क्षमता होती है। नीम का पेड़ विभिन्न प्रकार के त्वचा विकारों जैसे मुँहासे, एक्जिमा, सोरायसिस और सनबर्न को ठीक करने में मदद करता है। नीम के पेड़ की मदद से आप लंबे समय तक मनमोहक, ताज़ा और लंबे समय तक रहने वाली खुशबू का आनंद ले सकते हैं।

इन विशेषज्ञों ने किया विद्यार्थियों का मार्गदर्शन : उद्घाटन के बाद दो दिन तक अलग–अलग सत्रों में सेंट्रल ड्रग रिसर्च इंस्टिट्यूट लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. माधव नीलकंठ मुगले, राजकीय आयुर्वेद कॉलेज लखनऊ में काया चिकित्सा विभाग के अध्यक्ष डॉ. संजीव रस्तोगी, आईआईटी रुड़की में बॉयो इंजीनियरिंग के प्रोफेसर डॉ. कृष्ण मोहन पोलुरी, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय में बॉयो टेक्नोलॉजी के आचार्य प्रो. दिनेश यादव, इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीट्यूट बरेली के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. सुजॉय के. धारा, एमिटी विश्वविद्यालय लखनऊ के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. मनीष द्विवेदी ने शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। इसी क्रम में युवा वैज्ञानिक पुरस्कार हेतु विभिन्न प्रतिभागियों ने विभिन्न शोध कार्य प्रस्तुत किए। विभिन्न प्रतिभागियों द्वारा विविध विषयों पर शोध पोस्टर प्रस्तुतिकरण किया गया। इस अवसर पर कुल 40 शोधार्थियों ने शोध प्रस्तुतीकरण किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न तकनीकी सत्रों में विश्वविद्यालय कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव समेत समस्त प्राध्यापक, विद्यार्थी एवं देश के विभिन्न जगहों से आये विशेषज्ञ, शोधार्थी उपस्थित रहें।

राष्ट्रीय संगोष्ठी

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय एवं फार्मेसी संकाय

"बॉयोनेचर कॉन-2023"

तृतीय दिवस

तकनीकी सत्र : व्याख्यान प्रस्तुतिकरण, समारोप समारोह

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप सत्र में शोधार्थियों को सम्बोंधित करते हुए डॉ. के. रामचन्द्र रेड्डी जी एवं प्रो. गौरव कैथवास जी

दिनांक : 17 दिसंबर, 2023 को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह (प्रो. यू.पी. सिंह) ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की भारतीय पद्धति सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी। कोरोना काल मे जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विश्व की पुरातन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया।

प्रो. यू.पी. सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप (समापन) सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बायोनेचर कॉन–2023' विषयक संगोष्ठी के समारोप अवसर पर उन्होंने कहा कि निरोग बने रहने को दुनिया एक बार फिर प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों को अपनाने पर जोर दे रही है। ऐसे में जरूरत है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को समयानुकूल जरूरतों के अनुसार अनुसंधानपूर्वक आगे बढ़ाया जाए।

उन्होंने कहा कि ऐसे ही प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वास्तव में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान समान है।

प्रो यू.पी. सिंह ने कहा कि विजन, एक्शन और मिशन के एक साथ मिलने पर ही क्रिएशन होता है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय इसके कुलाधिपति, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजन, यहां की फैकल्टी व अन्य कार्मिकों के एक्शन और समाज को अनुसंधानपरक ज्ञान उपलब्ध कराने के मिशन का मूर्त रूप है। दो साल के भीतर की इस विश्वविद्यालय की उपलब्धियां बेहद शानदार हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए ज्ञान, कौशल, दृष्टि, पहचान और संतुलन को शिक्षा के पांच महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में समझाया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. सिंह ने कहा कि आयुर्वेद समेत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की उपादेयता को विस्तार देने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सतत प्रयास सराहनीय हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के इन प्रयासों को नया आयाम देगी।

उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के निष्कर्ष आने वाले समय में प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को नई दृष्टि देकर आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसधानो में असीम संभावनाएं हैं जो हम सभी को स्वस्थ और ठीक करने में सक्षम हैं। हमे इस दिशा में अपने योगदान को प्रमाणित करने कि जरूरत है।

प्रो. सिंह ने कहा कि हमारे आसपास की समस्त वनस्पतियां औषधी गुणों से युक्त हैं। हमे उनके बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए। प्रो. सिंह ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में आयुर्वेद के साथ ही नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी, बॉयोमेडिकल जैसी सभी विधाएं और सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को नसीहत दी कि वे अपने विषय के अलावा मिलते जुलते विषयों में भी अभिरुचि बढ़ाएं।

ज्ञान व अनुसंधान का संगम बन गई राष्ट्रीय संगोष्ठी : डॉ. वाजपेयी : इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी ने कहा कि तीन दिन तक विशद मंथन से यह संगोष्ठी प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान और अनुसंधान का संगम बन गई।

उन्होंने प्रतिभागियों और विद्यार्थियों से यहां वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के द्वारा बताए गए अनुभव को अपने व्यावहारिक अध्ययन का हिस्सा बनाने का सुझाव दिया। समापन सत्र में स्वागत संबोधन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता एवं संगोष्ठी के

संयोजक प्रो. सुनील कुमार ने तथा आभार ज्ञापन फार्मेसी संकाय के प्रिंसिपल प्रो. शशिकांत सिंह ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सह संयोजक ट्रांसलेशनल बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार भी मंचासीन रहें। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद दिया है। इस पूरे आयोजन में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी एवं देश के विभिन्न प्रान्तों से आये वरिष्ठ वैज्ञानिक, शोधार्थी आदि उपस्थित रहें।

पवन कन्नौजिया को यंग साइंटिस्ट अवार्ड : इस संगोष्ठी में ओरल प्रेजेंटेशन में कुल 14, पोस्टर प्रेजेंटेशन में कुल 40 और यंग साइंटिस्ट अवार्ड में कुल 7 लोगो ने प्रतिभाग किया। संगोष्ठी के सह संयोजक व ट्रांसलेशनल बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. दिनेश कुमार ने यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड्स ओरल प्रेजेंटेशन, पोस्टर प्रेजेंटेशन के विजय प्रतिभागियों के नाम की घोषणा की।

यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड्स में प्रथम स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य पवन कुमार कन्नौजियाए द्वितीय स्थान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की शोध छात्रा प्रियंका भारती एवं तृतीय स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. अवेद्यनाथ सिंह को प्राप्त हुआ।

पोस्टर प्रेजेंटेशन में प्रथम स्थान एसजीपीजीआई की शोध छात्रा अमृता साहू, द्वितीय स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की शोध छात्रा अंजली राय, तृतीय स्थान एसजीपीजीआई लखनऊ के शोध छात्र कार्तिक दुबे को प्राप्त हुआ एवं ओरल प्रेजेंटेशन में प्रथम स्थान सीबीएमआर लखनऊ की शोध छात्रा रिमझिम त्रिवेदी, द्वितीय स्थान सीएसआईआर लखनऊ के शोध छात्र रोहित सिंह तथा तृतीय स्थान एसजीपीजीआई लखनऊ के शोध छात्र गुरविंदर सिंह को प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तीसरे दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों ने अपने शोध अनुभव साझा कर प्रतिभागियों और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में रस शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. के रामचंद्र रेड्डी ने 'डिजाइनिंग एंड डेवलपमेंट ऑफ आयुर्वेदिक दोसगे फॉर्म्स फॉर द मैनेजमेंट ऑफ सार्स कोविड-19' विषय पर शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कोविड महामारी के समय आशा की किरण के रूप में वर्णित पॉलीहर्बल दवा आयुष-64 के अप्रत्याशित परिणाम प्राप्त हुए। इसे मूल रूप से 1980 में मलेरिया के इलाज के लिए विकसित किया गया था। देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किए गए परीक्षणों से पता चला है कि आयुष-64 में उल्लेखनीय एंटीवायरल, इम्यून-मॉड्यूलेटर और एंटीपायरेटिक गुण हैं।

एक सत्र में आरएमआरसी गोरखपुर के डॉ. गौरव राज ने 'ड्रग रेजिस्टेंस रेवर्सल पोटेंशियल ऑफ़ नेचुरल प्रोडक्ट्स' विषय पर अपने शोध के माध्यम से बताया कि प्राकृतिक उत्पाद धीरे-धीरे सुरक्षित और प्रभावी कैंसर रोधी यौगिकों के मूल्यवान स्रोत के रूप में उभर रहे हैं। प्राकृतिक उत्पाद ईएमटी प्रक्रिया को उलट कर कैंसर दवा प्रतिरोध में शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप कर सकते हैं। अलग-अलग सत्रों में सेंटर ऑफ बॉयोमेडिकल रिसर्च लखनऊ में डिपार्टमेंट ऑफ स्पेक्ट्रोस्कोपी एंड इमेजिंग के हेड प्रो. नीरज सिन्हा, अलगप्पा विश्वविद्यालय तमिलनाडु में बॉयोइंफॉर्मेटिक्स साइंस के प्रोफेसर डॉ. संजीव कुमार सिंह आदि ने विविध शोध विषयों पर व्याख्यान दिए।

समारोप समारोह

तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप सत्र में शोधार्थियों को सम्बोधित करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के माननीय प्रतिकुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह जी एवं महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. सिंह जी

दिनांक : 17 दिसंबर, 2023 को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह (प्रो. यू.पी. सिंह) ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की भारतीय पद्धति सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी। कोरोना काल मे जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विश्व की पुरातन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया।

प्रो. यू.पी. सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बॉयोमेडिकल रिसर्च

सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप (समापन) सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बायोनेचर कॉन–2023' विषयक संगोष्ठी के समारोप अवसर पर उन्होंने कहा कि निरोग बने रहने को दुनिया एक बार फिर प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों को अपनाने पर जोर दे रही है। ऐसे में जरूरत है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को समयानुकूल जरूरतों के अनुसार अनुसंधानपूर्वक आगे बढ़ाया जाए।

उन्होंने कहा कि ऐसे ही प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वास्तव में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान समान है।

प्रो यू.पी. सिंह ने कहा कि विजन, एक्शन और मिशन के एक साथ मिलने पर ही क्रिएशन होता है। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय इसके कुलाधिपति, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजन, यहां की फैकल्टी व अन्य कार्मिकों के एक्शन और समाज को अनुसंधानपरक ज्ञान उपलब्ध कराने के मिशन का मूर्त रूप है। दो साल के भीतर की इस विश्वविद्यालय की उपलब्धियां बेहद शानदार हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए ज्ञान, कौशल, दृष्टि, पहचान और संतुलन को शिक्षा के पांच महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में समझाया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. सिंह ने कहा कि आयुर्वेद समेत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की उपादेयता को विस्तार देने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सतत प्रयास सराहनीय हैं। राष्ट्रीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के इन प्रयासों को नया आयाम देगी। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के निष्कर्ष आने वाले समय में प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को नई दृष्टि देकर आगे बढ़ाएंगे। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक संसधानो में असीम संभावनाएं हैं जो हम सभी को स्वस्थ और ठीक करने में सक्षम हैं। हमे इस दिशा में अपने योगदान को प्रमाणित करने कि जरूरत है।

प्रो. सिंह ने कहा कि हमारे आसपास की समस्त वनस्पतियां औषधी गुणों से युक्त हैं। हमे उनके बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए। प्रो. सिंह ने कहा कि इस विश्वविद्यालय में आयुर्वेद के साथ ही नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी, बॉयोमेडिकल जैसी सभी विधाएं और सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नसीहत दी कि वे अपने विषय के अलावा मिलते जुलते विषयों में भी अभिरुचि बढ़ाएं।

इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी ने कहा कि तीन दिन तक विशद मंथन से यह संगोष्ठी प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान और अनुसंधान का संगम बन गई। उन्होंने प्रतिभागियों और विद्यार्थियों से यहां वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के द्वारा बताए गए अनुभव को अपने व्यावहारिक अध्ययन का हिस्सा बनाने का सुझाव दिया। समापन सत्र में स्वागत संबोधन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता एवं संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सुनील कुमार ने तथा आभार ज्ञापन फार्मेसी संकाय के प्रिंसिपल प्रो. शशिकांत सिंह ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के सह संयोजक ट्रांसलेशनल बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार भी मंचासीन रहें। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद दिया है। इस पूरे आयोजन में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षक, विद्यार्थी एवं देश के विभिन्न प्रान्तों से आये वरिष्ठ वैज्ञानिक, शोधार्थी आदि उपस्थित रहें।

पवन कन्नौजिया को यंग साइंटिस्ट अवार्ड : इस संगोष्ठी में ओरल प्रेजेंटेशन में कुल 14, पोस्टर प्रेजेंटेशन में कुल 40 और यंग साइंटिस्ट अवार्ड में कुल 7 लोगो ने प्रतिभाग किया। संगोष्ठी के सह संयोजक व ट्रांसलेशनल बॉयोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष डॉ. दिनेश कुमार ने यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड्स ओरल प्रेजेंटेशन, पोस्टर प्रेजेंटेशन के विजय प्रतिभागियों के नाम की घोषणा की।

यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड्स में प्रथम स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य पवन कुमार कन्नौजियाए द्वितीय स्थान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की शोध छात्रा प्रियंका भारती एवं तृतीय स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. अवेद्यनाथ सिंह को प्राप्त हुआ।

पोस्टर प्रेजेंटेशन में प्रथम स्थान एसजीपीजीआई की शोध छात्रा अमृता साहू, द्वितीय स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की शोध छात्रा अंजली राय, तृतीय स्थान एसजीपीजीआई लखनऊ के शोध छात्र कार्तिक दुबे को प्राप्त हुआ एवं ओरल प्रेजेंटेशन में प्रथम स्थान सीबीएमआर लखनऊ की शोध छात्रा रिमझिम त्रिवेदी, द्वितीय स्थान सीएसआईआर लखनऊ के शोध छात्र रोहित सिंह तथा तृतीय स्थान एसजीपीजीआई लखनऊ के शोध छात्र गुरविंदर सिंह को प्राप्त हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तीसरे दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों ने अपने शोध अनुभव साझा कर प्रतिभागियों और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में रस शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. के रामचंद्र रेड्डी ने 'डिजाइनिंग एंड डेवलपमेंट ऑफ आयुर्वेदिक दोसगे फॉर्म्स फॉर द मैनेजमेंट ऑफ सार्स कोविड–19' विषय पर शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कोविड महामारी के समय आशा की किरण के रूप में वर्णित पॉलीहर्बल दवा आयुष–64 के अप्रत्याशित परिणाम प्राप्त हुए। इसे मूल रूप से 1980 में मलेरिया के इलाज के लिए विकसित किया गया था। देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों के नेतृत्व में किए गए परीक्षणों से पता चला है कि आयुष–64 में उल्लेखनीय एंटीवायरल, इम्यून–मॉड्यूलेटर और एंटीपायरेटिक गुण हैं।

एक सत्र में आरएमआरसी गोरखपुर के डॉ. गौरव राज ने 'ड्रग रेजिस्टेंस रेवर्सल पोटेंशियल ऑफ़ नेचुरल प्रोडक्ट्स' विषय पर अपने शोध के माध्यम से बताया कि प्राकृतिक उत्पाद धीरे–धीरे सुरक्षित और प्रभावी कैंसर रोधी यौगिकों के मूल्यवान स्रोत के रूप में उभर रहे हैं। प्राकृतिक उत्पाद ईएमटी प्रक्रिया को उलट कर कैंसर दवा प्रतिरोध में शामिल विभिन्न प्रक्रियाओं में हस्तक्षेप कर सकते हैं। अलग–अलग सत्रों में सेंटर ऑफ बॉयोमेडिकल रिसर्च लखनऊ में डिपार्टमेंट ऑफ स्पेक्ट्रोस्कोपी एंड इमेजिंग के हेड प्रो. नीरज सिन्हा, अलगप्पा विश्वविद्यालय तमिलनाडु में बॉयोइंफॉर्मेटिक्स साइंस के प्रोफेसर डॉ. संजीव कुमार सिंह आदि ने विविध शोध विषयों पर व्याख्यान दिए।

वृहद स्वास्थ्य कैम्प

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

स्वास्थ्य कैम्प का उदघाटन करते हुए ब्लॉक प्रमुख डॉ सुनीता एवं श्री संजय सिंह जी

दिनांक : 17 दिसम्बर, 2023 को गुरु गोरक्षनाथ इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज बालापार रोड सोनबरसा द्वारा एक वृहद स्वास्थ्य मेले का आयोजन पीपीगंज के भरोहिया ब्लॉक परिसर में किया गया। कैम्प का उदघाटन ब्लाक प्रमुख डॉ सुनीता संजय सिंह ने किया।

इस अवसर पर उन्होंने सबके उत्तम स्वास्थ्य की कामना की तथा उपलब्ध चिकित्सीय सुविधाओं के बारे में बताया शिविर में कुल 693 मरीजों का परीक्षण किया गया, जिसमें मोतियाबिंद के 52 मरीज चिन्हित किये गए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेयी ने कैम्प में आये मरीजों से उनका कुशलक्षेम पूछा और उत्तम स्वास्थ्य की शुभकामनाएं दी अवसर पर उपस्थित चिकित्सकों में डॉक्टर नागेंद्र वर्मा न्यूरो, डॉ. राजेश पांडेय एम डी. डॉ. निहारिका शाही. डॉ. के. के. चौबे एम एस ई एन टी, डॉ. रेनू गुप्ता, डॉ. ओ. पी. सिंह एम एस ऑर्थो, डॉक्टर रेनू गुप्ता नेत्ररोग विशेषज्ञ , डॉक्टर प्रदीप कुशवाहा, डॉ. हरिवंश यादव ने अपनी सेवाएं प्रदान की शिविर में सौरभ श्रीवास्तव, सत्यम, चन्दन, आकांक्षा शुक्ला, ज्योति के साथ अखिलेश व हॉस्पिटल स्टॉफ़ के साथ 10 नर्सिंग छात्राओं का योगदान सराहनीय रहा। कार्यक्रम के अंत में प्रबंधक जी के मिश्र ने उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया।

इस स्वास्थ्य मेले में ब्लॉक प्रमुख के निजी सहायक रजत का योगदान बहुत ही सराहनीय रहा।

नवनियुक्त लोकपाल

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

दिनांक : 18 दिसम्बर, 2023। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, सोनबरसा गोरखपुर का लोकपाल नियुक्त किया गया है। उनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष या 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने की अवधि (इनमें से भी पहले हो) के लिए होगा।

यह जानकारी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने दी है। उन्होंने बताया कि लोकपाल के रूप में प्रो. वी.के. सिंह की नियुक्ति महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 11 अप्रैल 2023 को जारी अधिसूचना में विद्यार्थियों की शिकायतों के समाधान के लिए लोकपाल की नियुक्ति प्राविधानों के अंतर्गत की गई है।

कुलसचिव ने बताया कि लोकपाल की नियुक्ति, सेवाकाल एवं शर्तें वहीं होंगी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय–समय पर विहित की जाएंगी। लोकपाल छात्र शिकायत निवारण समिति के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों की सुनवाई कर निर्णय लेंगे। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में लोकपाल नियुक्त किए गए।

प्रो. वी.के. सिंह, पूर्व में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय (एकेटीयू) लखनऊ के प्रति कुलपति रह चुकें हैं। विद्यार्थी के रूप में यूजी तथा पीजी में गोल्ड मेडलिस्ट प्रो. सिंह गणित में डॉक्टरेट हैं और उन्हें शिक्षण व शोध के क्षेत्र में 37 वर्ष का अनुभव है। प्रो. वी. के. सिंह, पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह के सुपुत्र हैं।

प्रो. विजय कृष्ण सिंह

विकसित भारत @ 2047 : पोस्टर प्रतियोगिता

महंत अवैद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

पोस्टर प्रस्तुति देतीं हुई पैरामेडिकल की छात्रा

दिनांक : 22 दिसंबर, 2023 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत @ 2047 योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय में छात्र–छात्राओं ने पोस्टर प्रदर्शनी कार्यक्रम में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यकम की अध्यक्षता श्री रोहित कुमार श्रीवास्तव, प्राचार्य, महंत अवैद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज ने की।

पैरामेडिकल के विद्यार्थियों द्वारा आयोजित इस स्पर्धा के मूल्यांकन का दायित्व श्री श्रीकांत, डिप्टी रजिस्ट्रार, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, डॉ. शशिकांत सिंह, प्राचार्य, औषधि संकाय, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय एवं श्री अभिनव सिंह राठौड़, असिस्टेंट प्रोफेसर, महंत अवैद्यनाथ पैरामेडिकल संकाय पर रहा।

कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने में समस्त पैरामेडिकल के शिक्षकों ने विशेष भूमिका निभाई।

समझौता ज्ञापन — महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

समझौता ज्ञापन करते हुए आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह एवं माननीय कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेयी साथ में माननीय कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, डॉ. जी. एन. सिंह, डॉ. विमल कुमार दूबे व अन्य

दिनांक : 15 दिसम्बर, 2023 को अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इर्री) ने उत्तर प्रदेश में चावल अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को मजबूत करने के लिए गोरखपुर में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर (एमजीयूजी) के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया है। इस ज्ञापन पर हस्ताक्षर एमजीयूजी के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल बाजपेयी और वाराणसी स्थित इर्री की दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के परिसर में किया ।

इस समझौते के तहत सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि–खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों की वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम शामिल हैं। इसके अलावा, संस्थानों का लक्ष्य इस साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे की क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रद्ली को सुदृण किया जा सके।

डॉ. अतुल बाजपेयी ने संस्थानों के बीच समझौते का स्वागत किया और इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों के प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। इसके साथ–साथ उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इर्री की योजना के लिए मजबूत समर्थन दिया।

इर्री की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों और अनुसंधान और विकास पहलों के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना भी साझा की। 'एमजीयूजी बाढ़–प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव–सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ–साथ बेहतर कालानमक पहुंच के मूल्यांकन में मदद करेगा। यह कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मोंधूमि प्रजातियों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य–आधारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। डॉ. सिंह ने कहा, विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आई सार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम कर सकता है। समझौता करार का स्वागत करते हुए डॉ. जी. एन. सिंह (सलाहकार मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश) ने कहा कि 'यह करार पूर्वांचल के किसानो को खाद्य के क्षेत्र में आत्मानिर्भर बनाने में सहायक होगा।' महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के रजिस्ट्रार डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि कॉलेज के अधिष्ठाता डॉ. विमल दुबे और आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव इस एमओयू हस्ताक्षर समारोह के दौरान उपस्थित थे।

विकसित भारत @ 2047 : व्याख्यान कार्यक्रम — महंत अवैद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

विद्यार्थियों को विकसित भारत @2047 योजना की जानकारी देते श्री शुभम कुमार मौर्य

दिनांक : 25 दिसंबर, 2023 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में माननीय कुलपति महोदय सेवानिवृत जनरल डॉ.अतुल बाजपेई जी की अध्यक्षता और कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव जी के मार्गदर्शन में भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत /2047 योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को अपने रचनात्मक विचारों को प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया। कार्यक्रम में सभी विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, प्राचार्य, विभागाध्यक्ष एवं शिक्षकगण उपस्थित रहें।

जयंती समारोह : व्याख्यान कार्यक्रम

मदन मोहन मालवीय जी की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी एवं शिक्षकगण

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

दिनांक : 25 दिसंबर, 2023 को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर के अंतर्गत संचालित गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेस में महामना मदन मोहन मालवीय जी तथा अटल बिहारी बाजपेई जी की जयंती मनाई गई तथा तुलसी दिवस के अवसर पर तुलसी पूजन भी किया गया। आयुर्वेद कॉलेज के प्राचार्य मंजूनाथ एन. एस. एवं सभी प्राध्यापकों ने महामना तथा अटल जी के चित्रों पर पुष्पांजली अर्पित की और तुलसी पूजन किया।

आचार्य साध्वी नन्दन पाण्डेय ने बहुत सरल एवं उर्जावान तरीके से विद्यार्थीयों को अटल जी और मालवीय जी की जीवनी बताई, उन्होने अपने सम्बोधन में बताया कि कैसे अटल जी का हर परिस्थिति को देखने का तरीका अगल था। इसी के साथ डॉ. गिरिधर वेदांत सर ने तुलसी की आध्यात्मिक, आयुर्वेदिक महत्वता के साथ उसकी गुणवत्ता को भी बताया। आभार ज्ञापन डॉ. मिनी के. वी. के द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के बाद विद्यार्थियों में प्रसाद वितरण कराया गया। कार्यक्रम में आयुर्वेद संकाय के सभी शिक्षकगण एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन कोमल गुप्ता ने किया।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह में विश्वविद्यालय के विजयी प्रतिभागी

01 ब्रम्ह्लीन महंत अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक श्रेष्ठतम स्नातक विद्यार्थी

शिवम पाण्डेय, बी.एस.सी बॉयोटेक्नोलॉजी, द्वितीय वर्ष

02 शोभायात्रा एवं श्रेष्ठ पथ संचलन, दर्शन धींगरा स्मृति पुरस्कार

प्रथम स्थान–महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

03 प्रदर्शनी – संस्था की विकास यात्रा विषय पर आयोजित

प्रथम पुरस्कार–महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

04 महाराणा भगवत सिंह स्मृति पुरस्कार

सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा–तन्नु चौहान, एएनएम,

05 डॉ. हरि प्रसाद शाही स्मृति पुरस्कार

सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्रा–प्रीति गुप्ता, जीएनएम,

06 हिन्दी निबंध प्रतियोगिता

तृतीय स्थान–अनामिका सिंह, जीएनएम, प्रथम वर्ष

07 कम्प्युटर प्रश्नमंच प्रतियोगिता

द्वितीय स्थान–प्रिंस प्रशान्त गुप्ता, सचिन गुप्ता, विजयेन्द्र नाथ गुप्ता, बीएएमएस, द्वितीय वर्ष एवं करिश्मा रस्तोगी, बीएससी, नर्सिंग

08 कब्बडी प्रतियोगिता, बालिका वर्ग

प्रथम स्थान–महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

09 योग्यता छात्रवृत्ति नकद पुरस्कार

गुरू गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग (22 विद्यार्थी)

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस (06 विद्यार्थी)

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज (32 विद्यार्थी)

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय (23 विद्यार्थी)

कृषि संकाय (04 विद्यार्थी)

फॉर्मेसी कॉलेज (04 विद्यार्थी)

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह के शोभायात्रा में प्रतिभाग करते विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

दिसम्बर माह के प्रमुख आयोजन

राष्ट्रीय कैडेट कोर

04 दिसम्बर, 2023	महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह में विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित 102 यूपी बटालियन एनसीसी गोरखपुर के समस्त कैडेट्स द्वारा अतुलनीय प्रदर्शन किया गया।

राष्ट्रीय सेवा योजना

01 दिसम्बर, 2023	महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में "विश्व एड्स दिवस" पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें 236 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
12 दिसम्बर, 2023	रोड सेफ्टी क्लब के द्वारा आयोजित इस मण्डल स्तरी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व विद्यार्थी शिवम पाण्डेय ने किया
21 दिसम्बर, 2023	विश्वविद्यालय परिसर में राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत आसपास के जरूरतमंद ग्रामीणों को विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति द्वारा कम्बल वितरित किया गया।
22 दिसम्बर, 2023	भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत @ 2047 योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कुल 238 विद्यार्थियों ने प्रतिभाग किया।
28 दिसम्बर, 2023	विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को मतदाता जागरूता अभियान के अंतर्गत मतदान के प्रति संकल्पित किया गया।
29 दिसम्बर, 2023	विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को मतदाता वोटर आई. डी. निर्माण हेतु ऑनलाइन एवं ऑफलाइन प्रशिक्षण दिया गया।
30 दिसम्बर, 2023	हिमाचल प्रदेश में आयोजित हो रहे साहसिक कार्यक्रम शिविर विश्वविद्यालय के प्रतिनिधित्व हेतु पांच विद्यार्थी का चयन हुआ।
30 दिसम्बर, 2023	12 से 16 जनवरी तक नासिक महाराष्ट्र में आयोजित 'यूथ फेस्टिवल' में प्रतिभाग हेतु विश्वविद्यालय के दो विद्यार्थी आलोक सिंह एवं विजय चौधरी का चयन किया गया है

दिसम्बर माह की मुख्य बैठकें

05,12,14 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति महोदय की अध्यक्षता में 15–17 दिसम्बर, 2023 को आयोजित होने वाली राष्ट्रीय संगोष्ठी की तैयारियों को लेकर समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई।
08 दिसम्बर, 2023	विश्वविद्यालय के माननीय उपकुलसचिव जी की अध्यक्षता में योगीराज बाबा गंभीरनाथ अतिथि गृह की बैठक कक्ष में मिशन स्वावलम्बी समिति की बैठक आयोजित की गई।
13 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में बी.बी.ए. हेल्थकेयर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए जाने हेतु नई दिल्ली के पदाधिकारियों के संग बैठक सम्पन्न हुई।
22, 29 दिसम्बर, 2023	विश्वविद्यालय के माननीय उपकुलसचिव जी की अध्यक्षता में योगीराज बाबा गंभीरनाथ अतिथि गृह की बैठक कक्ष में मिशन स्वावलम्बी समिति की बैठक आयोजित की गई।
25 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई एक बैठक में पी.सी.आई. पोर्टल पर अपलोड किए जाने वाले विभिन्न अभिलेखों के दायित्व निर्वहन हेतु शिक्षकों को निर्देशित किया गया।
25 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग द्वारा फरवरी, 2024 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी को अनुमोदन प्रदान किया गया।
25 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस के प्राचार्य के साथ संकायो की आख्या के सन्दर्भ में बैठक आयोजित की गई।
26 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक एवं कार्यक्रम अधिकारियों की बैठक सम्पन्न हुई।
27 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में पूर्वी उत्तर प्रदेश, पड़ोसी राज्य, बिहार के पश्चिमी क्षेत्रों में फैल रही इंसेफ्लाइटिस नामक बीमारी पर विस्तार से चर्चा की गई।
27 दिसम्बर, 2023	माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में फॉमेसी कॉलेज के प्राचार्य एवं प्राध्यापकों के साथ संकाय संबंधी गतिविधियों पर विस्तार से चर्चा की गई।

जनवरी, 2024 की प्रस्तावित कार्ययोजनाएं

विश्वविद्यालय

07 जनवरी, 2024	कार्यपरिषद की बैठक
26 जनवरी, 2024	गणतंत्र दिवस समारोह

विभागीय आयोजन

गुरू गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेस

16 जनवरी, 2024	ऋतुचर्या विषय पर भाषण प्रतियोगिता
22–27 जनवरी, 2024	पीए–2 वाग्भट्ट सत्र (2023–24)
22 जनवरी, 2024	टर्म टेस्ट– सुश्रुत सत्र (2022–23)

सम्बद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय

06–09 जनवरी, 2024	प्रयोगात्मक परीक्षा
10 जनवरी, 2024	शैक्षणिक नवीन सत्र

कृषि संकाय

10 जनवरी, 2024	अकादमिक सत्र
12 जनवरी, 2024	राष्ट्रीय युवा दिवस
23 जनवरी, 2024	पुष्प निर्जलीकरण कार्यशाला

महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज

10 जनवरी, 2024	परीक्षा परिणाम घोषणा
20–25 जनवरी, 2024	एचआईवी व सिफालिस जागरूकता कार्यक्रम

फॉर्मेसी संकाय

05 जनवरी, 2024	परीक्षा परिणाम घोषणा
10–15 जनवरी, 2024	प्रस्ताविक अतिथि व्याख्यान

गुरू श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग

30 जनवरी, 2023	विश्व कुष्ठ रोग दिवस (जागरूकता कार्यक्रम)

तुलसी दिवस

तुलसी सम्पूर्ण धरा के लिए वरदान है, अत्यंत उपयोगी औषधि है, मात्र इतना ही नहीं, ये तो मानव जीवन के लिए अमृत है ! यह केवल शरीर-स्वास्थ्य की दृष्टि से ही नहीं, अपितु धार्मिक, आध्यात्मिक, पर्यावरणीय एवं वैज्ञनिक आदि विभिन्न दृष्टियों से भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। तुलसी के पौधे में मां लक्ष्मी के साथ भगवान विष्णु का भी वास होता है। तुलसी की जड़ों में भगवान शालीग्राम का वास होता है।

जो दर्शन करने पर सारे पाप-समुदाय का नाश कर देती है, स्पर्श करने पर शरीर को पवित्र बनाती है, प्रणाम करने पर रोगों का निवारण करती है, जल से सींचने पर यमराज को भी भय पहुँचाती है, आरोपित करने पर भगवान श्रीकृष्ण के समीप ले जाती है और भगवान के चरणों में चढ़ाने पर मोक्षरूपी फल प्रदान करती है, उस तुलसी देवी को नमस्कार है। (पद्म पुराणः उ. ख. 56.22)

तुलसी का पौधा (Tulsi Plant) सामान्तया 30 से 60 सेमी तक ऊँचा होता है और इसके फूल छोटे-छोटे सफेद और बैगनी रंग के होते हैं। इसका पुष्पकाल एवं फलकाल जुलाई से अक्टूबर तक होता है। भारत के अधिकांश घरों में तुलसी के पौधे (Tulsi Plant) की पूजा की जाती है। हमारे ऋषियों को लाखों वर्ष पूर्व तुलसी के औषधीय गुणों का ज्ञान था इसलिए इसको को दैनिक जीवन में प्रयोग हेतु इतनी प्रमुखत से स्थान दिया गया है। आयुर्वेद में भी तुलसी के फायदों का विस्तृत उल्लेख मिलता है।

प्राकृतिक इम्युनिटी बूस्टरः

तुलसी में विटामिन सी और जिंक भरपूर मात्रा में होता है। इस प्रकार यह प्राकृतिक प्रतिरक्षा बूस्टर के रूप में कार्य करता है और संक्रमण को दूर रखता है। इसमें भरपूर मात्रा में एंटी-बैक्टीरियल, एंटी-वायरल और एंटी-फंगल गुण होते हैं जो हमें कई तरह के संक्रमणों से बचाते हैं। तुलसी की पत्तियों का अर्क टी हेल्पर कोशिकाओं और प्राकृतिक किलर कोशिकाओं की गतिविधि को बढ़ाता है, जिससे प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा मिलता है

बुखार (ज्वरनाशक) और दर्द (एनाल्जेसिक) को कम करता हैः

तुलसी में एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-वायरल गुण होते हैं जो संक्रमण से लड़ने में मदद करते हैं, जिससे बुखार कम होता है। तुलसी के ताजे रस को काली मिर्च के चूर्ण के साथ लेने से समय-समय पर होने वाला बुखार ठीक हो जाता है। तुलसी की पत्तियों को पीसी हुई इलायची के साथ आधा लीटर पानी में उबालकर चीनी और दूध के साथ मिलाकर पीने से भी तापमान कम करने में मदद मिलती है

तनाव और रक्तचाप को कम करता है :

तुलसी में ओसिमुमोसाइड्स ए और बी यौगिक होते हैं। ये यौगिक तनाव को कम करते हैं और मस्तिष्क में न्यूरोट्रांसमीटर सेरोटोनिन और डोपामाइन को संतुलित करते हैं। तुलसी के सूजन रोधी गुण सूजन और रक्तचाप को कम करते हैं।

कैंसर रोधी गुण :

तुलसी में मौजूद फाइटोकेमिकल्स में मजबूत एंटीऑक्सीडेंट गुण होते हैं। इस प्रकार, वे हमें त्वचा, लीवर, मुंह और फेफड़ों के कैंसर से बचाने में मदद करते हैं। तुलसी को इसके औषधीय गुणों के कारण अद्भुत जड़ी-बूटी या कभी-कभी पवित्र जड़ी-बूटी भी कहा जाता है। ऐसी कई बीमारियाँ हैं जो व्यक्ति से निकलने के बाद दोबारा लोगों को प्रभावित कर सकती हैं। लेकिन तुलसी के सेवन से आप निश्चिंत हो सकते हैं कि ये बीमारियाँ आपको प्रभावित नहीं कर पाएंगी।

हमारी विरासत

महर्षि आर्यभट्ट

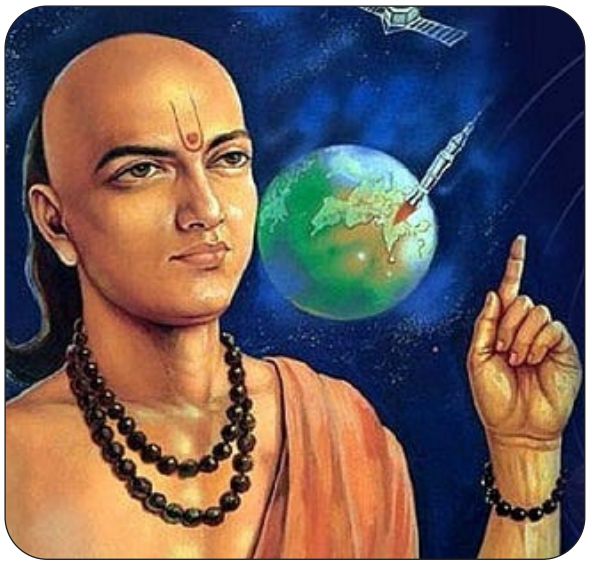

महर्षि आर्यभट्ट

आर्यभट्ट (476-550) प्राचीन भारत के एक महान ज्योतिषविद्, खगोलशास्त्री और गणितज्ञ थे। इन्होंने आर्यभटीय ग्रंथ की रचना की जिसमें ज्योतिषशास्त्र के अनेक सिद्धांतों का प्रतिपादन है।

इनका जन्म 476 इस्वी मे बिहार के कुसुमपुर (वर्तमान मे पाटलिपुत्र) में हुआ था। इन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय से अध्ययन किया था। ज्योतिष गणित में इनका महान योगदान है। गणित को अन्य विषयो से मुक्त कर एक स्वतंत्र शास्त्र के रूप में स्थापित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है। आर्यभट्ट ने कई ग्रंथों की रचना की लेकिन वर्तमान समय में उनकी चार पुस्तकें ही मौजूद हैं, जिनके नाम-आर्यभटीय, दशगीतिका, तंत्र और आर्यभट्ट सिद्धांत हैं। आर्यभट्ट के कार्यों की जानकारी उनके द्वारा रचित ग्रंथों से मिलती है। जिसके अनुसार आर्यभट्ट प्रथम ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने कहा कि पृथ्वी गोल है और वह अपनी धुरी पर घूमती है जिससे दिन और रात उत्पन्न होते हैं। उन्होंने घोषणा की कि चाँद पर अंधेरा है और वह सूर्य के प्रकाश के कारण चमकता है। वह ब्रह्मंड की भूकेंद्रीय अवधारणा में विश्वास करते थे कि पृथ्वी ब्रह्मंड का केंद्र है। गणित में भी आर्यभट्ट का योगदान समान महत्व रखता है। उन्होंने गणित के क्षेत्र में महान आर्किमिडीज़ से भी अधिक सटीक 'पाई' का मान 3.1416 बताया और पहली बार कहा कि यह सन्निकटमान है। और वही पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने ज्या सारणी (ज्ंइसम वf पदमे) दी। उनकी अनिर्धारित समीकरण (इनडिटरमीनेट इक्वेशन) की हल पद्धति जैसे ए.एक्स.बी वाई.सी आज पूरी दूनिया के गणित के छात्र और ज्ञता जानते हैं। आर्यभट्ट कि गणना के अनुसार पृथ्वी की परिधि 39,968.0582 किलोमीटर है, जो इसके वास्तविक मान 40,075.0167 किलोमीटर से केवल 0.2: कम है। अपने ग्रंथ आर्यभटीय में उन्होंने गणित तथा खगोल शास्त्र की गणना के दूसरे पहलुओं पर भी जैसे रेखा गणित, विस्तार कलन (मैन्सूरेशन), वर्गमूल (स्क्वायर रूट), घनमूल (क्यूब रूट), श्रेणी (प्रोग्रेशन) और खगोलीय आकृतियों पर भी प्रकाश डाला।

अपनी वृद्धावस्था में आर्यभट्ट ने एक और पुस्तक 'आर्यभट्ट सिद्धात' के नाम से लिखी। यह दैनिक खगोलीय गणना और अनुष्ठानों के लिए शुभ मुहूर्त निश्चित करने के काम आती थी। आज भी पंचांग बनाने के लिए आर्यभट्ट की खगोलीय गणनाओं का उपयोग किया जाता है। गणित और खगोल विज्ञान के क्षेत्रों में उनके योगदान की स्मृति में ही भारत के पहले उपग्रह का नाम आर्यभट्ट रखा गया है।

आर्यभट्ट का निधन 550 ई. पू. में 74 वर्ष की आयु में हुआ।

महायोगी गोरखनाथ विवि की राष्ट्रीय संगोष्ठी में आयेंगे कई देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक

गोरखपुर, 5 दिसंबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां आएंगे।

एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी तीन दिनों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो तकनीकी सत्र, द्वितीय दिवस में छह तकनीकी सत्र एवं तृतीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप समारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. सतीश रेड्डी, अध्यक्ष एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑफ़ मॉलेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलॉजी गोरखपुर उपस्थित रहेंगे।

समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। यह संगोष्ठी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह एवं प्रो शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मेसी कॉलेज द्वारा संयोजित की जा रही है। आयोजन समिति में डॉ अनुपमा ओझा, डॉ अमित कुमार दुबे, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया का सहयोग है। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं।

गोरखनाथ वि.वि. की वराष्ट्रीय संगोष्ठी में आएंगे कई देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक

स्वतंत्र चेतना

नगर संवाददाता /गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां आएंगे।

एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी तीन दिनों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो तकनीकी सत्र, द्वितीय दिवस में छह तकनीकी सत्र एवं तृतीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप समारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट आफ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट आफ मालेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलाजी मौजूद रहेंगे। समारोप सत्र में प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ. जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी लखनऊ महायोगी गोरखनाथ विश्व विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। यह संगोष्ठी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह एवं प्रो. शशिकांत सिंह प्राचार्य, फार्मेसी कालेज द्वारा संयोजित की जा रही है। आयोजन समिति में डा. अनुपमा ओझा, डा. अमित कुमार दुबे एवं डा. पवन कुमार कन्नौजिया का सहयोग है। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं। समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। यह संगोष्ठी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह एवं प्रो शशिकांत सिंह, प्राचार्य, फार्मेसी कॉलेज द्वारा संयोजित की जा रही है। आयोजन समिति में डॉ अनुपमा ओझा, डॉ अमित कुमार दुबे, डॉ पवन कुमार कन्नौजिया का सहयोग है। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं।

महायोगी गोरखनाथ विवि की राष्ट्रीय संगोष्ठी में आएंगे देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक

न्याय आपका संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया जाएगा।

संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां आएंगे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी तीन दिनों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो तकनीकी सत्र, द्वितीय दिवस में छह तकनीकी सत्र एवं तृतीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप समारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. सतीश रेड्डी, अध्यक्ष एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑफ़ मॉलेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलॉजी गोरखपुर उपस्थित रहेंगे।

समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. सतीश रेड्डी, अध्यक्ष एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑफ़ मॉलेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलॉजी गोरखपुर उपस्थित रहेंगे।

समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं।

ष्ट्रीय संगोष्ठी में आएंगे कई देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक

रखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ श्व विद्यालय द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य ज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त ावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय ोष्ठी का आयोजन 15 से 17 दिसंबर तक या जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां रहे हैं।

तीन दिन चलेगा राष्ट्रीय संगोष्ठी

एडवांसेज एंड अपर्चुनिटीज ड्रग डिस्कवरी फ्राम नेचुरल प्रोडक्ट्स ायोनेचर कान-2023) विषयक संगोष्ठी तीन ों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो नीकी सत्र, द्वितीय दिवस में छह तकनीकी सत्र तृतीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप ारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए ्य अतिथि के रूप में डा. जी सतीश रेड्डी, अध्यक्ष रोनाटिकल सोसाइटी आफ इंडिया, विशिष्ट तिथि के रूप में डा. राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डा. अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टीच्यूट आफ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी डायरेक्टर, इंस्टीच्यूट आफ मालेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलाजी मौजूद रहेंगे। समारोप सत्र में प्रो. उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ. जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी लखनऊ महायोगी गोरखनाथ विश्व विद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी उपस्थित रहेंगे। यह संगोष्ठी संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह एवं प्रो. शशिकांत सिंह प्राचार्य, फार्मेसी कालेज द्वारा संयोजित की जा रही है। आयोजन समिति में डा. अनुपमा ओझा, डा. अमित कुमार दुबे एवं डा. पवन कुमार कन्नौजिया का सहयोग है।

'महायोगी गोरखनाथ विवि की राष्ट्रीय संगोष्ठी में आएंगे कई देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक'

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां आएंगे।

एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन–2023) विषयक संगोष्ठी तीन दिनों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो तकनीकी सत्र, द्वितीय दिवस में छह तकनीकी सत्र एवं तृतीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप समारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. सतीश रेड्डी, अध्यक्ष एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप मे डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑफ़ मॉलेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलॉजी गोरखपुर उपस्थित रहेंगे।

समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं।

महायोगी गोरखनाथ विवि की राष्ट्रीय संगोष्ठी में आएंगे कई देश के प्रतिष्ठित वैज्ञानिक

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से 17 दिसंबर तक किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई प्रतिष्ठित वैज्ञानिक यहां आएंगे। 'एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी तीन दिनों तक चलेगी। प्रथम दिवस में उद्घाटन, दो तकनीकी सत्र, द्वितीय दिवस दो तकनीकी सत्र के बाद समारोप समारोह आयोजित होगा। उद्घाटन सत्र के लिए मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. जी. सतीश रेड्डी, अध्यक्ष एयरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया, विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ राजीव सिंह रघुवंशी, औषधि नियंत्रक भारत सरकार, डॉ अनंत नारायण भट्ट, वरिष्ठ वैज्ञानिक, इंस्टिट्यूट ऑफ़ न्यूक्लियर मेडिसिन एंड एलाइड साइंसेज, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं प्रो. राजा वशिष्ठ त्रिपाठी, डायरेक्टर, इंस्टिट्यूट ऑफ़ मॉलेक्युलर एंड आयुर्वेदिक बायोलॉजी गोरखपुर उपस्थित रहेंगे।

समारोप सत्र में प्रो उदय प्रताप सिंह, प्रति कुलाधिपति, महायोगी गोरखनाथ यूनिवर्सिटी गोरखपुर, डॉ जी.एन. सिंह, सलाहकार, मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश, प्रो. संजय सिंह, कुलपति बाबा साहब भीमराव अंबेडकर यूनिवर्सिटी, लखनऊ, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ) अतुल वाजपेयी व कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव लगातार संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा कर रहे हैं।

संस्थापक समारोह

www.livehindustan.com
हिन्दुस्तान
गोरखपुर, मंगलवार, 5 दिसंबर 2023 04

कार्यक्रम : एक नजर

10:16 बजे सुबह मंच पर पहुंचे सीएम योगी और मुख्य अतिथि जनरल वीके सिंह

10:51 बजे सुबह तक मुख्य अतिथि वीके सिंह ने किया उद्घाटन समारोह को संबोधित

11:07 बजे पूर्वाह्न तक चला मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का संबोधन संस्थापक समारोह में

11:10 बजे पूर्वाह्न निकलनी शुरू हुई संस्थापक सप्ताह समारोह की भव्य शोभायात्रा

11:43 बजे पूर्वाह्न तक कतार में अनुशासित तरीके से निकलती रही विभिन्न झांकियां

11:48 बजे पूर्वाह्न स्वर्ण जयंती द्वार से वापस लौटनी शुरू हुई परम्परागत शोभायात्रा

सोमवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक समारोह के एमपी इंटर कॉलेज से निकाली गई शोभायात्रा में मौजूद छात्र- छात्राएं। • हिन्दुस्तान

कथनी-करनी में समन्वय से बनता है जनविश्वास : योगी

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91 वें संस्थापक सप्ताह समारोह का भव्य शुभारंभ

गोरखपुर। वरिष्ठ संवाददाता। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के शुभारंभ अवसर पर छात्रों को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि महाराणा प्रताप, महंत दिग्विजयनाथ, महंत अवेद्यनाथ हो या अन्य ऋषि-मुनि, महापुरुष, सबका एक ही ध्येय रहा, राष्ट्र प्रथम का। उनकी भावना पृथ्वी को माता मानने की और 'तेरा वैभव अमर रहे मां' के अनुरूप कार्य करने की रही।

सीएम योगी ने महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की शोभायात्रा को अनुशासन और रचनात्मकता की झलक देने वाला बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यहां के विद्यार्थी व शिक्षक इस परिषद को देश की अग्रणी शैक्षिक सेवा प्रकल्प बनाते हुए राष्ट्रीय कर्तव्यों का निर्वहन करते रहेंगे। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जनरल वीके सिंह के सैन्य कार्यकाल और उसके बाद राजनीतिक जीवन की सफलता की सराहना करते हुए कहा कि जनविश्वास का प्रतीक वही बनता है जिसके आचार-विचार में समन्वय होता है।

उन्होंने कहा कि जब कथनी और करनी में समन्वय होता है तो जनता का विश्वास प्राप्त होता है। सीएम योगी ने बताया कि सेना के अधिकारियों को लेकर सामान्य धारणा के इतर जनरल वीके सिंह विशुद्ध शाकाहारी और सात्विक हैं और सप्ताह में एक दिन व्रत रहते हैं।

सोमवार को एमपी इंटर कालेज में प्रदर्शनी का उद्घाटन कर अवलोकन करते सीएम योगी आदित्यनाथ व जनरल वीके सिंह।

प्रदर्शनी

संस्थापक समारोह के शुभारंभ कार्यक्रम में स्वागत संबोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो यूपी सिंह ने परिषद की प्रगति यात्रा पर प्रकाश डाला। शुभारंभ अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा की सलामी केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री एवं भारतीय थल सेना के पूर्व अध्यक्ष जनरल (डॉ.) वीके सिंह ने ली। कार्यक्रम के शुरुआत में मुख्य अतिथि जनरल (डॉ.) वीके सिंह ने एमपी इंटर कॉलेज के बलरामपुर हाल में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्हें एनसीसी कैडेट्स की तरफ से गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया।

अवलोकन

उद्घाटन समारोह में हिस्सा लेने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल डॉ. वीके सिंह पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सुबह करीब 9:30 बजे महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज पहुंच गए। जनरल वीके सिंह ने कॉलेज के बलरामपुर हाल में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर अवलोकन किया। उसके बाद एनसीसी कैडेट्स की ओर से उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। इसके बाद वे मुख्यमंत्री और मुख्य अतिथि मंचासीन हुए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह व आभार ज्ञापन एमपी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अरुण सिंह ने किया।

उपस्थिति

संस्थापक समारोह कार्यक्रम के दौरान सांसद रविकिशन शुक्ल, महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, डीडीयू की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल वाजपेयी, गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक विपिन सिंह, महेंद्रपाल सिंह, प्रदीप शुक्ल, वाराणसी से आए संतोष दास उर्फ सतुआ बाबा, कालीबाड़ी के महंत रविंद्रदास, एमपी शिक्षा परिषद के पदाधिकारी और सदस्य, परिषद के शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों, शिक्षकों और विद्यार्थियों की सहभागिता रही।

अनुशासित बच्चे ही बनेंगे मजबूत स्तम्भ : वीके सिंह

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह ने कि बच्चों के भविष्य को तय करने वाला वर्तमान ही किसी संस्था का मापदंड होता है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के प्रबंध और यहां बच्चों के उत्कृष्ट अनुशासन को देखकर उन्हें यकीन है कि ये बच्चे भारत के मजबूत स्तम्भ बनेंगे।

उन्होंने कहा कि विद्यार्थी ही विकसित भारत के कर्णधार हैं। जनरल सिंह ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे भविष्य में आने वाली चुनौतियों से घबराने की बजाय संस्था के आदर्शों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। उन्होंने अपने स्कूली दिनों में मैथिलीशरण की एक प्रेरक कविता को प्रार्थना के रूप में गाए जाने की बात बताते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के कुलगीत की सराहना की। कहा कि यह कुलगीत कुछ कर गुजरने की भावना पैदा करते हुए मार्गदर्शन करता है।

समारोह को संबोधित करते वीके सिंह

09 मिनट के भाषण में शिक्षा का गूढ़ महत्व समझा गए जनरल वीके सिंह

02 घंटे से ज्यादा समय तक कार्यक्रम में मौजूद रहे मुख्य अतिथि वीके सिंह

इस दौरान राजेश मोहन सरकार, प्रमोद चौधरी, अनन्य प्रताप शाही, ज्योति प्रकाश मस्करा, रेवती रमण दास अग्रवाल, प्रमथनाथ मिश्र, राम जन्म सिंह आदि उपस्थित रहे।

संस्थापक समारोह में आज

ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करते सीएम योगी।

पांच दिसंबर को गोरखवाणी प्रतियोगिता-कनिष्ठ वर्ग, एमपी सी.से. स्कूल बेतियाहाता, वरिष्ठ वर्ग, एमपी इंटर कॉलेज (सभागार) में होगी। योगासन प्रतियोगिता-प्रताप आश्रम गोलघर में, चित्रकला प्रतियोगिता-दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज में, शिक्षाप्रद संत वचन प्रतियोगिता-दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज में, कबड्डी प्रतियोगिता बालक वर्ग (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ) महाराणा प्रताप पालिटेक्निक, गोरखनाथ में एवं बालिका वर्ग (कनिष्ठ एवं वरिष्ठ) एमपी बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइन्स में होगी।

झांकियों की झलक

शोभयात्रा के दौरान सीएम योगी की वेशभूषा में निकाली गई झांकी।

दिग्विजयनाथ इंटरमीडिएट कॉलेज चौक बाजार की छात्राओं की झांकी।

संस्थापक समारोह के मौके पर इसरो की झांकी आकर्षण का केंद्र रही।

छात्र-छात्राओं ने अपनी झांकी के जरिए पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश दिया।

एमपी महिला पीजी कॉलेज रमदतपुर की छात्राओं की झांकी भी सराहनीय रही।

सीएम संग फोटो

सोमवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक समारोह में एनसीसी कैडेट के साथ सीएम योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह। इसके पहले एनसीसी कैडेट की ओर से दोनों को गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया। • हिन्दुस्तान

शंखध्वनि के साथ निकली भव्य शोभायात्रा

- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह का शुभारंभ
- परंपरागत शोभायात्रा में अनुशासन और समन्वय की दिखी बेजोड़ झलक

गोरखपुर, निज संवाददाता। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह की भव्य शोभायात्रा सोमवार को सीएम योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय राज्यमंत्री जनरल वीके सिंह की मौजूदगी में निकली। शंखध्वनि के साथ शोभायात्रा का शुभारंभ हुआ। भारत माता के जयकारे के बीच परंपरागत शोभायात्रा में अनुशासन व समन्वय की बेजोड़ झलक दिखी। करीब 11 हजार विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में तरह-तरह की आकर्षक झांकियों के साथ भव्य शोभायात्रा निकालकर सभी अतिथियों का दिल जीत लिया।

मुख्य अतिथि से औपचारिक अनुमति मिलने के बाद शोभायात्रा का शंखनाद हुआ। शोभायात्रा आगे बढ़ी तो मुख्य अतिथि ने उसकी सलामी ली। एक के बाद एक स्कूल व कॉलेजों के बच्चे मार्चपास्ट करते हुए आगे बढ़ते रहे और केंद्रीय मंत्री अनवरत उनकी सलामी लेते रहे। करीब आधे घंटे तक कतार में शोभायात्रा निकली। दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज के मुख्य द्वार से निकली शोभायात्रा गणेश चौराहा, कचहरी चौक होते हुए जिला परिषद रोड स्थित आयोजन स्थल के शताब्दी द्वार से वापस लौटी।

संस्थापक समारोह के दौरान शोभायात्रा की सलामी लेते जनरल वीके सिंह।

शोभायात्रा का आकर्षण रहीं तरह-तरह की झांकियां

समसामयिक विषयों और नाथ पंथ की विशेषताओं पर झांकियां शोभा यात्रा का आकर्षण रहीं। अखंड ज्योति से झांकियों की प्रस्तुति का सिलसिला शुरू हुआ। श्रीराम मंदिर के प्रतिरूप, श्रीअन्न, गोसेवा, मंगल यान, जल संरक्षण, बेटी बचाओ, तरह-तरह की मिसाइलों से यह आगे बढ़ा। शोभायात्रा के जरिए विद्यार्थियों ने अयोध्या के श्रीराम मंदिर में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शहरवासियों को आमंत्रित किया। पर्यावरण प्रदूषण, इंसेफलाइटिस, आंतरिक सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, डिजिटल इंडिया, कौशल विकास, स्टार्टप इंडिया आदि की विभिन्न झांकियां भी प्रमुख रहीं। महाराणा प्रताप और योगी आदित्यनाथ का रूप धरे बच्चों ने सभी का ध्यान आकर्षित किया।

समाचार दर्पण

नाम के जज्बे से काम करने पर मिलती है सफलता-जनरल वीके सिंह

कार्यालय प्रतिनिधि

गोरखपुर,4दिसम्बर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री एवं भारतीय थल सेना के पूर्व अध्यक्ष जनरल (डॉ.) वीके सिंह ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि हम कोई भी काम जब अपने नाम के लिए करते हैं तो नाम के जज्बे से सफलता जरूर मिलती है। नाम की चाह खुद में एक प्रेरणा है।

जनरल सिंह ने महाराणा प्रताप के व्यक्तित्व का स्मरण कराते हुए कहा कि महाराणा प्रताप का नाम याद करते ही यह प्रेरणा मिलती है कि हमें कभी अपने कर्तव्य पथ से पीछे नहीं हटना है और किसी भी बाधा से घबराना नहीं है। किसी भी व्यक्ति में यदि महाराणा प्रताप जैसे ये दो गुण हो तो उसे सफलता की ऊंचाई छूने से कोई नहीं रोक सकता। उन्होंने अनुशासित, विचार समृद्ध और लक्ष्य के प्रति जुनून रखने वाले युवा आज की आवश्यकता हैं। देश को ऐसे ही युवाओं की आवश्यकता है और उन्हें पूर्ण विश्वास है कि महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की संस्थाओं में अध्ययनरत बच्चे व युवा इसी मानक पर आगे बढ़ रहे हैं। जनरल सिंह ने कि बच्चों के भविष्य को तय करने वाला वर्तमान ही किसी संस्था का मापदंड होता है। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के प्रबंध और यहां बच्चों के उत्कृष्ट अनुशासन को देखकर उन्हें यकीन है कि ये बच्चे भारत के मजबूत स्तम्भ बनेंगे। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी ही विकसित भारत के कर्णधार हैं। जनरल सिंह ने विद्यार्थियों का आह्वान किया कि वे भविष्य में आने वाली

चुनौतियों से घबराने की बजाय संस्था के आदर्शों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ें। उन्होंने अपने स्कूली दिनों में मैथिलीशरण की एक प्रेरक कविता को प्रार्थना के रूप में गाए जाने की बात बताते हुए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के कुलगीत की सराहना की। कहा कि यह कुलगीत कुछ कर गुजरने की भावना पैदा करते हुए मार्गदर्शन करता है। संस्थापक समारोह के शुभारंभ कार्यक्रम में स्वागत संबोधन में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो यूपी सिंह ने परिषद की प्रगति यात्रा पर प्रकाश डाला। शुभारंभ अवसर पर निकाली गई शोभा यात्रा की सलामी केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग राज्यमंत्री एवं भारतीय थल सेना के पूर्व अध्यक्ष जनरल (डॉ.) वीके सिंह ने ली। कार्यक्रम के शुरुआत में मुख्य अतिथि जनरल (डॉ.) वीके सिंह ने एमपी इंटर कॉलेज के बलरामपुर हाल में लगी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्हें एनसीसी कैडेट्स की तरफ से गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया।

कार्यक्रम में सांसद रविकिशन शुक्ल, महापौर डॉ मंगलेश श्रीवास्तव, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल वाजपेयी, गोरखनाथ मंदिर के प्रधान पुजारी योगी कमलनाथ, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष एवं एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, विधायक विपिन सिंह, महेंद्रपाल सिंह, वाराणसी से आए महामंडलेश्वर संतोष दास उर्फ सतुआ बाबा, कालीबाड़ी के महंत रविंद्रदास, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के पदाधिकारी व सदस्य, परिषद से जुड़ी शिक्षण संस्थानों के प्रमुखों, शिक्षकों व विद्यार्थियों की सहभागिता रही। संचालन डॉ. श्रीभगवान सिंह व आभार ज्ञापन एमपी इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य अरुण सिंह ने किया।

हिन्दुस्तान

भरोसा नए हिन्दुस्तान का

देश को कमजोर करने वाले जाति के नाम पर बांट रहे : योगी

91वें संस्थापक सप्ताह समारोह के शुभारंभ कार्यक्रम को सीएम ने किया संबोधित

देश में बना खेलों का शानदार माहौल : योगी

जुनूनी युवाओं की देश को जरूरत: वीके सिंह

परिश्रम और पुरुषार्थ का कोई विकल्प नहीं

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि सफलता हासिल करने के लिए परिश्रम और पुरुषार्थ का कोई विकल्प नहीं होता। उद्देश्य के अनुरूप प्रतिबद्ध होकर समय सीमा में कार्य करते हुए आगे बढ़ने पर लक्ष्य प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य रखते हुए परिश्रम करेंगे तो सफलता की नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेंगे।

मुख्यमंत्री योगी, रविवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने कहा कि शिक्षा प्राप्त करना केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं है। पुस्तकीय ज्ञान से सर्टिफिकेट, डिप्लोमा या डिग्री प्राप्त की जा सकती है। जीवन में विजेता बनने के लिए शिक्षित होने के साथ ज्ञानवान होना महत्वपूर्ण है। ज्ञान, शिक्षण संस्थानों में संवाद के वातावरण और अनुभव से अर्जित होता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जीवन में कृतज्ञता का भाव सदैव बने रहना चाहिए। कृतज्ञता का भाव सकारात्मकता से आगे बढ़ने के लिए

समारोह को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी। संवाद

एमपी शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन अवसर पर बोले योगी

प्रेरित करता है। उन्होंने ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ के अपने गुरु के प्रति प्रकट किए गए भाव के क्रियात्मक पक्ष का स्मरण किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि महंत दिग्विजयनाथ के गुरु को अंग्रेजी सरकार ने आजादी के आंदोलन में भाग लेने के कारण शिक्षक की नौकरी से निकाल दिया। तब गुरु के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने लिए महंत दिग्विजयनाथ ने एक स्कूल खोला और गुरु को प्रधानाचार्य बना दिया। यही स्कूल महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की आधारशिला बनी।

एमपी शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन पर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर मौजूद सीएम योगी, राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण सिंह व अन्य। संवाद

प्रतिभा को मिला सम्मान, पुरस्कृत हुए 800 होनहार

मुख्यमंत्री योगी, राज्यसभा के उप सभापति और विधानसभा अध्यक्ष की मौजूदगी में दिया गया पुरस्कार

संवाद न्यूज एजेंसी

गोरखपुर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह का समापन रविवार को हुआ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण और विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना की मौजूदगी में 800 होनहारों को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान बच्चों ने हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में भाषण देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह की शुरुआत प्रो. यूपी सिंह ने स्वागत भाषण से किया। इसके बाद मुख्य वक्ता विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना, मुख्य अतिथि राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण और समारोह की अध्यक्षता कर रहे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के संबोधन के बाद जगदंबा मल्ल द्वारा लिखी पुस्तक ''पूर्वोत्तर का प्रहरी नगालैंड'' का अतिथियों ने विमोचन किया। इसके बाद पुरस्कार वितरण का सिलसिला शुरू हुआ।

सबसे पहले महंत दिग्विजयनाथ राज्य स्तरीय बास्केटबॉल और महंत अवेद्यनाथ वॉलीबॉल प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त टीमों के कप्तान व कोच को क्रमश: 75,000, 50,000 व 30,000 रुपये का नकद पुरस्कार व ट्रॉफी देकर सम्मानित किया गया।

इसके बाद श्रेष्ठतम संस्था का गुरु श्री गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज को, श्रेष्ठतम कर्मचारी का योगिराज बाबा ब्रह्मनाथ स्वर्ण पदक इसी कॉलेज के लक्ष्मण थापा को, श्रेष्ठतम परिचारक का ब्रह्मलीन बाबा गोपाल नाथ स्वर्ण पदक एमपी पीजी कॉलेज जंगल धूसड़ के विश्वनाथ को दिया गया।

इसी तरह श्रेष्ठतम शिक्षक का योगिराज बाबा गंभीर नाथ स्वर्ण पदक एमपी इंटर कॉलेज के विष्णु कुमार सिंह को, पीजी में श्रेष्ठतम

एमपी इंटर कॉलेज में आयोजित पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में जगदंबा मल्ल की पुस्तक 'पूर्वोत्तर के प्रहरी नगालैंड' का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यसभा के उप सभापति हरिवंश नारायण सिंह, उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना व अन्य। संवाद

एमपी इंटर कॉलेज में आयोजित पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में विजेता प्रतिभागी। संवाद

एनएस चिल्ड्रेन एकेडमी के विद्यार्थी हुए पुरस्कृत

सम्मारोह के दौरान एनएस चिल्ड्रेन एकेडमी, सीनियर सेकेंडरी स्कूल न्यू कॉलोनी माधोपुर के कक्षा 12 की फरहीन इकबाल खान को अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार मिला। इसी क्रम में विद्यालय की कक्षा पांच की छात्रा श्रद्धा को चित्रकला प्रतियोगिता में द्वितीय, मोहम्मद सारिब खान और नवनीत सिंह को कंप्यूटर प्रश्न मंच प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर मुख्यमंत्री ने पुरस्कृत किया। विद्यालय के प्रबंधक सत्यदेव सिंह व प्रधानाचार्या शशिकला सिंह ने विद्यार्थियों व अभिभावकों को बधाई दी।

विद्यार्थी का ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज के एमए द्वितीय वर्ष के छात्र राहुल कुमार को, स्नातक कक्षाओं में श्रेष्ठतम विद्यार्थी का ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के बीएससी बायोटेक्नोलॉजी के छात्र शिवम पांडेय को, माध्यमिक वर्ग के श्रेष्ठतम विद्यार्थी का महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक एमपी इंटर कॉलेज के कक्षा 12 के छात्र अंजल कुमार यादव को दिया गया।

शोभा यात्रा के श्रेष्ठ पथ संचलन का दर्शन धींगरा स्मृति पुरस्कार महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को दिया गया। एनसीसी के सर्वश्रेष्ठ पथ संचलन का स्व. गुरु प्रसाद सरकार स्मृति पुरस्कार महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइंस को मिला।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के उद्घाटन अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को प्रथम, महायोगी गोरखनाथ कृषि विज्ञान केंद्र चौक माफी पीपीगंज को दूसरा और दिग्विजयनाथ पीजी कॉलेज सिविल लाइंस को तीसरा पुरस्कार दिया गया।

इस अवसर पर गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव, योगी कमलनाथ, कुशीनगर के सांसद विजय दुबे, विधायक श्रीराम चौहान, राजेश त्रिपाठी, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह आदि मौजूद रहे।

12 स्मृति पुरस्कार भी दिए गए

समारोह में 12 स्मृति पुरस्कार भी दिए गए। महाराणा भगवत सिंह स्मृति पुरस्कार गुरु श्रीगोरखनाथ स्कूल ऑफ नर्सिंग के एएनएम अंतिम वर्ष की छात्रा तनु चौहान को, डॉ. हरिप्रसाद शाही स्मृति पुरस्कार गुरु श्रीगोरखनाथ स्कूल ऑफ नर्सिंग के जीएनएम अंतिम वर्ष की छात्रा प्रीति गुप्ता को, डॉ. तेज प्रताप शाही स्मृति पुरस्कार गुरु श्रीगोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग के बीएससी अंतिम वर्ष की छात्र करिश्मा रस्तोगी को, लक्ष्मीशंकर वर्मा स्मृति पुरस्कार महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक के छात्र मुकेश कुमार यादव को, चौधरी विनोद कुमार स्मृति पुरस्कार महाराणा प्रताप सीनियर सेकेंड्री स्कूल बेतियाहाता के छात्र अमित साहनी को, चंडी प्रसाद सिंह स्मृति पुरस्कार महाराणा प्रताप इंटर कॉलेज के छात्र अभिषेक को, राम नरेश स्मृति पुरस्कार पटेल स्मारक इंटर कॉलेज भटहट की छात्रा खुशी मौर्या को, सुशीला देवी स्मृति पुरस्कार महाराणा प्रताप बालिका इंटर कॉलेज सिविल लाइंस की छात्रा अंशिका कुमारी को, मां गंगदेई देवी स्मृति पुरस्कार माध्यमिक वर्ग में सरस्वती शिशु मंदिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सुभाषचन्द्र बोस नगर के छात्र युगांत मिश्रा और वरिष्ठ वर्ग में दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिविल लाइंस के छात्र आकाश कुमार को, चौधरी रामलखन स्मृति पुरस्कार दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिविल लाइंस की छात्रा पल्लवी सिंह, चौधरी कृष्णा स्मृति पुरस्कार दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय सिविल लाइंस की छात्रा रागिनी सिंह को दिया गया। पंडित बब्बन मिश्र स्मृति पुरस्कार श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोरखनाथ मंदिर के विद्यार्थी आदित्य पांडेय को मिला।

4 UTTAR PRADESH THE TIMES OF INDIA MONDAY, DECEMBER 11, 2023

No alternative to hard work & dedication, says CM Yogi

Mahana Criticises Use Of Digital Devices, Lauds CM's Efforts

Arjumand Bano | TNN

Gorakhpur: Education is not just about acquiring theoretical knowledge but it is important to be knowledgeable for success in life, said Chief Minister Yogi Adityanath while presiding over the concluding ceremony of the week-long celebrations of the 91st Foundation Day of Maharana Pratap Shiksha Parishad on Sunday in Gorakhpur

Deputy chairman of the Rajya Sabha Harivansh Narayan and speaker of UP Legislative Assembly Satish Mahana were present as the chief guests on the occasion.

Addressing the event, the CM said that there was no alternative to hard work and dedication. He inspired the students by quoting an excerpt from the work of the great poet Ramdhari Singh Dinkar, '*Vasudha ka Neta Koun Hua, Bhukhand Vijeta koun hua, Atulit Yash Kreta koun hua, Nav Dharam Praneta koun hua, jisne na kabhi aram kiya, vighnon mein reh kar naam kiya.*" He urged the students to persevere even in adverse circumstances and work hard to achieve new heights of success.

Yogi said that in 1932, when the visionary saint Brahmaleen Mahant Digvijaynath Ji Maharaj established the Maharana Pratap Education Council, his resolution was focused on how citizens should come together after gaining freedom from slavery. Upholding that resolution, today, this parishad is advancing education and service projects through a dozen institutions continuously. CM Yogi emphasized that there should always be a sense of gratitude in life. The feeling of gratitude motivates progress through positivity. To illustrate and clarify this point, he recalled the practical aspect of the emotion expressed towards his mentor Brahmaleen Mahant Digvijaynath.

CM Yogi mentioned that during the freedom struggle, the British government dismissed a teacher from job after which Mahant Digvijaynath Ji opened a school and appointed the same teacher as the principal there. This school laid the foundation for the Maharana Pratap Education Council.

Dy chairman of RS Harivansh emphasized on the role of education in raising awareness for poverty alleviation. Quoting Narayana Murthy, he underscored how education transforms lives and said that USA's leadership is rooted in its educational institutions.

Praising CM Yogi Adityanath's efforts to curb cheating, appointment of teachers, and enhancing student attendance in UP, Harivansh highlighted the significance of Guru Gorakhnath's abode, Gorakhpeeth, as a centre for awareness, education, and service. He lauded the ongoing contributions of MPSP in shaping an educational system focused on values.

Satish Mahana criticized the use of digital devices for education and argued that values such as compassion, dedication, integrity, humility, and courage cannot be instilled through digital devices. Mahana emphasized the essential role of institutions like the Maharana Pratap Education Council in providing culturally grounded education. Reflecting on 75 years of independence, he highlighted that life's identity goes beyond basic necessities, emphasizing values, personality, service, intellect, and dedication.

Commending CM's leadership, Mahana appreciated initiatives to improve law and order, enhancing education system, and foster collaboration between educational institutions and industry. He encouraged students to maintain consistency in thoughts, actions, and words while cultivating positive influences.

TOI

Dy chairman Rajya Sabha Harivansh Narayan and UP Assembly speaker Satish Mahana and CM Yogi Adityanath in Gorakhpur on Sunday

Never adopt shortest route to reach your goals: CM to students

▶Continued from P 1

Establishment of a degree college in Bansgaon area was a dream. However, under the guidance of Justice KD Shahi, Babu Chaturbhuj Singh took the responsibility of establishing the college," the CM said.

The Chief Minister Yogi emphasized that students should have predefined goals and it is the responsibility of educational institutions and teachers.

Exhorting students, he said, "Never adopt the shortest route to reach your goals in life. The shortcut route will become the cause of weakness and will not provide stability in life."

Yogi also inaugurated a memorial of Jawaharlal Nehru Postgraduate College and felicitated meritorious students

TOI

CM Yogi garlanding the statue of former Bansgaon block head Babu Chaturbhuj Singh on Sunday

CM bats for unbiased resolution of public issues

Gorakhpur: During Janata Darshan programme held at Gorakhnath temple here on Sunday, Chief Minister Yogi Adityanath directed officials concerned to address people's grievances with urgency, ensuring a swift and contented resolution.

Responding to a woman seeking financial assistance for medical treatment, the CM advised her to obtain a treatment estimate from the doctor, assuring that the government would cover the expense.

During the programme, the CM listened to grievances of around 300 people and handed over their prayer letters to concerned officials. He instructed the officials to adopt a compassionate approach to address public grievances and stressed on the need for unbiased and impartial resolution of each issue. Yogi also directed authorities to take stringent legal action against any encroachment or bullying regarding land possession. TNN

संस्कार और व्यक्तित्व से जीवन की पहचान : महाना

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि पहले शिक्षा के दो ही ध्येय होते थे, लड़के के लिए नौकरी और लड़की के लिए अच्छी शादी। एक लंबे समय तक रोटी, कपड़ा और मकान ही जीवन के तीन निशान बताए गए। वास्तव में यह तीन निशान आवश्यकता हैं, जीवन की पहचान नहीं हैं। जीवन की पहचान संस्कार, व्यक्तित्व, सेवा, मेधा और समर्पण से होती है। उन्होंने कहा कि सेवा और संस्कारयुक्त शिक्षा ही भारत की पहचान रही है और यही दुनिया को दिशा देती रही है।

वह रविवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आज एडवांस टेक्नोलाजी और डिजिटलाइजेशन के दौर में एबीसीडी से लेकर हायर एजुकेशन तक की पढ़ाई बच्चे लैपटाप या स्मार्टफोन जैसे डिवाइस से कर ले रहे हैं। डिवाइस की पढ़ाई से संस्कार युक्त शिक्षा हासिल नहीं की जा सकती है। डिवाइस से सहचर्य, समर्पण, शीलता, विनम्रता और साहस जैसे गुणों का विकास नहीं हो सकता। अगर इन गुणों के साथ संस्कारयुक्त शिक्षा को आगे बढ़ाना है तो महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद जैसी संस्थाओं का संरक्षण अति आवश्यक है।

विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि हमारी सुनने की क्षमता खत्म होती जा रही है। हम अच्छी बात सुनेंगे तो हमारे मन में विचार भी वैसे ही आएंगे। जैसा सुनेंगे वैसा सोचेंगे और वैसा ही काम करेंगे। काम के अनुसार हमारा स्वभाव बनेगा। स्वभाव से चरित्र बनेगा। इसलिए दिमाग को नियंत्रित करना जरूरी है। हमारे उद्देश्य स्पष्ट और कार्य अनुशासनपूर्ण होने चाहिए। उन्होंने कहा कि ऊंचाइयों पर पहुंचना तो आसान होता है पर उस पर बने रहने के लिए ज्यादा परिश्रम करना पड़ता है।

वर्तमान में जीने, समय प्रबंधन, सेवा, दूसरे के सम्मान के साथ विद्यार्थियों को मन, कर्म व वचन में एकरूपता लाने की नसीहत भी दी। उन्होंने कहा कि सीएम योगी ने अपनी शीलता व साहस से उत्तर प्रदेश के कानून व्यवस्था को मजबूत किया है। इसलिए इनकी प्रसिद्धि विश्व भर में है।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना • जागरण

- विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना डिवाइस से हासिल नहीं की जा सकती संस्कारयुक्त शिक्षा
- महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन समारोह में बोले

संस्थापक सप्ताह समारोह : विजेताओं की प्रतिभा को मिला सम्मान, हौसले को मिली उड़ान

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का 91वां संस्थापक सप्ताह समारोह रविवार को सम्पन्न हुआ। अंतिम दिन महाराणा प्रताप इंटर कालेज में आयोजित मुख्य महोत्सव व पुरस्कार वितरण समारोह में उन विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया, जिन्होंने विविध प्रतियोगिताओं में अपनी श्रेष्ठता साबित की थी और विजेता बने थे। जीत तो उन्हें पहले ही मिल चुकी थी, लेकिन जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण और विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के हाथों पुरस्कार मिला तो चेहरे की खुशी यह बयां कर रही थी कि मानो हौसले के उड़ान मिल गई हो। समारोह के दौरान करीब 800 विजेताओं को नकद पुरस्कार, प्रमाण-पत्र और शील्ड प्रदान किया गया।

शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो. यूपी सिंह के स्वागत संबोधन और मुख्यमंत्री सहित अतिथियों के उद्बोधन के बाद पुरस्कार वितरण की शुरुआत स्वर्ण पदकों से हुई। नामित संस्थाओं व व्यक्तियों को बारी-बारी से गुरु गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक, योगिराज बाबा ब्रह्मनाथ स्वर्ण पदक, बाबा गोपालनाथ स्वर्ण पदक, योगिराज बाबा गंभीरनाथ स्वर्ण पदक, महंत दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक, ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक और महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक दिया गया। इसी क्रम में महंत दिग्विजयनाथ राज्य स्तरीय प्राइजमनी बास्केटबाल प्रतियोगिता और महंत अवेद्यनाथ राज्य स्तरीय प्राइजमनी वालीबाल प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टीमों के कप्तान या कोच को ट्राफी, नकद पुरस्कार और प्रमाण-पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। पहला स्थान पाने वाली टीम को 75 हजार, दूसरा स्थान पाने वाली टीम को 50 हजार और तीसरा स्थान पाने वाली टीम को 30 हजार रुपये नकद दिए गए।

उसके बाद विविध प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान पाने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत करने का सिलसिला शुरू हुआ। समारोह के संचालक प्रो. श्रीभगवान सिंह एक-एक कर नाम पुकारते गए और विजेता मंच पर आकर अतिथियों के हाथों पुरस्कार पाते रहे। पहले स्मृति पुरस्कारों का वितरण हुआ और बाद प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार दिया गया।

इस दौरान उपस्थित जनसमूह ने ताली बजाकर विजेताओं की हौसलाफजाई की। समापन कार्यक्रम के मंच पर योगी कमलनाथ, योगी मिथिलेश नाथ, डा. राजेंद्र भारती, गोवि की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरि बहादुर श्रीवास्तव, गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी, चौधरी प्रमोद कुमार, सांसद विजय दुबे, विधायक विपिन सिंह, राजेश त्रिपाठी व श्रीराम चौहान, एमएलसी डा. धर्मेंद्र सिंह, प्रमथ नाथ मिश्र, अनन्य प्रताप शाही आदि मौजूद रहे। आभार ज्ञापन डीवीएन पीजी कालेज के प्राचार्य प्रो. ओमप्रकाश सिंह ने किया।

'पूर्वोत्तर के प्रहरी : नागालैंड' पुस्तक का हुआ विमोचनः संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम में जगदंबा प्रसाद मल्ल की पुस्तक 'पूर्वोत्तर के प्रहरीःनागालैंड' का विमोचन भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण और विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना के हाथों हुआ। इस पुस्तक में लेखक ने नागालैंड में अपने प्रवास के अनुभव को शब्दों में पिरोया है।

बच्चों का जोशीला भाषण सुन मुग्ध हुए अतिथिः कार्यक्रम में उन विजेता बच्चों को मंच से अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर मिला, जिन्होंने भाषण या प्रस्तुति से जुड़ी किसी प्रतियोगिता में पहला स्थान प्राप्त किया है। संस्कृत भाषण प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग की विजेता साक्षी यादव के वसुधैव कुटुंबकम विषय पर प्रभावी संबोधन से इसकी शुरुआत हुई।

हिंदी भाषण प्रतियोगिता की विजेता अनुष्का सिंह, शुभम पांडेय व प्रियंका गुप्ता से यह सिलसिला आगे बढ़ा। अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता के विजेता एंजल द्विवेदी अनुशासन, फरहीन इकबाल खान ने विश्व बंधुत्व में सनातन धर्म की भूमिका व आंचल दुबे ने जी-20 समिट पर प्रस्तुति दी। समृद्धि ने भजन सुनाया तो भगवद्गीता प्रतियोगिता के विजेता और गोरखवाणी प्रतियोगिता की विजेता वैभवी अग्रहरी की प्रस्तुति शानदार रही। बच्चों का जोशीला भाषण सुनकर मुख्यमंत्री सहित मंचासीन अतिथि मुग्ध हो गए।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में विजेता को पुरस्कृत करते राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह साथ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना। इस दौरान मंच पर बातचीत करते भी नजर आए • जागरण

- संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम में पुरस्कृत हुए प्रतियोगिताओं के विजेता विद्यार्थी
- मुख्यमंत्री योगी, राज्यसभा के उपसभापति व विधानसभा अध्यक्ष के हाथों मिला पुरस्कार

दिनकर की कविता सुना योगी ने विद्यार्थियों में भरा जोश

विद्यार्थियों को सफलता का मूल मंत्र बताते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि परिश्रम और पुरुषार्थ का कोई विकल्प नहीं होता। उद्देश्य के अनुरूप प्रतिबद्ध होकर समय सीमा में कार्य करते हुए आगे बढ़ने पर लक्ष्य प्राप्त करने से कोई रोक नहीं सकता। कवि रामधारी सिंह दिनकर की रचना 'वसुधा का नेता कौन हुआ, भूखण्ड-विजेता कौन हुआ, अतुलित यश क्रेता कौन हुआ, नव-धर्म प्रणेता कौन हुआ, जिसने न कभी आराम किया, विघ्नों में रहकर नाम किया' सुनाकर मुख्यमंत्री ने विपरीत परिस्थितियों में धैर्य के साथ परिश्रम करने के लिए जोश भरा और कहा कि ऐसा करके ही सफलता की नई ऊंचाई को प्राप्त किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा कि ज्ञान शिक्षण संस्थानों में संवाद के वातावरण व अनुभव से प्राप्त होता है।

स्वर्ण पदक व उनके विजेता

- गुरु गोरक्षनाथ स्वर्ण पदक (सर्वश्रेष्ठ संस्था) : डीवीएन पीजी कालेज
- बाबा ब्रह्मनाथ स्वर्ण पदक (श्रेष्ठतम कर्मचारी) : लक्ष्मण थापा (डीवीएन पीजी कालेज)
- बाबा गोपालनाथ स्वर्ण पदक (श्रेष्ठतम परिचारक) : विश्वनाथ (महाराणा प्रताप पीजी कालेज जंगल धूसड़)
- योगीराज बाबा गंभीरनाथ स्वर्ण पदक (श्रेष्ठतम शिक्षक) : विष्णु कुमार सिंह (महाराणा प्रताप इंटर कालेज)
- महंत दिग्विजयनाथ स्वर्ण पदक (स्नातकोत्तर का श्रेष्ठतम विद्यार्थी) : राहुल कुमार (डीवीएन पीजी कालेज)
- महंत अवेद्यनाथ स्वर्ण पदक (स्नातक का श्रेष्ठतम विद्यार्थी) : शिवम पांडेय (गोरखनाथ विश्वविद्यालय)
- महाराणा मेवाड़ स्वर्ण पदक (माध्यमिक वर्ग में श्रेष्ठतम विद्यार्थी) : अंजल कुमार यादव (महाराणा प्रताप इंटर कालेज)

शोभायात्रा के श्रेष्ठ पथ संचलन व प्रदर्शनी में

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय रहा अव्वल

गोरखपुर(एसएनबी)। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक-सप्ताह समारोह-2023 के अन्तर्गत शुक्रवार को हिन्दी भाषण प्रतियोगिता, बास्केटबॉल प्रतियोगिता, वॉलीबॉल प्रतियोगिता, संगीत गायन प्रतियोगिता तथा श्रीरामचरितमानस प्रतियोगिता का आयोजन शिक्षा परिषद् के विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में सम्पन्न हुई। उद्घाटन अवसर पर शोभायात्रा के दौरान श्रेष्ठ पथ संचलन एवं प्रदर्शनी दोनों में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

हिन्दी भाषण प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग के अन्तर्गत दिग्विजयनाथ पीजी कालेज सिविल लाइन्स, की प्रियंका गुप्ता को प्रथम, बापू पीजी कालेज पीपीगंज की अंकिता द्विवेदी को द्वितीय तथा दीदउ गोविवि. के सौरभ राम त्रिपाठी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। माध्यमिक तथा कनिष्ठ वर्ग के प्रतियोगिता का परिणाम बाद में घोषित किया जायेगा।

संगीत गायन प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग में जीएन नेशनल पब्लिक स्कूल गोरखपुर के ओम सिंह को प्रथम, महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज सिविल लाइन्स, गोरखपुर की आस्था गुप्ता को द्वितीय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सुभाष नगर के श्रेयांश तेजस्वी को तृतीय स्थान प्राप्त हुआ। संचालन समिति ने कुछ अन्य प्रतियोगिताओं का परिणाम भी जारी किया। बास्केटबॉल बालिका वर्ग के अन्तर्गत महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज सिविल लाइन्स गोरखपुर विजेता तथा महाराणा प्रताप महिला पीजी कालेज रामदत्तपुर की टीम उपविजेता रही।

वहीं बालीवाल प्रतियोगिता बालक वर्ग के अन्तर्गत महाराणा प्रताप इण्टर कालेज सिविल लाइन्स, गोरखपुर की टीम विजेता रही जबकि दिग्विजयनाथ पीजी कालेज की टीम को उपविजेता घोषित किया गया। श्रीमद्भगवद्गीता प्रतियोगिता में श्री गोरक्षनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोरखपुर के कक्षा 10 के छात्र प्रशान्त मणि त्रिपाठी प्रथम रहे। संस्कृत भाषण प्रतियोगिता में कनिष्ठ वर्ग के अन्तर्गत गुरू गोरखनाथ संस्कृत विद्यापीठ भरोहिया, पीपीगंज गोरखपुर की साक्षी यादव ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। माध्यमिक वर्ग अन्तर्गत श्रीगोरखनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, गोरखपुर के अनुभव पाठक ने प्रथम तथा वरिष्ठ वर्ग में श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अनुराग मिश्र प्रथम रहे। संचालन समिति ने गोरखवाणी प्रतियोगिता का भी परिणाम घोषित किया जिसके अन्तर्गत कनिष्ठ वर्ग में श्रीगोरखनाथ संस्कृत उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के कक्षा 10 के छात्र आदित्य पाण्डेय ने प्रथम स्थान तथा वरिष्ठ वर्ग में महाराणा प्रताप बालिका इण्टर कालेज सिविल लाइन्स, गोरखपुर के कक्षा 12 की छात्रा वैष्णवी अग्रहरी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद का संस्थापक सप्ताह समारोह

विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम भी किये गये घोषित

हिंदी भाषण में प्रियंका व गायन में ओम प्रथम

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के संस्थापक सप्ताह समारोह के पांचवें दिन शुक्रवार को हिंदी भाषण प्रतियोगिता, गायन प्रतियोगिता और श्रीरामचरित मानस प्रतियोगिता आयोजित हुई। खेल प्रतियोगिताओं में बास्केटबाल व वालीबाल प्रतियोगिता हुई। सभी प्रतियोगिताओं में विभिन्न स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भागीदारी की।

हिंदी भाषण प्रतियोगिता के वरिष्ठ वर्ग में प्रियंका गुप्ता को पहला, अंकिता द्विवेदी को दूसरा और सौरभ राम त्रिपाठी को तीसरा स्थान मिला। माध्यमिक व कनिष्ठ वर्ग की प्रतियोगिता का परिणाम बाद में घोषित किए जाने की घोषणा हुई। संगीत गायन प्रतियोगिता में ओम सिंह पहले, आस्था गुप्ता दूसरे और श्रेयांश तेजस्वी तीसरे स्थान पर रहे।

बालीवाल प्रतियोगिता बालक वर्ग महाराणा प्रताप इंटर कालेज ने जीती, जबकि बास्केट बाल प्रतियोगिता में महाराणा प्रताप बालिका इंटर कालेज की छात्राओं ने बाजी मारी। संचालन समिति ने आप कुछ अन्य प्रतियोगिताओं का भी परिणाम भी शुक्रवार को जारी किया। श्रीमद्भागवत प्रतियोगिता में प्रशांत मणि त्रिपाठी पहले स्थान पर रहे। संस्कृत भाषण प्रतियोगिता के कनिष्ठ वर्ग की विजेता साक्षी यादव, माध्यमिक वर्ग के विजेता अनुभव पाठक और वरिष्ठ वर्ग के विजेता अनुराग मिश्र रहे। गोरखवाणी प्रतियोगिता कनिष्ठ वर्ग में आदित्य पांडेय और वरिष्ठ वर्ग में वैष्णवी अग्रहरी प्रथम स्थान स्थान पर रहीं। शोभायात्रा में श्रेष्ठ पथ संचलन के लिए दिए जाने वाले दर्शन धींगरा स्मृति पुरस्कार के लिए पहले स्थान पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय को चुना गया। महाराणा प्रताप कन्या इंटर कालेज रामदत्तपुर दूसरे और गुरु गोरखनाथ विद्यापीठ भरोहिया तीसरे स्थान पर रहे। एनसीसी के सर्वश्रेष्ठ पथ संचलन के लिए महाराणा प्रताप बालिका इंटर कालेज को चुना गया। सभी प्रतियोगिताओं का परिणाममहाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की वेबसाइट www.mpspgkp.in पर देखे जा सकता है।

गायन प्रतियोगिता के दौरान अपनी प्रस्तुति देती छात्रा ● जागरण

आज आयोजित होंगी ये प्रतियोगिताएं

- **सुबह 10:00 बजे** : अंग्रेजी भाषण प्रतियोगिता कनिष्ठ वर्ग दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय गोरखपुर में, माध्यमिक वर्ग प्रतियोगिता दिग्विजयनाथ एलटी प्रशिक्षण महाविद्यालय में और वरिष्ठ वर्ग प्रतियोगिता महाराणा प्रताप बालिका इंटर कालेज में।
- **सुबह 11:00 बजे** : उदीयमान कवि गोष्ठी प्रतियोगिता माध्यमिक व वरिष्ठ वर्ग दिग्विजयनाथ पीजी कालेज में।

शिक्षा ही गरीबी को दूर करने का एकमात्र जरिया : हरिवंश

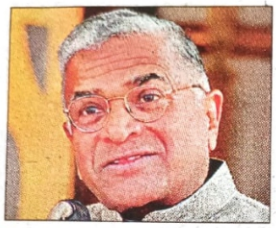

गोरखपुर। राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह ने कहा कि शिक्षा ही गरीबी को दूर करने का एकमात्र जरिया है। पहले किसी समृद्ध परिवार में पैदा होने वाला ही समृद्ध होता था, लेकिन 21वीं सदी में कोई भी व्यक्ति शिक्षा से समृद्ध बन सकता है। शिक्षा ने भाग्य आधारित समृद्धि के पुराने रास्ते की अवधारणा को बदल दिया है। उपसभापति रविवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शिक्षा से यशगाथा लिखने के संदर्भ में इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति का उद्धरण देते हुए कहा कि शिक्षा के बूते ही उन्होंने दुनिया की प्रतिष्ठित कंपनी बना डाली। उन्होंने कहा कि अमेरिका अपने शिक्षण संस्थानों के कारण ही आज दुनिया की महाशक्ति बना हुआ है। उपसभापति ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में शिक्षा के क्षेत्र में नकल रोकने का बड़ा प्रयास हुआ है। संवाद

स्कूल में ही हो सकता है बच्चों में संस्कार का निर्माण : सतीश

गोरखपुर। उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना ने कहा कि डिजिटलाइजेशन के दौर में एबीसीडी से लेकर हायर एजुकेशन तक की पढ़ाई बच्चे टैबलेट या स्मार्टफोन जैसे डिवाइस से कर ले रहे हैं, लेकिन इससे सिर्फ शिक्षा मिल सकती है। बच्चों में संस्कार और चरित्र का निर्माण सिर्फ स्कूलों में ही हो सकता है। इसके लिए बच्चों का स्कूल जाना आवश्यक है। विधानसभा अध्यक्ष रविवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम को बतौर मुख्य वक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पहले शिक्षा के दो ही ध्येय होते थे, लड़के के लिए नौकरी और लड़की के लिए अच्छी शादी। लंबे समय तक रोटी, कपड़ा और मकान ही जीवन के तीन आवश्यकताएं बताई गईं। जीवन की पहचान संस्कार, व्यक्तित्व, सेवा, मेधा और समर्पण से होती है। उन्होंने कहा कि सेवा और संस्कारयुक्त शिक्षा ही भारत की पहचान रही है और यही दुनिया को दिशा देती रही है। संवाद

गरीबी दूर करने की चेतना लाने का माध्यम है शिक्षा : हरिवंश

जागरण संवाददाता, गोरखपुर

राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण ने कहा कि शिक्षा, गरीबी दूर करने की चेतना लाने का एकमात्र माध्यम है। किसी बड़े घराने में पैदा होना भाग्य पर निर्भर है, लेकिन शिक्षा से एक व्यक्ति बड़े घरानों से भी आगे अपना यश लिख सकता है। शिक्षा ने भाग्य आधारित समृद्धि के पुराने रास्ते की अवधारणा को बदल दिया है। शिक्षा के इसी महत्व के कारण 91 वर्ष पूर्व ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ ने शिक्षा को समग्र विकास के माध्यम के रूप में चुना और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की।

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम को संबोधित करते राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण सिंह • जागरण

उपसभापति हरिवंश नारायण रविवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के 91वें संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने शिक्षा से यश गाथा लिखने के संदर्भ में इंफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति का उद्धरण देते हुए कहा कि शिक्षा के बूते ही दुनिया की प्रतिष्ठित कंपनी बना डाली। उन्होंने कहा कि अमेरिका अपने शिक्षण संस्थानों के कारण ही आज लीडर बना हुआ है। दुनिया को बदलने वाले अनुसंधान शिक्षण संस्थाओं से ही निकलते हैं। शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के योगदान की चर्चा करते हुए कहा कि इस शिक्षा परिषद में बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक विकास के साथ चरित्र निर्माण का जो काम होता है वह शायद ही दुनिया में कहीं और होता होगा।

91 वर्ष पूर्व महंत दिग्विजयनाथ ने शिक्षा को समग्र विकास के रूप में चुना और महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की

- संस्थापक सप्ताह समारोह के समापन कार्यक्रम में बोले राज्यसभा के उपसभापति हरिवंश नारायण
- प्रतिभा प्रकृति प्रदत्त नहीं, इसके लिए परिश्रम व संकल्प जरूरी, गोरक्षपीठ शिक्षा, सेवा व जनजागरण का केंद्र

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री योगी के नेतृत्व में प्रदेश में परीक्षा में नकल रोकने का बड़ा प्रयास हुआ है। यही वजह है कि प्रतिभाओं को मौका मिला है और इससे यहां के विद्यार्थी दुनिया में रहनुमाई करेंगे। प्रतिभा पूरी तरह प्रकृति प्रदत्त नहीं होती है बल्कि इसके लिए परिश्रम व संकल्प जरूरी है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा बच्चे के विद्यालय के शिक्षक को लिखे पत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि नकल से पास होने की बजाय फेल होना बेहतर है। राज्यसभा के उपसभापति ने कहा कि नाथ पंथ की सर्वोच्च पीठ होने के साथ गोरक्षपीठ जनजागरण, शिक्षा और सेवा का भी केंद्र है। इस पीठ के युगद्रष्टा ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ ने शैक्षिक क्रांति और राष्ट्रीयता की अदम्य भावना से महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की तो ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ ने उनके विजन को आगे बढ़ाया और सामाजिक कुरीतियों से लड़कर सामाजिक समरसता को भी मजबूत किया।

सम्मान...

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद संस्थापक सप्ताह समारोह के पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में पुरस्कृत प्रतिभाएं • जागरण

प्राकृतिक संसाधनों से होगा बीमारियों के निदान पर मंथन

राष्ट्रीय संगोष्ठी

15 दिसंबर से महायोगी गोरखनाथ विवि में शुरू होगी राष्ट्रीय संगोष्ठी

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विवि द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय और फार्मेसी संकाय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने जा रहा है। ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से किया जाएगा। संगोष्ठी में देश के कई राज्यों से वैज्ञानिक शामिल होंगे।

एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा के लिए मंगलवार को कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। कुलपति ने कहा कि यह संगोष्ठी सम्मिलित होने वाले सभी शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी। इसमें वैज्ञानिकों द्वारा अपने विचारों को साझा किया जाएगा। इससे सभी प्राकृतिक संसाधनों से बन रहे औषधियों के महत्व को जानेंगे। प्राकृतिक संसाधनों द्वारा डायबिटीज, कैंसर आदि जानलेवा बीमारियों का कैसे निदान किया जा सकता है, यह इस संगोष्ठी का मुख्य केंद्र बिंदु रहेगा।

बैठक में कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने बताया कि संगोष्ठी के लिए ऑनलाइन आवेदन 15 अक्तूबर से शुरू हो गए थे।

मंडलीय प्रतियोगिता में महायोगी गोरखनाथ विवि के शिवम पांडेय को द्वितीय स्थान

स्वतंत्र चेतना

नगर संवाददाता /गोरखपुर। उच्च शिक्षा विभाग की तरफ से सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत आयोजित मंडल स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक शिवम पांडेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का मान बढ़ाया है।

दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय सहजनवा में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में महराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर व देवरिया के छात्रों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर शिवम पांडेय ने अपनी सफलता का श्रेय विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, सड़क सुरक्षा अभियान के नोडल अधिकारी धनंजय पांडेय, संबद्ध स्वास्थ विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ सुनील सिंह और राष्टीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश दुबे के मार्गदर्शन को दिया है।

प्राकृतिक संसाधनों से बीमारियों का निदान होगा राष्ट्रीय संगोष्ठी का केंद्र बिंदु

महायोगी गोरखनाथ विवि में 15 दिसंबर से शुरू होगी तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई राज्यों से प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सहभागी बनेंगे। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन–2023) विषयक संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा के लिए मंगलवार को कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि यह संगोष्ठी सम्मिलित होने वाले सभी शोधार्थियों व विद्यार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी। इसमें प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा अपने विचारों को साझा किया जाएगा जिससे सभी प्राकृतिक संसाधनों से बन रहे औषधियों के महत्व को जानेंगे। प्राकृतिक संसाधनों द्वारा डायबिटीज, कैंसर आदि जानलेवा बीमारियों का कैसे निदान किया जा सकता है, यह इस संगोष्ठी का मुख्य केंद्र बिंदु रहेगा। बैठक में कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव ने बताया कि संगोष्ठी हेतु ऑनलाइन आवेदन 15 अक्टूबर से शुरू हो गए थे। इस संगोष्ठी के लिए विभिन्न राज्यों से ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के माध्यम से रजिस्ट्रेशन कराए गए हैं जिसमें फैकल्टी, शोधार्थी के साथ विद्यार्थियों ने भी अपनी सहभागिता दर्ज कराई है। बैठक के दौरान पंजीकरण व अतिथि सत्कार समिति के डॉ. अमित कुमार दुबे, प्रबंधन एवं स्मारिका समिति की डॉ अनुपमा ओझा, शैक्षणिक कार्यक्रम समिति के प्रो. शशिकांत सिंह, स्टेज एवं स्थल सजावट समिति के डॉ अनिल कुमार, भोजन व आवास समिति के रोहित श्रीवास्तव तथा मीडिया समन्वय समिति की प्रभा शर्मा ने अपनी–अपनी तैयारियों की जानकारी दी।

मंडलीय प्रातियोगिता में महायोगी गोरखनाथ विवि के शिवम पांडेय को द्वितीय स्थान

गोरखपुर। उच्च शिक्षा विभाग की तरफ से सड़क सुरक्षा अभियान के अंतर्गत आयोजित मंडल स्तरीय भाषण प्रतियोगिता में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक शिवम पांडेय ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का मान बढ़ाया है। दीन दयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय सहजनवा में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में महराजगंज, गोरखपुर, कुशीनगर व देवरिया के छात्रों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान प्राप्त करने पर शिवम पांडेय ने अपनी सफलता का श्रेय विश्वविद्यालय के कुलपति, कुलसचिव, सड़क सुरक्षा अभियान के नोडल अधिकारी धनंजय पांडेय, संबद्ध स्वास्थ विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता डॉ सुनील सिंह और राष्टीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश दुबे के मार्गदर्शन को दिया है।

प्राकृतिक संसाधनों से बीमारियों का निदान होगा राष्ट्रीय संगोष्ठी का केंद्र बिंदु

महायोगी गोरखनाथ विवि में 15 दिसंबर से शुरू होगी तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

सत्य संगम संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर द्वारा संचालित संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 15 दिसंबर से किया जाएगा। संगोष्ठी में मंथन करने के लिए देश के कई राज्यों से प्रतिष्ठित वैज्ञानिक सहभागी बनेंगे।

एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक संगोष्ठी की तैयारियों की समीक्षा के लिए मंगलवार को कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक हुई। इस अवसर पर कुलपति ने कहा कि यह संगोष्ठी सम्मिलित होने वाले सभी शोधार्थियों व विद्यार्थियों के लिए सार्थक सिद्ध होगी। इसमें प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों द्वारा अपने विचारों को साझा किया जाएगा जिससे सभी प्राकृतिक संसाधनों से बन रहे औषधियों के महत्व को जानेंगे। प्राकृतिक संसाधनों द्वारा डायबिटीज, कैंसर आदि जानलेवा बीमारियों का कैसे निदान किया जा सकता है, यह इस संगोष्ठी का मुख्य केंद्र बिंदु रहेगा। बैठक में कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव ने बताया कि संगोष्ठी हेतु ऑनलाइन आवेदन 15 अक्टूबर से शुरू हो गए थे। इस संगोष्ठी के लिए विभिन्न राज्यों से ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया के माध्यम से रजिस्ट्रेशन कराए गए हैं जिसमें फैकल्टी, शोधार्थी के साथ विद्यार्थियों ने भी अपनी सहभागिता दर्ज कराई है। बैठक के दौरान पंजीकरण व अतिथि सत्कार समिति के डॉ. अमित कुमार दुबे, प्रबंधन एवं स्मारिका समिति की डॉ अनुपमा ओझा, शैक्षणिक कार्यक्रम समिति के प्रो. शशिकांत सिंह, स्टेज एवं स्थल सजावट समिति के डॉ अनिल कुमार, भोजन व आवास समिति के रोहित श्रीवास्तव तथा मीडिया समन्वय समिति की प्रभा शर्मा ने अपनी–अपनी तैयारियों की जानकारी दी।

छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में बुधवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा प्रदत्त योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भटौली महाविद्यालय उनवल के पूर्व सह आचार्य डा. बलवान सिंह ने मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए चरित्र निर्माण व आंतरिक मानवीय गुणों की पहचान कर सुयोग्य नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया।

योग्यता छात्रवृति वितरण समारोह में डा.बलवान सिंह को स्मृति चिन्ह भेंट करते कुलसचिव महायोगी गोरखनाथ विवि डा.प्रदीप कुमार राव साथ में कुलपति मेजर जनरल डा.अतुल बाजपेयी।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की अग्रणी भूमिका है। कार्यक्रम में कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया। संचालन कृषि संकाय के अधिष्ठाता डा. विमल कुमार दूबे जबकि आभार ज्ञापन डा. आशुतोष ने किया।

योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह आयोजित

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में बुधवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा प्रदत्त योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भटौली महाविद्यालय उनवल के पूर्व सह आचार्य डॉ. बलवान सिंह ने मेधावियों को छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए चरित्र निर्माण व आंतरिक मानवीय गुणों की पहचान कर सुयोग्य नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की अग्रणी भूमिका है। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया।

महायोगी गोरखनाथ विवि में योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह आयोजित

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में बुधवार को महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद द्वारा प्रदत्त योग्यता छात्रवृत्ति वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि भटौली महाविद्यालय उनवल के पूर्व सह आचार्य डॉ. बलवान सिंह ने मेधावियों को छात्रवृत्ति प्रदान करते हुए चरित्र निर्माण व आंतरिक मानवीय गुणों की पहचान कर सुयोग्य नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की अग्रणी भूमिका है। कार्यक्रम में कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत किया। संचालन कृषि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. विमल कुमार दूबे व आभार ज्ञापन डॉ. आशुतोष ने किया।

बारह प्रांतों के वैज्ञानिक और विशेषज्ञ करेंगे तीन दिन गहन मंथन

गोरखपुर १४ दिसम्बर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से शुक्रवार को शुरू होने जा रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बारह प्रांतों के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ प्रतिभागी गहन मंथन करेंगे। संगोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए गुरुवार दोपहर बाद तक इन राज्यों से 157 प्रतिभागी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय पहुंच चुके थे।

17 दिसंबर तक चलने वाली एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स बायोनेचर कॉन-2023 विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता शुक्रवार सुबह 10.30 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ.जी.सतीश रेड्डी और विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के औषधि महानियंत्रक डॉ.राजीव सिंह रघुवंशी होंगे। इस संगोष्ठी में पहले दिन उद्घाटन के बाद दो तकनीकी सत्र होंगे। जबकि दूसरे दिन छह तकनीकी सत्र और तीसरे दिन 17 दिसंबर को दो तकनीकी सत्र के बाद समापन सत्र होगा। समापन सत्र की अध्यक्षता महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो.उदय प्रताप सिंह करेंगे। जबकि मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ.जी.एन. सिंह व विशिष्ट अतिथि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति प्रो.संजय सिंह होंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी को लेकर गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ.अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की गई। आयोजन से जुड़ी समितियों के समन्वयकों ने बताया कि सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बैठक में कुलसचिव डॉ.प्रदीप कुमार राव ने कहा कि तीन दिन की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश.दुनिया में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक अपने कार्य अनुभवों से प्रतिभागी शोधार्थियों व विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करेंगे। इसमें प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों पर विशेष रूप से चर्चा होगी।

◆ महायोगी गोरखनाथ विवि में शुक्रवार से राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का आयोजन ◆ मुख्यमंत्री करेंगे उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता, एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफइंडिया के अध्यक्ष होंगे मुख्यअतिथि

वैज्ञानिक-विशेषज्ञ करेंगे तीन दिन गहन मंथन

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से कल 15 दिसम्बर से आरंभ होने जा रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बारह प्रांतों के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ प्रतिभागी गहन मंथन करेंगे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कान-2023 का आयोजन आज से

संगोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए गुरुवार दोपहर बाद तक इन राज्यों से 157 प्रतिभागी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय पहुंच चुके थे। 17 दिसंबर तक चलने वाली एडवांसेज एंड अपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्राम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कन-2023) विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि एरोनटिकल सोसाइटी आफ इंडिया के अध्यक्ष डा. जी सतीश रेड्डी और विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के औषधि महानियंत्रक डा. राजीव सिंह रघुवंशी होंगे। इस संगोष्ठी में पहले दिन उद्घाटन के बाद दो तकनीकी सत्र होंगे जबकि दूसरे दिन छह तकनीकी सत्र और तीसरे दिन 17 दिसंबर को दो तकनीकी सत्र के बाद समापन सत्र होगा। समापन सत्र की अध्यक्षता महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह करेंगे जबकि मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह व विशिष्ट अतिथि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति प्रो. संजय सिंह होंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी को लेकर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की गई। आयोजन से जुड़ी समितियों के समन्वयकों ने बताया कि सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। बैठक में कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने कहा कि तीन दिन की इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश-दुनिया में प्रतिष्ठित वैज्ञानिक अपने कार्य अनुभवों से प्रतिभागी शोधार्थियों व छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे। इसमें प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों पर विशेष रूप से चर्चा होगी।

बारह प्रांतों के वैज्ञानिक-विशेषज्ञ करेंगे तीन दिन गहन मंथन

भास्कर ब्यूरो

• महायोगी गोरखनाथ विवि में राष्ट्रीय संगोष्ठी 'बायोनेचर कॉन-2023' का आयोजन आज से

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से शुक्रवार को शुरू होने जा रही तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में बारह प्रांतों के वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ प्रतिभागी गहन मंथन करेंगे। संगोष्ठी में सम्मिलित होने के लिए गुरुवार दोपहर बाद तक इन राज्यों से 157 प्रतिभागी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय पहुंच चुके थे। 17 दिसंबर तक चलने वाली एडवांसेज एंड ऑपर्च्युनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स (बायोनेचर कॉन-2023) विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता शुक्रवार सुबह 10:30 बजे से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ करेंगे। उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. जी. सतीश रेड्डी और विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के औषधि महानियंत्रक डॉ. राजीव सिंह रघुवंशी होंगे। इस संगोष्ठी में पहले दिन उद्घाटन के बाद दो तकनीकी सत्र होंगे। जबकि दूसरे दिन छह तकनीकी सत्र और तीसरे दिन 17 दिसंबर को दो तकनीकी सत्र के बाद समापन सत्र होगा। समापन सत्र की अध्यक्षता महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह करेंगे। जबकि मुख्य अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ जी.एन. सिंह व विशिष्ट अतिथि बाबा साहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ के कुलपति प्रो. संजय सिंह होंगे। राष्ट्रीय संगोष्ठी को लेकर गुरुवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी की अध्यक्षता में एक बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की गई।

चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों में भाग लेगा महायोगी गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, अमृत विचार

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्य धाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया।

पूर्वांचल में धान की प्रजातियों पर रिसर्च करेगा गोरखनाथ विवि

समझौता

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय पूर्वी यूपी में धान की अलग-अलग प्रजातियों पर रिसर्च करेगा। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए। इसके तहत प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे।

इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए करार को मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

चावल के क्षेत्र में अनुसंधान को लेकर गोरखनाथ विश्वविद्यालय व अंतरराष्ट्रीय चावल शोध संस्थान के बीच समझौता पत्र पर हुआ हस्ताक्षर। • हिन्दुस्तान

कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावा

अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कहा कि गोरखपुर कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव-सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ-साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। यह एमओयू कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य-आधारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। डॉ. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आईसार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम कर सकता है। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। इस दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दूबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल अतुल वाजपेयी और प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

'एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावा रू ड सुांशु' : एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसाान संस्थान की ओर से ड़ सुांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसाान और विकास पहल के मायम से चावल आारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय

महायोगी गोरखनाथ विवि में अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू का आदान-प्रदान करते कुलपति मेजर जनरल अतुल बाजपेयी व निदेशक आईसार्क डा.सुधांशु सिंह। फोटो : एसएनबी

चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान

अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डा. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुढ़ किया जा सके।

इस अवसर पर कुलपति ड़ अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे षि अनुसाान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसाान, और प्रशिक्षण गतिविायों के बाढ़-प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव-सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ-साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। यह एमओयू कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य-आारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। ड सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आईसार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम कर सकता है।

समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार ड. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव ड़ प्रदीप कुमार राव, षि संकाय के डीन ड़ विमल दूबे, आईसार्क के वैज्ञानिक ड़ एंथनी फुलफोर्ड और ड़ आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

☛ चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान

☛ चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाए जाएंगे कई कदम

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ

विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान–प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे। शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि–खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

'एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावा : डॉ. सुधांशु'

एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़–प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र मे तनाव–सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ–साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन मे मदद करेगा। यह एमओयू कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य–आधारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। डॉ. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आईसार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप मे भी काम कर सकता है। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र मे आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दूबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

अवधनामा संवाददाता

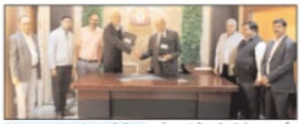

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है।

इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे। शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र

चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान

(आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावाः डॉ. सुधांशु

एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़-प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव-सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ-साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। यह एमओयू कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य-आधारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। डॉ. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आईसार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम कर सकता है। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दुबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

गोरखनाथ विवि व अनुसंधान संस्थान में हुआ समझौता

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान साथ मिलकर चावल अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करेंगे। शुक्रवार को दोनों संस्थानों में समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान हुआ। विश्वविद्यालय की ओर से कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी और अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डा. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समझौते के अनुसार उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुसंधान संस्थान व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता व कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे।

समझौता ज्ञापन दिखाते गोरखनाथ विवि के कुलपति मेजर जनरल अतुल वाजपेयी व संस्थान के केंद्र निदेशक डा. सुधांशु सिंह, साथ में कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव। सौ. गोवि

कुलपति ने समझौते को कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। अनुसंधान संस्थान केंद्र निदेशक डा. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। समझौते का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डा. जीएन सिंह ने कहा कि यह किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। इस दौरान कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डा. विमल दुबे, वैज्ञानिक डा. एंथनी फुलफोर्ड और डा. आशीष रहे।

गोरखनाथ विवि में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

● चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान

भास्कर ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके।

इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावा : डॉ. सुधांशु

एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़-प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव-सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ-साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

- चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान
- चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाए जाएंगे कई कदम

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे ब?ने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान ;इरीद्ध के साथ एमओयू समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे। शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र आईसार्क के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि.खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को ब?ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डा. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिकए अनुसंधानए और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़.प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन

जीआई क्षेत्र में तनाव.सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ.साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दुबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान, चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाए जाएंगे कई कदम

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे। शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य

प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दुबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फुलफोर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के साथ किया एमओयू पर साइन

⇨ चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान ⇨ चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाए जाएंगे कई कदम

न्याय आपका संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान इरी के साथ एमओयू समझौता ज्ञापन का आदान.प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान

संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र आईसार्क के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि.खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावाए दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिकए अनुसंधानए और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावाः डॉ. सुधांशु

एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़.प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव.सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ.साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। यह एमओयू कालानमक और अन्य पारंपरिक किस्मों को बढ़ावा देगा और इन किस्मों से आईसार्क द्वारा विकसित मूल्य.आधारित उत्पादों का व्यावसायीकरण करेगा। डॉ. सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय चावल उत्पादों के व्यावसायीकरण के लिए संयुक्त उद्यम के लिए आईसार्क और क्षेत्र के उद्यमियों के बीच एक कड़ी के रूप में भी काम कर सकता है।

समाचार दर्पण

राष्ट्रीय संगोष्ठी

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में सीएम योगी आदित्यनाथ को सम्मानित करते विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी। • हिन्दुस्तान

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'बायोनेचर कॉन 2023' के दौरान बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं की उपस्थिति रही। • हिन्दुस्तान

सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का किया शुभारंभ

शिक्षण संस्थान समाज के प्रति जिम्मेदारी समझें

बोले सीएम

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों को तटस्थ बने रहने की बजाय समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। उच्च शिक्षण संस्थानों को चाहिए वे समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन बढ़ाएं। व्यावहारिक आवश्यकताओं को समझने के लिए सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भर न रहें। इसके बजाय फील्ड में अनुभव हासिल करने और रिसर्च पर ध्यान देना होगा। डॉक्टर और नर्स मरीजों से जुड़े विभिन्न आंकड़ों को संग्रहित कर एक बड़े शोध का आधार बना सकते हैं।

सीएम योगी, शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। इसका आयोजन स्वास्थ्य विज्ञान और फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान में ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से हो रहा है। [illegible] औषधीय इन हर्ब्स [illegible] नेचुरल प्रोडक्ट्स [illegible]-2023 के शुभारंभ [illegible] कहा कि नवाचार और [illegible] तटस्थ होने के कारण [illegible] था। शिक्षण संस्थान [illegible] केंद्र तक सीमित हो [illegible] प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी [illegible] पिछले नौ सालों में इस [illegible] के प्रयास हुए तो अब अच्छे परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। • हिन्दुस्तान

दो हजार एकड़ में बन रहा है फार्मा पार्क

सीएम ने कहा कि सरकार ललितपुर में दो हजार एकड़ में फार्मा पार्क बना रही है। इसके साथ ही मेडिकल डिवाइस पार्क को विकसित करने पर भी तेजी से काम चल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली औषधियों की क्वालिटी पर फोकस करने के साथ पैकेजिंग पर भी पूरा ध्यान देना होगा।

नर्सिंग कॉलेज को कौशल प्रयोगशाला की सौगात

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल होने से पूर्व सीएम ने गुरु श्री गोरखनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कौशल प्रयोगशाला का शुभारंभ किया। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को मिलेगी ऊंचाई : मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों से पारंपरिक चिकित्सा भारत की देन है। उन्होंने विभागों के बीच आपसी समन्वय पर जोर देते हुए कहा कि आयुर्वेद, फार्मेसी, बायो केमिस्ट्री, कृषि जैसे कई विभागों के समन्वय से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को एक नई ऊंचाई मिल सकती है। कृषि से जुड़े लोग प्राकृतिक संसाधनों से औषधि बनाने के क्षेत्र में बहुत योगदान दे सकते हैं।

सीएम ने इंसेफेलाइटिस पर नियंत्रण का अनुभव साझा किया

मुख्यमंत्री ने इंसेफेलाइटिस नियंत्रण के अपने अनुभव को भी साझा किया। उन्होंने बताया कि 1977 से लेकर 2017 तक करीब 50 हजार बच्चों की मौत इंसेफेलाइटिस की वजह से ही गई। जापान में इसके लिए वैक्सीन 1905 में ही बन गई थी। जबकि भारत में वैक्सीन 2005 में उपलब्ध हुई, उसका भी उत्पादन मांग से काफी कम रहा। मुख्यमंत्री ने बताया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की करीब तीन करोड़ की आबादी के सापेक्ष इंसेफेलाइटिस वैक्सीन महज एक लाख डोज मिल रही थी। मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश की कमान सम्भालने के बाद स्वास्थ्य विभाग को नोडल बनाकर कई विभागों के बीच अंतर विभागीय समन्वय से चालीस साल के दंश को चार साल में दूर कर दिया गया।

भारत के हर गांव में हैं औषधियोग्य प्राकृतिक संसाधनः डॉ. रेड्डी

मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. जी. सतीश रेड्डी ने कहा कि विश्व प्राकृतिक संसाधनों से बनी औषधियों को तेजी से अपना रहा है। यह देशवासियों के लिए बड़ा अवसर है। हर गांव में पौधों, पत्तों और यहां तक कि मिट्टी के रूप में औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि 60 प्रतिशत लोग हर्बल या नेचुरल मेडिसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं। डीआरडीओ के पूर्व में अध्यक्ष रहे डॉ रेड्डी ने यूपी में डिफेंस कॉरिडोर और ब्रह्मोस मिसाइल बनाने का केंद्र बनाए जाने को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजनरी नेतृत्व का परिणाम बताया। पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि प्राचीन काल में भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। भारत को विश्व की सबसे बड़ी ताकत बनाने में युवाओं की अहम भूमिका होगी।

डॉ. प्रदीप राव की दो पुस्तकों का विमोचन

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथः वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का विमोचन किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. गणेश कुमार, गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस समेत देशभर के डेढ़ सौ से अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुस्तक का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। • हिन्दुस्तान

समाज के अनुरूप अध्ययन बढ़ाएं शिक्षण संस्थान

तटस्थ रहने के बजाय समाज के प्रति जिम्मदारी को समझें : योगी आदित्यनाथ

महायोगी गोरखनाथ विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का शुभारंभ

■ बोले मुख्यमंत्री- नवाचार और अनुसंधान से तटस्थ होने के कारण पिछड़ गया था भारत

सुरक्षा-सुशासन में ही शुरू होता है विकास का नया दौर

सीएम ने पांच सितारा होटल कोर्टयार्ड और क्रूज सेवा का किया शुभारंभ

■ कहा, सरकार में विकास और खुशहाली का वातावरण हर क्षेत्र में दिख रहा

नये भारत का नया प्रदेश बना यूपी

नई अयोध्या का हो रहा दर्शन

ओडीओपी उत्पादों के बारे में भी बताएं

विभागों में समन्वय से पारंपरिक चिकित्सा को मिलेगी नई ऊंचाई

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले योगी

अमर उजाला ब्यूरो

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आयुर्वेद, फार्मेसी, बायो केमिस्ट्री, कृषि जैसे कई विभागों के समन्वय से पारंपरिक चिकित्सा को नई ऊंचाई मिल सकती है।

सीएम योगी शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार ललितपुर में दो हजार एकड़ में फार्मा पार्क बना रही है। इसके साथ ही मेडिकल डिवाइस पार्क को विकसित करने पर भी तेजी से काम चल रहा है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को स्मृति चिह्न भेंट करते कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी व अन्य। संवाद

मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. जी. सतीश रेड्डी ने कहा कि पूरा विश्व एक बार फिर आरोग्यता व रोग निदान के लिए प्राकृतिक संसाधनों से बनीं औषधियों को तेजी से अपना रहा है। इस मौके पर डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि प्राचीन काल में भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। आभार ज्ञापन कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने किया, जबकि मुख्य अतिथि का स्मृति चिह्न व अंगवस्त्र देकर अभिवादन कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका और महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ प्रदीप कुमार राव की ओर से संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथः वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य'का विमोचन किया गया।

डॉ. प्रदीप राव की दो पुस्तकों का विमोचन

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथः वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का विमोचन किया।

शुक्रवार को महायोगी गोरक्षनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुस्तक का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। ● हिन्दुस्तान

इस अवसर पर प्रमुख रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कॉलेज के प्रधानाचार्य डॉ. गणेश कुमार, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. मंजूनाथ एनएस समेत देशभर के डेढ़ सौ से अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक और बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे।

सीएम योगी ने किया यूनियन बैंक की नवीन शाखा का उद्घाटन

यूनियन बैंक महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय शाखा का उद्घाटन करते मुख्यमंत्री।

गोरखपुर: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को यूनियन बैंक आफ इंडिया, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की नवीन शाखा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने यूनियन बैंक आफ इंडिया द्वारा बैंक शाखा खोले जाने को सराहनीय कार्य बताते हुए सभी को डिजिटल बैंकिंग सेवाओं के अधिक से अधिक प्रयोग के लिए भी प्रोत्साहित किया।

अंचल प्रमुख गिरीश चंद्र जोशी ने बताया कि यह शाखा गोरखपुर जिले में बैंक की 33वीं शाखा है। इसके जरिये यूनियन बैंक आफ इंडिया द्वारा क्षेत्र की सम्मानित जनता को आसान बैंकिंग सुविधाएं प्रदान किया जाएगा। कार्यक्रम में बैंक के वाराणसी अंचल प्रमुख गिरीश चंद्र जोशी, गोरखपुर क्षेत्र प्रमुख मनीष प्रताप सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख पुरनेंदु कुमार, शशांक कुमार, मुख्य प्रबंधक शशिकांत श्रीवास्तव, उमाशंकर, शिवचंद्र चौधरी, बैंक शाखा प्रमुख अमित सिंह समेत बैंक के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

समाचार दर्पण

सीएम योगी ने महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का किया शुभारंभ

शिक्षण संस्थान समाज के प्रति जिम्मेदारी समझें

बोले सीएम

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय या अन्य शिक्षण संस्थानों को तटस्थ बने रहने की बजाय समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझना होगा। उच्च शिक्षण संस्थानों को चाहिए वे समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन बढ़ाएं। व्यावहारिक आवश्यकताओं को समझने के लिए सिर्फ पुस्तकीय ज्ञान पर निर्भर न रहें। इसके बजाय फील्ड में अनुभव हासिल करने और रिसर्च पर ध्यान देना होगा। डॉक्टर और नर्स मरीजों से जुड़े विभिन्न आंकड़ों को संग्रहित कर एक बड़े शोध का आधार बना सकते हैं।

सीएम योगी, शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। इसका आयोजन स्वास्थ्य विज्ञान और फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान में ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से हो रहा है। एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स बायोनेचर कॉन-2023 के शुभारंभ पर मुख्यमंत्री ने कहा कि नवाचार और अनुसंधान से तटस्थ होने के कारण देश पिछड़ गया था। शिक्षण संस्थान डिग्री बांटने के केंद्र तक सीमित हो गए थे। हालांकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में पिछले नौ सालों में इस दिशा में सुधार के प्रयास हुए तो अब अच्छे परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। • हिन्दुस्तान

दो हजार एकड़ में बन रहा है फार्मा पार्क

सीएम ने कहा कि सरकार ललितपुर में दो हजार एकड़ में फार्मा पार्क बना रही है। इसके साथ ही मेडिकल डिवाइस पार्क को विकसित करने पर भी तेजी से काम चल रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली औषधियों की क्वालिटी पर फोकस करने के साथ पैकेजिंग पर भी पूरा ध्यान देना होगा।

नर्सिंग कॉलेज को कौशल प्रयोगशाला की सौगात

राष्ट्रीय संगोष्ठी में शामिल होने से पूर्व सीएम ने गुरु श्री गोरक्षनाथ कॉलेज ऑफ नर्सिंग में कौशल प्रयोगशाला का शुभारंभ किया। विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी, कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने संगोष्ठी की रूपरेखा और उद्देश्यों पर प्रकाश डाला।

प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को मिलेगी ऊंचाई : मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों से पारंपरिक चिकित्सा भारत की देन है। उन्होंने विभागों के बीच आपसी ... आयुर्वेद, फार्मेसी, बायो केमिस्ट्री, कृषि जैसे कई विभागों के समन्वय से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को एक नई ऊंचाई मिल सकती है। कृषि से जुड़े लोग प्राकृतिक संसाधनों से औषधि बनाने के क्षेत्र में बहुत योगदान ...

सीएम ने इंसेफेलाइटिस पर नियंत्रण का अनुभव साझा किया

मुख्यमंत्री ने इंसेफेलाइटिस नियंत्रण के अपने अनुभव को भी साझा किया। उन्होंने बताया कि 1977 से लेकर 2017 तक करीब 50 हजार बच्चों की मौत इंसेफेलाइटिस की वजह से हो गई। जापान में इसके लिए वैक्सीन 1905 में ही बन गई थी। जबकि भारत में वैक्सीन 2005 में उपलब्ध हुई, उसका भी उत्पादन मांग से काफी कम रहा। मुख्यमंत्री ने बताया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की करीब तीन करोड़ की आबादी के सापेक्ष इंसेफेलाइटिस वैक्सीन महज एक लाख डोज मिल रही थी। मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश की कमान सम्भालने के बाद स्वास्थ्य विभाग को नोडल बनाकर कई विभागों के बीच अंतर विभागीय समन्वय से चालीस साल के दंश को चार साल में दूर कर दिया गया।

भारत के हर गांव में हैं औषधियोग्य प्राकृतिक संसाधन: डॉ. रेड्डी

मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष डॉ. जी. सतीश रेड्डी ने कहा कि विश्व प्राकृतिक संसाधनों से बनी औषधियों को तेजी से अपना रहा है। यह देशवासियों के लिए बड़ा अवसर है। हर गांव में पौधों, पत्थरों और यहां तक कि मिट्टी के रूप में औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि 60 प्रतिशत लोग हर्बल या नेचुरल मेडिसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं। डीआरडीओ के पूर्व में अध्यक्ष रहे डॉ रेड्डी ने यूपी में डिफेंस कॉरिडोर और ब्रह्मोस मिसाइल बनाने का केंद्र बनाए जाने को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजनरी नेतृत्व का परिणाम बताया। पूर्व औषधि महानियंत्रक डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि प्राचीन काल में भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। भारत को विश्व की सबसे बड़ी ताकत बनाने में युवाओं की अहम भूमिका होगी।

डॉ. प्रदीप राव की दो पुस्तकों का विमोचन

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। सीएम योगी, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथः वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का विमोचन किया।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डॉ. धर्मेंद्र सिंह, ... प्रधानाचार्य डॉ. गणेश कुमार, गुरु गोरक्षनाथ इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डॉ. मंजुनाथ ... अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक और बड़ी संख्या में छात्र-...

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में पुस्तक का विमोचन करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। • हिन्दुस्तान

सीएम ने साझा किया इंसेफेलाइटिस नियंत्रण का अनुभव

गोरखपुर (एसएनबी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 1977 से लेकर 2017 तक करीब 50 हजार बच्चों की मौत इंसेफेलाइटिस की वजह से हो गई। जापान में इसके लिए वैक्सीन 1905 में ही बन गई थी जबकि भारत में ... की तरफ मोड़ रहा है। उन्होंने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि 60 प्रतिशत लोग हर्बल या नेचुरल मेडिसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं। लोग यह मानने लगे हैं कि सस्टेनेबल लिविंग के लिए नेचुरल होना पड़ेगा। डीआरडीओ ...

महायोगी गोरखनाथ विवि में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ। फोटो : एसएनबी

वैक्सीन 2005 में उपलब्ध हुई, उसका भी उत्पादन मांग से काफी कम रहा। मुख्यमंत्री ने बताया कि पूर्वी उत्तर प्रदेश की करीब तीन करोड़ की आबादी के सापेक्ष इंसेफेलाइटिस वैक्सीन महज एक लाख डोज मिल रही थी। 2017 में प्रदेश की कमान सम्भालने के बाद स्वास्थ्य विभाग को नोडल बनाकर कई विभागों के बीच अंतर विभागीय समन्वय से चालीस साल के दंश को चार साल में दूर कर दिया गया। इंसेफेलाइटिस नियंत्रण का यह मडल कोरोना के सफल प्रबंधन में भी काम आया और हर जगह यूपी के कोरोना प्रबंधन की सराहना हुई।

स्मारिका व डा. प्रदीप की पुस्तक का विमोचन : मुख्यमंत्री, मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथि ने राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मारिका तथा महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव द्वारा संपादित दो पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथ वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का विमोचन किया।

भारत के हर गांव में है औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधनः डा. रेड्डीः राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि एरोनॉटिकल सोसाइटी आफ इंडिया के अध्यक्ष डा. जी सतीश रेड्डी ने कहा कि पूरा विश्व एक बार फिर आरोग्यता व रोग निदान के लिए प्राकृतिक संसाधनों से बनी औषधियों को तेजी से अपना रहा है। भारत के हर गांव में पौधों, पत्थरों और यहां तक कि मिट्टी के रूप में औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध हैं। ब्रह्मांड के पहले चिकित्सक चरक और सुश्रुत यहीं होते थे। प्राचीन काल में यहां सर्जरी भी होती थी। डा. रेड्डी ने कहा कि करीब दो सौ साल से माडर्न साइंस टेक्नोलाजी से आई दवाओं का नकारात्मक असर लोगों को फिर से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा के पूर्व में अध्यक्ष रहे डा. रेड्डी ने यूपी में डिफेंस कॉरिडोर और ब्रह्मोस मिसाइल बनाने का केंद्र बनाए जाने को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के विजनरी नेतृत्व का परिणाम बताया। विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह ने कहा कि प्राचीन काल में भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। गोरक्षपीठाधीश्वर के रूप में योगी आदित्यनाथ ने संस्कृति, विज्ञान और अनुसंधान की इसी परिकल्पना को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के रूप में साकार दिया है।

आभार ज्ञापन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डा. अतुल वाजपेयी ने किया जबकि मुख्य अतिथि का स्मृति चिन्ह व अंगवस्त्र देकर अभिवादन कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव ने किया।

इस अवसर दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्रपाल सिंह, विपिन सिंह, एमएलसी डा. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कालेज के प्रधानाचार्य डा. गणेश कुमार, गुरु गोरखनाथ इंस्टिट्यूट आफ मेडिकल साइंसेज के प्राचार्य डा. मंजूनाथ एनएस समेत बारह राज्यों के डेढ़ सौ से अधिक वैज्ञानिक, विषय विशेषज्ञ, डेलीगेट, संगोष्ठी के प्रतिभागी, शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

डिजिटल बैंकिंग सेवाओं का अधिकाधिक करें प्रयोग : सीएम

गोरखपुर (एसएनबी)। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में यूनियन बैंक की नवीन शाखा का उद्घाटन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने यूनियन बैंक द्वारा नई शाखा को खोले जाने की सराहना करते हुए लोगों से डिजिटल बैंकिंग सेवाओं के अधिक से अधिक प्रयोग पर बल दिया। अंचल प्रमुख वाराणसी गिरीश चंद्र जोशी ने मुख्यमंत्री का स्वागत करते कहा कि गोरखपुर में यह बैंक की 33वीं शाखा है। इस शाखा के माध्यम से आसपास के लोगों को बैंकिंग सुविधाएं आसानी से प्राप्त हो सकेंगी। इस अवसर पर गोरखपुर क्षेत्र प्रमुख मनीष प्रताप सिंह, उप क्षेत्र प्रमुख पुरनेन्दु कुमार व शशांक कुमार, मुख्य प्रबंधक शशिकांत श्रीवास्तव, उमाशंकर, शिव चन्द्र चौधरी, नवीन शाखा के प्रमुख अमित सिंह व बैंक के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

सीएम योगी आदित्यनाथ ने महायोगी गुरु गोरखनाथ विश्वविद्यालय में यूनियन बैंक की शाखा का उद्घाटन किया

महायोगी गोरखनाथ विवि में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की नवीन शाखा का फीता काटकर शुभारंभ करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ साथ में अंचल प्रमुख गिरीश चन्द्र जोशी, क्षेत्र प्रमुख मनीष प्रताप सिंह व अन्य। फोटो : एसएनबी

समस्याओं के प्रति तटस्थ न रहें विश्वविद्यालय : योगी

गोरखनाथ विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी में बोले मुख्यमंत्री

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उच्च शिक्षा में नवाचारों की महत्ता समझाई। शोध-अनुसंधान को लेकर तटस्थता के दुष्प्रभावों की चर्चा करते हुए इसे भारत के पिछड़ेपन का महत्वपूर्ण कारण बताया। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित कर रहे सीएम योगी ने कहा कि विश्वविद्यालय, महाविद्यालय और अन्य शिक्षण संस्थान तटस्थता छोड़ समाज की समस्याओं के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए शोध व अध्ययन को आगे बढ़ाएं। इसके लिए केवल पुस्तकीय ज्ञान पर ही निर्भर नहीं रहना होगा बल्कि अपने अध्ययन को समाज से जोड़ना होगा। लंबे समय तक यहां के शिक्षण संस्थान डिग्री बांटने तक सीमित रह गए थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में पिछले नौ सालों में इस दिशा में सुधार के प्रयास हुए तो अब अच्छे परिणाम सामने आ रहे हैं।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय मे राष्ट्रीय संगोष्ठी को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ • सौ. गोरखनाथ मंदिर

पर्यटन व रोजगार को क्रूज से मिलेगा विस्तार

मुख्यमंत्री ने रामगढ़ताल में बहुप्रतीक्षित क्वीन लेक क्रूज का भी उद्घाटन किया। सीएम योगी ने कहा कि हम जितना अच्छा शहर रखेंगे, पर्यटन और विकास की संभावना बढ़ने के साथ उतने ही नए रोजगार भी सृजित होंगे। पानी में राह बनाने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को देते हुए योगी ने कहा कि यूपी को लैंड लॉक्ड स्टेट (स्थल रूद्ध प्रदेश) कहा जाता था। आज पीएम मोदी के मार्गदर्शन में ही वाराणसी से हल्दिया तक गंगा नदी में इनलैंड वाटर वे बनाकर क्रूज चलाया जा रहा है। प्रदेश सरकार ने राप्ती, सरयू, गंगा और यमुना जैसी नदियों में इनलैंड वाटर वे सेवा शुरू करने के लिए इनलैंड वाटर वे अथारिटी का गठन किया है।

मुख्यमंत्री शुक्रवार को 'एडवांसेज एंड ऑपर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बायोनेचर कान-2023' विषय पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। यह संगोष्ठी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय तथा ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित की गई थी। बतौर कुलाधिपति मुख्यमंत्री ने कहा कि दुनिया में प्राकृतिक संसाधनों से पारंपरिक चिकित्सा भारत की देन है। अगर आयुर्वेद, फार्मेसी, बायो केमिस्ट्री, कृषि जैसे कई विभाग समन्वय बनाकर पारंपरिक चिकित्सा के क्षेत्र में कार्य करें तो इसे नई ऊंचाई मिल सकती है। उन्होंने कहा कि कृषि से जुड़े लोग प्राकृतिक संसाधनों से औषधि बनाने के क्षेत्र में उपयोगी योगदान दे सकते हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि सरकार ललितपुर में दो हजार एकड़ में फार्मा पार्क बना रही है। इसके साथ ही मेडिकल डिवाइस पार्क को विकसित करने की दिशा में भी तेजी से काम चल रहा है। डाटा संग्रहण को वर्तमान समय की आवश्यकता बताते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि डाक्टर और नर्स रोगियों से जुड़े विभिन्न आंकड़ों को संग्रहित करें। उनका यह संग्रहण बड़े शोध का आधार बन सकता है।

पिछली सरकारों की सोच खंडहर वालीः मुख्यमंत्री योगी ने रामगढ़ताल इलाके में होटल 'कोर्टयार्ड बाय मैरियट' का लोकार्पण किया। बदलते गोरखपुर में बने निवेश के माहौल की चर्चा करते हुए सीएम योगी ने कहा कि आज जिस जगह पर इस पांच सितारा होटल का शुभारंभ हुआ है वहां सात साल पहले खंडहर हुआ करता था। ऐसा उन सरकारों की सोच के चलते था। पिछली सरकारों की सोच खंडहर वाली थी तो यहां खंडहर था, हमारी सोच फाइव स्टार वाली है तो यहां होटल खड़ा है। जनता जैसा सोचती है वैसी सरकार चुनती है। सरकार यदि जन भावनाओं की चिंता करने वाली होगी तो उस प्रदेश में सुरक्षा, सुशासन और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर देगी।

संबंधित खबरें » 4

'भारत की मिट्टी व पत्थर में है औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन'

जागरण संवाददाता, गोरखपुर : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में शुक्रवार से शुरू हुई तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते हुए एरोनाटिकल सोसाइटी आफ इंडिया के अध्यक्ष डा. जी सतीश रेड्डी ने आरोग्यता और रोग निदान में प्राकृतिक संसाधनों से बनी औषधियों की भूमिका पर अपने विचार रखे। कहा कि पूरा विश्व प्राकृतिक संसाधनों से बनीं औषधियों को तेजी से अपना रहा है। प्राकृतिक संसाधनों से बनने वाली दवाओं की भारत में भी असीम संभावनाएं हैं। यहां के हर गांव के पौधों, पत्थरों, यहां तक की मिट्टी में भी औषधि योग्य प्राकृतिक संसाधन मौजूद हैं।

उन्होंने कहा भारत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा करने की जननी है। ब्रह्मांड के पहले चिकित्सक चरक और सुश्रुत भारत के ही थे। प्राचीन काल में यहां सर्जरी भी होती थी। डा. रेड्डी ने कहा कि करीब दो सौ साल से माडर्न साइंस टेक्नोलाजी से आई दवाओं का नकारात्मक असर लोगों को फिर से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की तरफ मोड़ रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी माना है कि 60 प्रतिशत लोग हर्बल या नेचुरल मेडिसिन का इस्तेमाल कर रहे हैं। लोग मानने लगे हैं कि स्वास्थ्य को निरंतर ठीक रखना है तो प्राकृतिक होना ही पड़ेगा। डा. रेड्डी ने कहा कि आज जरूरत है कि नए सिरे से चिकित्सा में काम आने योग्य प्राकृतिक संसाधनों की खोज हो, दवा के रूप में उनकी प्रोसेसिंग तेज की जाए और गुणवत्ता पर ध्यान देते हुए उनकी मार्केटिंग की जाए।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय मे एडवांटेज एंड अपार्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्राम नेचुरल प्रोडक्ट्स विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ • सौ. : गोरखनाथ मंदिर

गोरखनाथ विश्वविद्यालय संस्कृति विज्ञान व अनुसंधान का मूर्त रूप

राष्ट्रीय संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि भारत सरकार के पूर्व औषधि महानियंत्रक डा. जीएन सिंह ने कहा कि प्राचीन काल मे भारत अपनी संस्कृति के साथ विज्ञान और अनुसंधान के लिए विख्यात था। गोरक्षपीठाधीश्वर के रूप मे योगी आदित्यनाथ ने संस्कृति, विज्ञान और अनुसंधान की इसी परिकल्पना को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के रूप मे साकार दिया है।

उद्घाटन सत्र मे पुस्तक का लोकार्पण करते मुख्यमंत्री आदित्यनाथ साथ मे अन्य अतिथि • सौ. : गोरखनाथ मंदिर

अतिथियों का स्वागत विश्वविद्यालय के कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव और आभार ज्ञापन कुलपति प्रो. अतुल वाजपेयी ने किया। इससे पहले विश्वविद्यालय के स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. सुनील कुमार सिंह ने संगोष्ठी की रूपरेखा रखी और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस दौरान गोरखपुर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. पूनम टंडन, विधायक महेंद्र पाल सिंह व विपिन सिंह, एमएलसी डा. धर्मेंद्र सिंह, बीआरडी मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. गणेश कुमार, डा. मंजूनाथ आदि मौजूद रहे।

डा. प्रदीप राव की दो पुस्तकों का हुआ विमोचन : उद्घाटन मंच से शुक्रवार को कुलसचिव डा. प्रदीप कुमार राव की दो संपादित पुस्तकों 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' व 'नाथपंथ : वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' का मुख्यमंत्री, मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथि के हाथों विमोचन हुआ। डा. राव ने बताया कि 'प्राचीन भारत के राज्य कर्मचारी' पुस्तक में वैदिक काल से गुप्तकाल तक की राज्य व्यवस्था, उसमें कर्मचारियों की भूमिका और कार्यपद्धति का शोधात्मक विश्लेषण किया गया है। साथ ही वर्तमान युग के कर्मचारियों से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दूसरी पुस्तक 'नाथपंथ : वर्तमान उपादेयता का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य' में गुरु गोरखनाथ से लेकर वर्तमान पीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ तक नाथ पंथ की ऐतिहासिकता और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसकी प्रासंगिकता बताई गई है। इस दौरान राष्ट्रीय संगोष्ठी की स्मरणिका का विमोचन भी हुआ।

राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का सीएम योगी ने किया उद्घाटन, बोले

आज के समय में स्टडी रिसर्च जरूरी

उच्च शिक्षण संस्थानों को चाहिए वे समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं के अनुरूप अध्ययन बढ़ाएं

- कई विभागों के समन्वय से प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को मिलेगी ऊंचाई
- सीएम ने साझा किया इंसेफेलाइटिस नियंत्रण का अनुभव

दो हजार एकड़ में बन रहा फार्मा पार्क

डाटा संग्रहण आज की आवश्यकता

भारत के हर गांव में हैं औषधियोग्य प्राकृतिक संसाधनः डॉ. रेड्डी

नर्सिंग कॉलेज को मिली कौशल प्रयोगशाला की सौगात

संस्कृति, विज्ञान व अनुसंधान का मूर्त रूप है महायोगी गोरखनाथ विवि : डॉ. जीएन सिंह

पैकेजिंग पर भी देना होगा पूरा ध्यान

स्मारिका और डॉ प्रदीप राव की दो पुस्तकों का हुआ विमोचन

प्राकृतिक संसाधनों से उपचार सदैव प्रासंगिकः प्रो. यूपी सिंह

महायोगी गोरखनाथ विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी बायोनेचर कॉन-2023 का समापन

स्वतंत्र भारत संवाददाता

गोरखपुर। महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह (प्रो. यूपी सिंह) ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की भारतीय पद्धति सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी। कोरोना काल मे जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विश्व की पुरातन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया।

प्रो. यूपी सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप (समाप सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। एडवांसेज एंड ऑफर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स बायोनेचर कॉन-2023 विषयक संगोष्ठी के समारोप अवसर पर उन्होंने कहा कि निरोग बने रहने को दुनिया एक बार फिर प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों को अपनाने पर जोर दे रही है। ऐसे में जरूरत है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को समयानुकूल जरूरतों के अनुसार अनुसंधान पूर्वक आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने कहा कि ऐसे ही प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वास्तव में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान समान है। संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद समेत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की उपादेयता को विस्तार देने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सतत प्रयास सराहनीय हैं। संगोष्ठी विश्वविद्यालय के इन प्रयासों को नया आयाम देगी। उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के निष्कर्ष आने वाले समय में प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को नई दृष्टि देकर आगे बढ़ाएंगे।

कोविड में आयुष-64 के अप्रत्याशित परिणामः प्रो. रेड्डी

राष्ट्रीय संगोष्ठी के तीसरे दिन विभिन्न तकनीकी सत्रों में विशेषज्ञों ने अपने शोध अनुभव साझा कर प्रतिभागियों और विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के इंस्टिट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज में रस शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. के रामचंद्र रेड्डी ने डिजाइनिंग एंड डेवलपमेंट ऑफ आयुर्वेदिक दोसगे फॉर्म्स फॉर द मैनेजमेंट ऑफ सार्स कोविड-19 विषय पर शोध निष्कर्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कोविड महामारी के समय आशा की किरण के रूप में वर्णित पॉलीहर्बल दवा आयुष- 64 के अप्रत्याशित परिणाम प्राप्त हुए।अलग अलग सत्रों में सेंटर ऑफ बायोमेडिकल रिसर्च लखनऊ में डिपार्टमेंट ऑफ स्पेक्ट्रोस्कोपी एंड इमेजिंग के हेड प्रो. नीरज सिन्हा, अलगप्पा विश्वविद्यालय तमिलनाडु में बायो इंफॉर्मेटिक्स साइंस के प्रोफेसर डॉ. संजीव कुमार सिंह आदि ने विविध शोध विषयों पर व्याख्यान दिए।

ज्ञान व अनुसंधान का संगम बन गई राष्ट्रीय संगोष्ठीः डॉ. वाजपेयी: इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि तीन दिन तक विशद मंथन से यह संगोष्ठी प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान और अनुसंधान का संगम बन गई। इस संगोष्ठी में ओरल प्रेजेंटेशन में कुल 14, पोस्टर प्रेजेंटेशन में कुल 40 और यंग साइंटिस्ट अवार्ड में कुल 7 लोगो ने प्रतिभाग किया।

प्राकृतिक संसाधनों से उपचार सदैव प्रासंगिकः प्रो. यूपी सिंह

महायोगी गोरखनाथ विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 'बायोनेचर कॉन-2023' का समापन

निष्पक्ष प्रतिदिन | गोरखपुर,ब्यूरो

महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह (प्रो. यूपी सिंह) ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की भारतीय पद्धति सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी। कोरोना काल मे जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विश्व की पुरातन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया। प्रो. यूपी सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप (समाप सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह के मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद समेत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की उपादेयता को विस्तार देने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सतत प्रयास सराहनीय हैं। इस अवसर पर महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि तीन दिन तक विशद मंथन से यह संगोष्ठी प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान और अनुसंधान का संगम बन गई। समापन सत्र में स्वागत संबोधन महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता एवं संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सुनील कुमार ने तथा आभार ज्ञापन फार्मेसी संकाय के प्रिंसिपल प्रो. शशिकांत सिंह ने किया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सह संयोजक ट्रांसलेशनल बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. दिनेश कुमार भी मंचासीन रहे। राष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद दिया है।

प्राकृतिक संसाधनों से उपचार प्रासंगिक

gorakhpur@inext.co.in

GORAKHPUR (17 Dec): महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष एवं महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह (प्रो. यूपी सिंह) ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की भारतीय पद्धति सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी. कोरोना काल मे जब पूरी दुनिया त्रस्त थी, तब प्राकृतिक संसाधनों पर आधारित विश्व की पुरातन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया. प्रो. यूपी सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समारोप (समाप सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे. एडवांसेज एंड ऑफर्चुनिटीज इन ड्रग डिस्कवरी फ्रॉम नेचुरल प्रोडक्ट्स 'बायोनेचर कॉन-2023' विषयक संगोष्ठी के समारोप अवसर पर उन्होंने कहा कि निरोग बने रहने को दुनिया एक बार फिर प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों को अपनाने पर जोर दे रही है. ऐसे में जरूरत है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को समयानुकूल जरूरतों के अनुसार अनुसंधान पूर्वक आगे बढ़ाया जाए. उन्होंने कहा कि ऐसे ही प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आयोजित यह राष्ट्रीय संगोष्ठी वास्तव में एक महत्वपूर्ण अनुष्ठान समान है.

नया आयाम देगी संगोष्ठी

समारोह के मुख्य अतिथि महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि आयुर्वेद समेत प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा की उपादेयता को विस्तार देने के लिए महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के सतत प्रयास सराहनीय हैं. राष्ट्रीय संगोष्ठी विश्वविद्यालय के इन प्रयासों को नया आयाम देगी. उन्होंने कहा कि संगोष्ठी के निष्कर्ष आने वाले समय में प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा को नई दृष्टि देकर आगे बढ़ाएंगे. महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि तीन दिन तक विशद मंथन से यह संगोष्ठी प्राकृतिक संसाधनों के ज्ञान और अनुसंधान का संगम बन गई. सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने समस्त विश्वविद्यालय परिवार को साधुवाद दिया है. संगोष्ठी में ओरल प्रेजेंटेशन में कुल 14, पोस्टर प्रेजेंटेशन में कुल 40 और यंग साइंटिस्ट अवार्ड में कुल 7 लोगो ने प्रतिभाग किया. संगोष्ठी के सह संयोजक व ट्रांसलेशनल बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के अध्यक्ष डॉ दिनेश कुमार ने यंग साइंटिस्ट अवॉर्ड्स ओरल प्रेजेंटेशन, पोस्टर प्रेजेंटेशन के विजय प्रतिभागियों के नाम की घोषणा की.

महायोगी गोरखनाथ विवि में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

प्राचीन चिकित्सा पद्धति ने कोरोना से बचाई कई जानें

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के प्रति कुलाधिपति प्रो. उदय प्रताप सिंह ने कहा है कि प्राकृतिक संसाधनों से चिकित्सा भारतीय पद्धति है। यह सदैव प्रासंगिक बनी रहेगी। कोरोना काल में प्राचीन चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद ने मानव जीवन को बचाया।

प्रो. यूपी सिंह रविवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान संकाय व फार्मेसी संकाय के संयुक्त तत्वावधान एवं ट्रांसलेशन बायोमेडिकल रिसर्च सोसायटी के सहयोग से आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता कर रहे थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि दुनिया एक बार फिर प्राकृतिक संसाधनों से बन रही औषधियों को अपनाने पर जोर दे रही है। ऐसे में जरूरत है कि भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा को समयानुकूल जरूरतों के अनुसार अनुसंधान पूर्वक आगे बढ़ाया जाए। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए ज्ञान, कौशल, दृष्टि, पहचान और संतुलन को शिक्षा के पांच महत्वपूर्ण उद्देश्य के रूप में समझाया।

महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एके सिंह ने कहा कि प्राकृतिक संसधानो में असीम संभावनाएं हैं जो हम सभी को स्वस्थ और ठीक करने में सक्षम हैं। हमें इस दिशा में अपने योगदान को प्रमाणित करने कि जरूरत है। हमारे आसपास की समस्त वनस्पतियां औषधि गुणों से युक्त हैं। हमे उनके बारे में जानने का प्रयास करना चाहिए। इस विश्वविद्यालय में आयुर्वेद के साथ ही नर्सिंग, पैरामेडिकल, फार्मेसी, बायोमेडिकल जैसी सभी विधाएं और सारी सुविधाएं उपलब्ध हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को नसीहत दी कि वे अपने विषय के अलावा मिलते जुलते विषयों में भी अभिरुचि बढ़ाएं।

गोरखनाथ विवि के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने प्रतिभागियों और विद्यार्थियों से यहां वैज्ञानिकों और विशेषज्ञों के द्वारा बताए गए अनुभव को अपने व्यावहारिक अध्ययन का हिस्सा बनाने का सुझाव दिया। समापन सत्र में संगोष्ठी के संयोजक प्रो. सुनील कुमार, फार्मेसी संकाय के प्रिंसिपल प्रो. शशिकांत सिंह, प्रो. दिनेश कुमार उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विभिन्न प्रस्तुतियों के विजेता प्रतिभागी। ● हिन्दुस्तान

पवन कन्नौजिया को यंग साइंटिस्ट अवार्ड

इस संगोष्ठी में ओरल प्रजेंटेशन में कुल 14, पोस्टर प्रेजेंटेशन में कुल 40 और यंग साइंटिस्ट अवार्ड में कुल सात लोगों ने प्रतिभाग किया। यंग साइंटिस्ट अवॉर्डर्स में प्रथम स्थान विश्वविद्यालय के पवन कुमार कन्नौजिया, द्वितीय स्थान पर गोरखपुर विश्विद्यालय की प्रियंका भारती एवं तृतीय स्थान गोरखनाथ विश्वविद्यालय के डॉ. अवेद्यनाथ सिंह को प्राप्त हुआ। पोस्टर प्रजेंटेशन में प्रथम स्थान एसजीपीजीआई की अमृता साहू, द्वितीय स्थान महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय की अंजली राय, तृतीय स्थान एसजीपीजीआई कार्तिक दुबे को प्राप्त हुआ। ओरल प्रजेंटेशन में प्रथम स्थान सीबीएमआर की रिमझिम त्रिवेदी, द्वितीय स्थान सीएसआईआर रोहित सिंह तथा तृतीय स्थान एसजीपीजीआई गुरविंदर सिंह को प्राप्त हुआ।

प्रो. वीके सिंह गोरखनाथ विवि के पहले लोकपाल बने

गोरखपुर, वरिष्ठ संवाददाता। गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. विजय कृष्ण (वीके) सिंह को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, सोनबरसा का पहला लोकपाल नियुक्त किया गया है। उनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष या 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने की अवधि (इनमें से जो भी पहले हो) के लिए होगा।

प्रो. विजय कृष्ण सिंह।

यह जानकारी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने दी है। उन्होंने बताया कि लोकपाल के रूप में प्रो. वीके सिंह की नियुक्ति महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल वाजपेयी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 11 अप्रैल 2023 को जारी अधिसूचना में विद्यार्थियों की शिकायतों के समाधान के लिए लोकपाल की नियुक्ति प्राविधानों के अंतर्गत की गई है। कुलसचिव ने बताया कि लोकपाल की नियुक्ति, सेवाकाल एवं शर्तें वही होंगी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय-समय पर विहित की जाएंगी। लोकपाल छात्र शिकायत निवारण समिति के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों की सुनवाई कर निर्णय लेंगे।

गोरखपुर विश्वविद्यालय के रहे पूर्व कुलपति : महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में लोकपाल नियुक्त किए गए प्रो. वीके सिंह, पूर्व में गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय (एकेटीयू) लखनऊ के प्रति कुलपति रह चुके हैं।

प्रो. वीके सिंह महायोगी गोरखनाथ विवि के लोकपाल नियुक्त

गोरखपुर (विधान केसरी)। दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, सोनबरसा गोरखपुर का लोकपाल नियुक्त किया गया है। उनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष या 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने की अवधि इनमें से भी पहले हो के लिए होगा। यह जानकारी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने दी है। उन्होंने बताया कि लोकपाल के रूप में प्रो. वीके सिंह की नियुक्ति महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ अतुल वाजपेयी के आदेशानुसार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की 11 अप्रैल 2023 को जारी अधिसूचना में विद्यार्थियों की शिकायतों के समाधान के लिए लोकपाल की नियुक्ति प्राविधानों के अंतर्गत की गई है। कुलसचिव ने बताया कि लोकपाल की नियुक्ति, सेवाकाल एवं शर्तें वही होंगी जो विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा समय-समय पर विहित की जाएंगी। लोकपाल छात्र शिकायत निवारण समिति के निर्णयों के विरुद्ध की गई अपीलों की सुनवाई कर निर्णय लेंगे। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में लोकपाल नियुक्त किए गए प्रो. वीके सिंह, पूर्व में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा डॉ एपीजे अब्दुल कलाम तकनीकी विश्वविद्यालय एकेटीयू लखनऊ के प्रति कुलपति रह चुके हैं। विद्यार्थी के रूप में यूजी तथा पीजी में गोल्ड मेडलिस्ट प्रो. सिंह गणित में डॉक्टरेट हैं और उन्हें शिक्षण व शोध के क्षेत्र में 37 वर्ष का अनुभव है। प्रो. वीके सिंह, पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर के पूर्व कुलपति प्रो. उदय प्रताप सिंह के सुपुत्र हैं।

प्रो. वीके सिंह महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के लोकपाल नियुक्त

गोरखपुर। गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. विजय कृष्ण सिंह को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, सोनबरसा का लोकपाल नियुक्त किया गया। उनका कार्यकाल कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से तीन वर्ष या 70 वर्ष की आयु प्राप्त करने की अवधि (इनमें से भी पहले हो) के लिए होगा। यह जानकारी महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव ने दी है। लोकपाल के रूप में प्रो. वीके सिंह की नियुक्ति विद्यार्थियों की शिकायतों के समाधान के लिए की गई है। प्रो. वीके सिंह एकेटीयू लखनऊ के प्रति कुलपति भी रह चुके हैं। ब्यूरो

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया कम्बल वितरण

खरी कसौटी ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना की तरफ से ठंड के बढ़ते ठण्ड के प्रकोप को देखते हुए कम्बल वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि अपने आसपास जरूरतमंद लोगों का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरण एक पुनीत कार्य है। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों एवं समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विकास यादव एवं समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया कम्बल वितरण

संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की राष्ट्रीय

सेवा योजना की तरफ से ठंड के बढ़ते ठण्ड के प्रकोप को देखते हुए कम्बल वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि अपने आसपास जरूरतमंद लोगों का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरण एक पुनीत कार्य है। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों एवं समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विकास यादव एवं समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया कम्बल वितरण

(रवि प्रकाश गुप्ता)

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना की तरफ से ठंड के बढ़ते ठण्ड के प्रकोप को देखते हुए कम्बल वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि अपने आसपास जरूरतमंद लोगों का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरण एक पुनीत कार्य है। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों एवं समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विकास यादव एवं समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया कम्बल वितरण

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना की तरफ से ठंड के बढ़ते ठण्ड के प्रकोप को देखते हुए कम्बल वितरण किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि अपने आसपास जरूरतमंद लोगों का ध्यान रखना चाहिए।

उन्होंने कहा कि ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरण एक पुनीत कार्य है। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों एवं समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप

कुमार राव, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विकास यादव एवं समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया कम्बल वितरण

स्वतंत्र चेतना, नगर संवाददाता /गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना की तरफ से ठंड के बढ़ते ठण्ड के प्रकोप को देखते हुए कम्बल वितरण किया गया।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी ने कहा कि अपने आसपास जरूरतमंद लोगों का ध्यान रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि ठंड से बचाव के लिए कम्बल वितरण एक पुनीत कार्य है। कुलपति ने कहा कि यह विश्वविद्यालय सामाजिक मूल्यों एवं समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अखिलेश कुमार दूबे, कार्यक्रम अधिकारी डॉ. विकास यादव एवं समस्त शिक्षक उपस्थित रहे।

समाचार दर्पण

चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों में भाग लेगा महायोगी गोरखनाथ विवि

गोरखपुर, अमृत विचार

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्य धाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया।

गोरखनाथ विवि में किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

- चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान

शाल्कर ब्यूरो

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान (इरी) के साथ एमओयू (समझौता ज्ञापन) का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे।

शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल (डॉ.) अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र (आईसार्क) के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि-खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके।

इस अवसर पर कुलपति डॉ. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिक, अनुसंधान, और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

एमओयू से कालानमक व अन्य पारंपरिक किस्मों को मिलेगा बढ़ावा : डॉ. सुधांशु

एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़-प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव-सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ-साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा।

महायोगी गोरखनाथ विवि ने किया अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान से एमओयू

- चावल अनुसंधान की दिशा में मिलकर काम करेंगे दोनों संस्थान
- चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ करने की दिशा में उठाए जाएंगे कई कदम

गोरखपुर (विधान केसरी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम गोरखपुर की उपलब्धियों की किताब में एक नया अध्याय जुड़ गया है। चावल अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रमों को आगे ब?ाने के लिए विश्वविद्यालय ने शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान ;इरीद्ध के साथ एमओयू समझौता ज्ञापन का आदान-प्रदान किया है। इस एमओयू से कालानमक समेत चावल की अन्य प्रजातियों पर रिसर्च की दिशा में महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय और इरी मिलकर काम करेंगे। शुक्रवार को महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय परिसर में विश्वविद्यालय के कुलपति मेजर जनरल डॉ. अतुल वाजपेयी और अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान के वाराणसी स्थित दक्षिण एशिया क्षेत्रीय केंद्र आईसार्क के निदेशक डॉ. सुधांशु सिंह ने समझौता ज्ञापन एमओयू पर हस्ताक्षर किए। इस एमओयू के तहत उत्तर प्रदेश में चावल आधारित कृषि.खाद्य प्रणालियों को आकार देने की दिशा में अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को ब?ावा दिया जाएगा। साथ ही वर्तमान और भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए इरी व विश्वविद्यालय के बीच युवा शोधकर्ताओं की विशेषज्ञता और कौशल को बढ़ाने के लिए क्षमता विकास और विनिमय कार्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। इसके अलावा, दोनों संस्थानों का लक्ष्य साझेदारी के माध्यम से संयुक्त अनुसंधान और विकास परियोजनाओं को विकसित और कार्यान्वित करना है जिससे क्षेत्र में चावल आधारित खाद्य प्रणाली को सुदृढ़ किया जा सके। इस अवसर पर कुलपति डा. अतुल वाजपेयी ने इरी के साथ हुए एमओयू का स्वागत करते हुए इसे कृषि अनुसंधान और संबद्ध विज्ञान के विभिन्न विषयों में शैक्षणिकए अनुसंधानए और प्रशिक्षण गतिविधियों के प्रचार और साझा उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मील का पत्थर बताया। उन्होंने खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए चावल उत्पादन के पर्यावरणीय प्रभाव को कम करते हुए उच्च पैदावार प्राप्त करने की इरी की योजना के लिए मजबूत समर्थन देने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। एमओयू के अवसर पर अंतरराष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. सुधांशु सिंह ने कौशल विकास कार्यक्रमों, अनुसंधान और विकास पहल के माध्यम से चावल आधारित खाद्य प्रणालियों की उत्पादकता बढ़ाने की योजना साझा की। उन्होंने कहा कि महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय बाढ़.प्रवण पारिस्थितिकी वाले राज्य के गोरखपुर जिले में स्थित है और कालानमक की खेती के लिए जीआई टैग प्राप्त है। समझौता ज्ञापन जीआई क्षेत्र में तनाव.सहिष्णु चावल की किस्मों के साथ.साथ बेहतर कालानमक के मूल्यांकन में मदद करेगा। समझौता करार का स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सलाहकार डॉ. जीएन सिंह ने कहा कि यह एमओयू पूर्वांचल के किसानों को खाद्य के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने में सहायक होगा। एमओयू के आदान प्रदान के दौरान विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. प्रदीप कुमार राव, कृषि संकाय के डीन डॉ. विमल दूबे, आईसार्क के वैज्ञानिक डॉ. एंथनी फ्लफ्लेर्ड और डॉ. आशीष श्रीवास्तव आदि भी उपस्थित रहे।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन

गोरखपुर (एसएनबी)। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत /2047 योजना के अंतर्गत पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कलेज के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में डिप्टी रजिस्ट्रार श्रीकांत, औषधि संकाय के डा. शशिकांत सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर अभिनव सिंह राठौड़ ने प्रदर्शनी में लगे पोस्टरों का अवलोकन व मूल्यांकन किया। आयोजन में पैरामेडिकल के शिक्षकों ने विशेष भूमिका निभाई।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन

न्याय आपका संवाददाता

न्याय आपका संवाददाता

गोरखपुर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में शुक्रवार को भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत @2047 योजना के अंतर्गत पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में डिप्टी रजिस्ट्रार श्रीकांत, औषधि संकाय के डॉ. शशिकांत सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर अभिनव सिंह राठौड़ ने प्रदर्शनी में लगे पोस्टरों का अवलोकन व मूल्यांकन किया। आयोजन में पैरामेडिकल के शिक्षकों ने विशेष भूमिका निभाई।

महायोगी गोरखनाथ विवि में पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन

संवाददाता

गोरखपुर, 22 दिसंबर। महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय में

शुक्रवार को भारत सरकार द्वारा संचालित विकसित भारत /2047 योजना के अंतर्गत पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महंत अवेद्यनाथ पैरामेडिकल कॉलेज के प्राचार्य रोहित कुमार श्रीवास्तव की अध्यक्षता में डिप्टी रजिस्ट्रार श्रीकांत, औषधि संकाय के डॉ. शशिकांत सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर अभिनव सिंह राठौड़ ने प्रदर्शनी में लगे पोस्टरों का अवलोकन व मूल्यांकन किया। आयोजन में पैरामेडिकल के शिक्षकों ने विशेष भूमिका निभाई।

निमार्णाधीन परिसर

01 निमार्णाधीन फॉर्मेसी संकाय (दृश्य-1)।

02 निर्माणाधीन शिक्षक आवास

03 निर्माणाधीन प्रेक्षागृह

04 निर्माणाधीन फार्मेसी संकाय (दृश्य-2)

05 विश्वविद्यालय परिसर का वायवीय दृश्य

महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय गोरखपुर

01 प्रो. शरद कुमार मिश्र

02 डॉ. दिनेश कुमार

03 प्रो. गौरव कैथवास

04 डॉ. जी. सतीश रेड्डी

05 महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् संस्थापक समारोह में शोभायात्रा के दौरान विश्वविद्यालय के विद्यार्थी

06 राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर प्रशस्ती पत्र एवं स्मृति चिन्ह् के साथ विजयी शोधार्थी व प्राध्यापकगण

07 नर्सिंग कॉलेज में कम्प्यूटर लैब का उद्घाटन के दौरान माननीय कुलाधिपति

08 नर्सिंग कॉलेज में कौशल प्रयोगशाला का उद्घाटन करते हुए माननीय कुलाधिपति

प्रधान सम्पादक
डॉ. विमल कुमार दूबे

सम्पादक
प्रभा शर्मा

संपादक मण्डल
श्री रोहित श्रीवास्तव, डॉ. प्रज्ञा सिंह, डॉ. अनुपमा ओझा, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. गणेश लाल एवं स्वेता अल्बर्ट

ग्राफिक्स डिजाइनर: श्री शारदानन्द पाण्डेय

mguniversitygkp@mgug.ac.in https://www.mgug.ac.in/
+91-9415266014, +91-9935904499, +91-9794299451
Arogya Dham, Balapar Road, Sonbarsa, Gorakhpur